निक्की की टोली - परिवर्तन का संदेश

(नाट्य रूपांतरण)

रघुवंश मिश्रा

निक्की की टोली

परिवर्तन का संदेश

(नाट्य रूपांतरण)

लेखक

रघुवंश मिश्रा

C – रघुवंश मिश्रा 2018

आलोक प्रकाशन

अनुक्रमणिका

क्र	अध्याय	पृष्ठ
	अपनी बात	3
1	खामोशी	4
2	मत भेज ससुराल	9
3	सुरक्षित रास्ता	16
4	सच्चा मर्द	21
5	मैं कमजोर नही	26
6	मैं पढूंगी	31
7	मन की आवाज	39
8	शोषण	46
9	पौष्टिक भोजन	52
10	सुन्दर मन	57
11	खेलो सब खेल	63
12	मैं और तुम	69
13	छोड़ नकल, बन असल	74
14	अनमोल - देन	79
15	जीवन सँवार लें	85
16	बंद करो अत्याचार	92
17	डिजीटल इंडिया	98
18	सजग रहो	104
19	मन की बात	110
20	नहीं मतलब नहीं	117
21	दोस्ती	123
22	बेटा-बेटी एक समान	129
23	अधिकार और कर्तव्य	137
24	फैसला	143
25	नया - सबेरा	150

अपनी बात

प्रिय शिक्षक साथी,

उच्च प्राथमिक व उच्चतर माध्यमिक शालाओ में अध्यनरत 11 से 18 वर्ष के बच्चों के मन में आने वाले विचारों, उनकी प्रतिक्रियाओ और दिनचर्या में आने वाली समस्याओ के सकारात्मक निराकरण में सक्षम व जागरुक बनाने के उद्देश्य से "फुल आन निक्की" आडियों प्रोग्राम आरंभ किया गया हैं. बच्चों के समक्ष इस प्रोग्राम के प्रस्तुतीकरण हेतु तीन चरण निर्धारित हैं -

1. शिक्षक कार्यक्रम को स्वयं सुनकर बच्चों के समक्ष सारांश रुप में प्रस्तुत करेगा और कार्यक्रम सुनते समय, बच्चो को कहां ध्यान केन्द्रित करना होगा, यह भी बतलाएगा.
2. उपयुक्त आडियों से शांत वातावरण में प्रसारण किया जाएगा.
3. सुनने के पश्चात कार्यक्रम से बच्चो ने क्या समझा और सीखा, संक्षिप्त इसकी समीक्षा की जाएगी.

यह कार्यक्रम कुल 25 एपिसोड का है. गहराई से विश्लेषण करने पर ज्ञात होता हैं कि इसका प्रत्येक भाग बच्चों के मन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के साथ-साथ भविष्य के व्यवहार को भी निर्धारित करता हैं. इसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक भाग की सीख बच्चों तक सही रुप में पहुॅचें. अतः उद्देश्य प्राप्ति को सुगम बनाने के लिए मैंनें इसके प्रत्येंक भाग को पद्य, नाटक और कहानी के रुप में परिवर्तित किया हैं. इसी क्रम में इस कार्यक्रम का नाट्य रुपान्तरण प्रस्तुतीकरण में आप लोगो की सहायता के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है. मेरा विश्वास है कि अगर शालाओं में इस नाट्य रुपान्तरण पर बच्चों से अभिनय कराया जाए तो उद्देश्य की प्राप्ति निश्चित रुप से की जा सकती हैं.

आशा हैं यह नाट्य रुपान्तरण आपके विषयवस्तु प्रस्तुतीकरण में सहायक होगा.

रघुवंश मिश्रा

उच्च वर्ग शिक्षक

टेंगनमाड़ा

1

खामोशी

प्रथम दृष्य

(घर में सुरेखा पिछले कुछ दिनों से गुमसुम सी रहती हैं. पहले की तरह न तो वह हॅसकर बात करती है, न खेलती कूदती हैं और न पढ़ती हैं. जानकी, सुरेखा की मां अपनी बेटी की स्थिति को समझते हुए अपने पति जगमोहन से कहती हैं) -

जनकी - अजी सुनते हो! पता नही आजकल सुरेखा क्यों इतनी उदास रहती हैं.

जगमोहन - पुछती क्यों नही! बात क्या हैं ?

जनकी - कई बार पूछ चुकी हूॅ, कुछ बतलाती तब तो जानती.

जगमोहन - उसकी सहेलियों से पूछ कर देखी हो.

जानकी - हां, रेखा,मीना,पल्लवी सबसे पूछ कर देखी हूॅ. पर सभी का एक ही जवाब हैं कि उन्हे भी पता नही. मुझे तो लगता है स्कूल में ही कुछ हुआ होगा.

जगमोहन - ठीक हैं. मैं किसी दिन स्कूल जाकर शिक्षको से बात करता हूॅ.

जानकी - किसी दिन नही, आप आज ही स्कूल जाओं.

जगमोहन - ठीक हैं, ठीक है. आज ही चला जाऊंगा.

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(मोहल्ले के कुछ लड़के स्कूल के पहले पड़ने वाले चौक पर खड़े, आपस में कुछ बात कर रहे हैं.)

गजेन्द्र - यार समय हो रहा है . पर वो नही दिख रही है.

रमेंश - लगता हैं, आज वह नही आएगी.

सुरेश - उसके घर वाले उसे घर में रहने ही नही देंगें. जबरदस्ती स्कूल भेंजेंगे. वह आएगी ही.

प्रमेंन्द्र - हम लोग भी तो यार उसे बहुत तंग करते हैं. बेचारी डर गयी होगी.

रमाकांत - तुम्हारे लिए कब से बेचारी हो गई. सबसे ज्यादा परेशान तो तुम्ही करते हो.

रमाकान्त की बात सुनकर सभी लड़के एक साथ जोर-जोर से हॅसने लगते हैं.

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(पूर्व माध्यमिक शाला नवरंगपुर की सभी कक्षाएं लगी हुई हैं. शिक्षक अपनी-अपनी कक्षाओ में अध्यापन कार्य कर रहे हैं और शाला के प्रधान पाठक श्री रमेश मिश्रा जी अपने कुर्सी पर बैठे कार्यालयीन कार्य कर रहे हैं. उसी समय जगमोहन कार्यालय के दरवाजे के पास आकर रुकता हैं. उन्हें देखकर मिश्रा जी कहते हैं) -

मिश्राजी - आओ, आओ कश्यपजी. बड़े दिनो बाद इधर का रुख किए.

जगमोहन - (अभिवादन करने के बाद) क्या बतलाऊ मिश्रा जी आज आना ही पड़ा.

मिश्राजी - क्यों भाई कोई विशेष बात हो गई क्या?

जगमोहन - हां सर! विशेष बात ही हैं.

मिश्राजी - अब जरा खुलकर बतलाओ कश्यप जी.

जगमोहन - सर क्या हैं, सुरेखा कुछ दिनो से घर में बहुत उदास सी रहती हैं. उसका मन किसी भी चीज में नही लगता. हम दोनो उससे पूछ - पूछ कर थक गए हैं. मैंने सोचा कि स्कूल में कुछ हुआ तो नही हैं.

मिश्राजी - हां भाई जगमोहन पिछले कुछ दिनो से मैं स्वयं और सभी शिक्षक भी इस बात का अनुभव कर रहे हैं कि सुरेखा अब पहले जैसी चंचल नही हैं. हमने सोचा कि घर में कुछ हुआ होगा. पर आप बतला रहे हैं कि घर में कुछ नही हुआ हैं. थोड़ी देर आप बैठिए, फिर सभी शिक्षको के साथ मिलकर बात करते हैं.

चतुर्थ - दृष्य

(शाला का प्रधान पाठक कक्ष. मिश्राजी के साथ-साथ सभी शिक्षक श्रीमति राखी दुबे, शिवशंकर गुप्ता, रश्मि भैना व सुरेखा तथा उसकी सहेलियां उपस्थित हैं.)

मिश्राजी - दुबे मैडम आप तो सुरेखा कि कक्षा शिक्षिका हैं. क्या आपको कुछ पता हैं कि सुरेखा आजकल चुप - चाप क्यों रहती हैं.

दुबे मैडम - हां सर! मैनें इस संबंध में जानने की कोशिश की और मुझे अप्रत्यक्ष रुप से कल ही जानकारी मिली कि घर से स्कूल जाने के रास्ते में कुछ बदमाश किस्म के लड़कें, लड़कियों को परेशान करते हैं और किसी से बतलाने पर जान से मारने की धमकी देते है. मैं अभी कक्षा में इसी संबध में बात कर रही थी.

मिश्राजी - (सुरेखा के पास जाकर, सिर पर अपनेपन से हाथ रखते हुए), क्यो बेटी सुरेखा. क्या यह सब सच हैं.

सुरेखा - (सभी उपस्थित सदस्यों का अपनापन पाकर) सुबक-सुबककर रोते हुए बोली - हां.

मिश्राजी - वे लोग कौन लड़के हैं. क्या हमारे स्कूल के हैं.

सुरेखा - नही वे सभी हाई स्कूल में पढ़ने वाले हैं.

(फिर सुरेखा सभी लड़को के नाम लिखकर प्रधान पाठक को देती हैं.)

पंचम - दृष्य

(अगले दिन पू0मा0शा0 नवरंगपुर के सभा कक्ष में शाला के सभी शिक्षक, बच्चों के माता-पिता और कुछ गणमान्य नागरिक के साथ-साथ वे लड़के, जो सुरेखा को परेशान करते थें, मां बाप के साथ उपस्थित हुए.)

मिश्राजी - यहां उपस्थित समस्त सज्जनों आज आप लोगो की बैठक दो कारणो से रखी गई हैं. पहला ते यह कि यदि हमारे घर के बच्चे एकाएक चुप्पी साध लें तो उसके पीछे कोई न कोई विशेष कारण होता हैं, और ऐसी चुप्पी को तोड़ना सभी बच्चो से जुड़े सभी लोगो की सामूहिक जिम्मेदारी होती हैं. और दूसरा यह कि पुनः किसी और बच्चे के साथ ऐसा ना हो, इसके लिए हम क्या कर सकते हैं.

दीन दयाल (अन्य बच्चों के पालक) - हमें अपने बच्चों से प्रतिदिन कुछ - न - कुछ समय निकालकर बात करना चाहिए, जिससे बच्चे हमारे साथ खुलकर बात कर सके.

रामनाथ (शाला के शिक्षक) - बहुत अच्छा दीनदयाल जी, एक बात और जैसे ही हमें यह पता चले कि किसी लड़के की धमकी के डर से लड़कियां चुप रहती हैं उस स्थिति में ऐसे लड़को के मां-बाप को बुलाकर चेतावनी दिया जाना चाहिए. जैसा कि अभी हम सुरेखा के मामले में कर रहे हैं.

गुलाबचंद (गणमान्य नागरिक) - और अगर मास्टर जी फिर भी न माने तो?

रामनाथ - ऐसे बच्चों को पुलिस के हवाले कर देना चाहिए.

दुबे मैडम - इसके अतिरिक्त एक बात और इस घटना के बाद मैंने निश्चित की हैं कि शाला की कुछ लड़कियों से "निक्की की टोली" बनाऊंगी. यह टोली ऐसे सभी बच्चो के व्यवहार का अवलोकन करेगी जो असामान्य लगे. ऐसा पाए जाने पर टोली पहले शिक्षको के साथ चर्चा करेगी. फिर शिक्षक और टोली मिलकर बच्चों के माता-पिता से सम्पर्क कर कारण जानने का प्रयास करेंगें.

सभा कक्ष -(एक साथ आवाज आती हैं.) हम सभी दुबे मैडम जी के विचारो से सहमत हैं.

जोगेष्वर, जनक, राजाराम, गिरधारी और बलदाउ अपने-अपने लड़को से कहते हैं कि वे अपने कार्य के लिए सभी से माफी मांगे. सभी लड़के खड़े होकर माफी मांगते हुए कहते हैं कि वे भविष्य में ऐसा काम कभी नही करेगें.

षष्ठम - दृष्य

(पूर्व माध्यमिक शाला नवरंगपुर में दुबे मैडम व्दारा कक्षा 6,7, 8 वीं के लड़कियो को मिलाकर "निक्की की टोली" बनाई जाती हैं.)

दुबे मैडम - बच्चो आज हमने अपनी शाला के लिए "निक्की की टोली" बनाई हैं और इस टोली में निक्की का कार्य सुरेखा करेगी. सभी बच्चे जोर से ताली बजाकर सुरेखा का स्वागत करते हैं.

सुरेखा - मेरे सभी साथियों ! मैं आप सब को यह विश्वास दिलाती हूँ कि दहशत के माहौल में जिस उदासी और खामोशी का समय मैने व्यतीत की हैं, वैसा समय किसी बच्चे के जीवन में नही आने दूंगी.

पुनः सभी एक बार फिर जोर से ताली बजाकर स्वागत करते हैं.

सुरेखा - और हमारी टोली का नारा होगा ,

"हर बच्चे में भरेंगें जोश.

कोई न रहेगा अब खामोश.. "

शाला नारे और तालियो के आवाज से गुंजायमान होती है.

2

मत भेज ससुराल

प्रथम दृष्य

(कक्षा सातवी का परीक्षाफल बतलाया जा रहा हैं. सभी बच्चे कक्षा में बैठे हुए हैं. सुधा भी चुपचाप अपना नाम आने का इंतजार कर रही है. तभी प्रधान पाठक रामप्यारे तिवारी ने बोला) -

रामप्यारे - देखो बच्चों! भले ही यह स्थानीय परीक्षा का परीक्षाफल हैं, किन्तु हमें हर परीक्षा को गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि जो बच्चा अभी अच्छा करेगा, वही आगे भी अच्छा करेगा और इस साल भी सुधा पूरे कक्षा में प्रथम आई हैं. हमें सुधा पर गर्व हैं.

(पूरी कक्षा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठती हैं. सुधा और सभी बच्चे मुस्कुराते हुए अपने-अपने घरो की ओर जाने लगे.)

दूसरा - दृष्य

सुधा का मामा श्याम मोहन आया हुआ हैं. सुधा का मामा और सुधा के पिताजी जनकराम खाना खाने बैठे हुए हैं और सुधा की मां चंदा दोनों को खाना परोस रही है.

श्याममोहन - जीजाजी तो आपने सुधा के बारे में क्या सोचा हैं.

जनकराम - सोच रहा हूॅ कि इस साल सुधा जैसे ही आठवी पास करेगी कोई अच्छा सा लड़का देखकर शादी कर दूंगा. तुम भी ध्यान दिए रहना.

श्याममोहन - अरे जीजाजी! मैं अभी आया ही इसी कारण हूॅ. वो नवरंगपुर के जगन्नाथ प्रसाद का लड़का वीरेन्द्र इस साल नवमी पास हुआ हैं. अगले साल वो शादी करुंगा बोला हैं.

जनकराम - ये तो बहुत अच्छी बात हैं मोहन! सुधा का तो भाग्य ही खुल जाएगा. सुधा की मां इस बारे में तुम्हारा क्या कहना हैं.

चंदा - मास्टरजी कह रहे थे कि हमारी बेटी पढ़ने लिखने में बहुत अच्छी हैं. उसे खूब पढ़ाना. रहने दो. कम से कम बारहवी तक पढ़ने देते हैं. हमारी एक ही तो बेटी हैं.

श्याम मोहन - अरी बहना! उससे क्या होगा. आखिर शादी तो करना ही हैं. अभी अच्छा घर और लड़का मिल रहा है.वह भी हाथ से निकल जाएगा.

चंदा - मैंने अपनी बात कह दी. अब आप दोनो जानें.

दृष्य - तीसरा

(खाना खाने के बाद सुधा के पिताजी, मामाजी और मां बैठे हुए आपस में बात कर रहे थे. तभी सुधा दौड़ते हुए घर के आंगन में प्रवेश करते हुए चिल्लाते हुए कहती हैं) -

सुधा - मां मैं इस साल भी अपने स्कूल में प्रथम आई हूॅ.

मां - बहुत अच्छा बेटी. तुम हो ही ऐसी.

सुधा - मां! मास्टर जी सभी बच्चो के सामने कह रहा था कि हमें सुधा पर गर्व है और देखना यह लड़की एक दिन हमारे गांव का नाम रोशन करेगी.

मां - हां बेटी. भगवान करे ऐसा ही हो. (ऐसा कहते हुए सुधा की मां अंदर कमरे की ओर चली जाती हैं)

सुधा (सुधा दोनों का चरण स्पर्श करते हुए बोली) - पिताजी, मामाजी! मैं पूरी कक्षा में प्रथम आई हूॅ.

पिताजी - हां-हां ठीक हैं. सुन लिया! अब जाओ कपड़ा बदलकर खाना खालों.

(सुधा को पिताजी का जवाब अच्छा नही लगता. वह चुपचाप घर के उस कमरे की ओर चली जाती हैं जहां उसकी मां थी.)

दृष्य-चौथा

(सुधा की मां पलंग पर चुपचाप बैठी सोंच रही हैं. तभी सुधा कमरे के अंदर प्रवेश कर अपनी मां की गोद में बैठते हुए बोली) -

सुधा - यह क्या मां! मेरे प्रथम आने की बात पर पिताजी बिल्कुल भी खुश नही हुए और मामाजी तो कुछ भी नही बोले.

मां - उनको तुम्हरी पढ़ाई से कुछ मतलब नही हैं, बेटी. (सुधा की मां कुछ रुंधे गले से बोली)

सुधा - मां तुम इतनी दुःखी होकर क्यो बोल रही हो?

मांं - तो क्या करु बेटी! तुम्हारे पिताजी और तुम्हारे मामाजी अगले साल तुम्हरी शादी करना चाह रहे हैं.

सुधा - मां! मेरी शादी! मैं तो अभी बहुत छोटी हूँ. (सुधा ने सभी बात एक ही स्वर में बोलते हुए कही.)

मां - हां बेटी. तेरी शादी! मैं अपनी तरफ से बहुत समझाई. पर दोनो मेरी बात सुनने को तैयार ही नही हैं. (सुधा अपनी मां की गोद से हटकर सोचते हुए कपड़ा बदलने लगी.)

<u>पांचवा - दृष्य</u>

(गर्मी की छुट्टी खत्म होने पर शाला खुलने का प्रथम दिन हैं. सुधा की सभी सहेलियां प्रसन्न होकर स्कूल जाने के लिए तैयार होकर सुधा को बुलाने उनके घर आई हुई थीं.)

रागनी - अरी ओ सुधा! यह क्या हैं? तुम अभी तैयार नही हुई हो.

तनु - पहले तो तुम खुद हमें बुलाने आ जाती थी.

प्रियंका - चलो किसी बात में तो हम सुधा से आगे रहे. (सभी सहेलियां हॅसती हैं, लेकिन सुधा के चेहरे पर मुस्कुराहट तक नही आई. गुमसुम देखकर रागिनी बोली.) -

रागिनी - सुधा तुम्हारी तबियत तो ठीक हैं न. न हॅस रही हो और न ही कुछ बोल रही हो. (सुधा तैयार होते-होते, बिना कुछ बोले बाते सुनती रही. तैयार होने पर बस्ता लेकर चुपचाप अपने सहेलियों के साथ स्कूल की ओर प्रस्थान किया)

छठवां-दृष्य

(घर से स्कूल के पूरे रास्ते सुधा ने किसी से बात नही की. स्कूल का पहला दिन होने के कारण सभी बच्चे प्रसन्न होकर एक-दूसरे से बाते कर रहे हैं. शाला का भृत्य घंटी लगाता हैं और प्रार्थना के बाद सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओ में जाकर बैठ जाते हैं.)

तनु - अरी सुधा! आज मैं शुरू से देख रही हूँ कि तुम उदास हो. आखिर बात क्या है?

सुधा - कुछ नही! ऐसे ही.

प्रियंका - नही सुधा बात ऐसे ही नही हैं. तुम पूरी छुट्टी भर ऐसे ही थी. कुछ तो हैं.

रागिनी - अरे बतला भी दो सुधा. जब हमसे नही बतलाओगी तो किससे मन की बात कहोगी.

(सहेलियों के बार-बार पुछने पर सुधा से रहा नही गया और वह अपने मन की बात बतलाने लगी.)

सुधा - अब मैं केवल इसी साल पढ़ पाऊंगी. अगले साल मेरे घर वाले मेरी शादी कर रहे हैं.

(और सुधा अपने सहेलियों को वह सब विस्तार से बतलाती हैं, जो रिजल्ट के दिन उसके घर में हुआ था.)

तनु, प्रियंका, रागिनी (एक साथ) - तुम चिंता मत करो सुधा. हम लोग इसके बारे में पाण्डेय मेडम से बात करते हैं.

सातवां-दृष्य

(अगले दिन तनु, प्रियंका और रागिनी; सुधा को साथ लेकर पाण्डेय मैडम के पास जाते हैं.)

पाण्डेय मैडम - अरे भाई! ये लड़कियों की टोली ईधर कैसे आयी है.

तनु - मैंडम! हम आप लोगो के पास एक समस्या लेकर आए हैं .

पाण्डेय मैडम - समस्या! कैसी समस्या.

प्रियंका - मैडम आप तो जानती हैं कि सुधा पढ़ने लिखने में कितनी अच्छी हैं. उसके बाद भी इसके पिताजी अगले साल इसकी शादी कर रहे हैं.

पाण्डेय मैडम - शादी कर रहे हैं! अरे ऐसे कैसे शादी करेंगें. अभी सुधा ज्यादा से ज्यादा 13 साल की होगी और यह एक अपराध है.

रागिनी - हां मैडम! यही तो हमारी समस्या हैं. इसका आप ही कोई हल बतलाइयें.

पाण्डेय मैडम - हां! समस्या तो बड़ी हैं. चलो कक्षा में हम सब मिलकर इसका हल निकालेंगें.

(चारो सहेलियां मैडम के घर से अपने-अपने घर जाने के लिए निकलते हैं.)

<u>आठवां - दृष्य</u>

(प्रार्थना के समय ही पाण्डेय मैडम सभी बच्चों को बोलती हैं कि वे सभा कक्ष में जाकर बैठेंगे. सभी बच्चे मन में उत्सुकता लिए शांति के साथ सभा कक्ष में बैठकर पाण्डेय मैडम की प्रतीक्षा कर रहे हैं. तभी पाण्डेय मैडम सभा कक्ष में प्रवेश करती हैं.)

पाण्डेय मैडम - बच्चो ! आज सभी को मैने यहां एक विशेष बिन्दु पर चर्चा करने के लिए बुलाया है.

कुसुम - विशेष बिन्दु पर! वह क्या हैं मैडम .

पाण्डेय मैडम - बच्चों तुम सभी लोगो ने नागरिक शास्त्र में पढ़ा है कि सरकार ने कानून बनाकर विवाह करने की उम्र निश्चित की हैं.

राजेश - हां मैडम ! लड़के की उम्र 21 वर्ष और लड़कियो की उम्र 18 वर्ष .

पाण्डेय मैडम - बिल्कुल ठीक राजेश.

प्रमोद - और उससे कम्र उम्र की शादी बाल विवाह कहलाता हैं.

सुरेश - और यह भी कि ऐसा करना कानून का उल्लंघन है. मैं तो कभी कम उम्र में विवाह नही करुंगा.

पाण्डेय मैडम - बहुत अच्छा सुरेश. तुम्हें ही नही, किसी को भी नही करना चाहिए.

प्रीती - मैडम ! यह तो हम सभी जानते हैं. फिर इसे आप क्यों बतला रही है.

पाण्डेय मैडम - वो इस कारण, कि इसके बाद भी सुधा के पिताजी और मामाजी मिलकर सुधा की शादी करना चाह रहे हैं.

(यह सुनकर सभी बच्चे एक साथ चिल्लाकर बोलते हैं. मैडम हम सब ऐसा नही होने देंगें. हम सब सुधा के पिताजी से मिलकर बात करेंगें.)

नवम - दृष्य

(अगले दिन बच्चों की टोली पाण्डेय मैडम के साथ सुधा के घर जाते हैं. सुधा के पिताजी आंगन में बैठे अपनी पत्नी से बात कर रहे हैं. बच्चो के साथ मैडम को देखकर पुछते हैं) -

जनकराम (हॅसते हुए) - पाण्डेय मैडम लगता है आज स्कूल हमारे घर ही लगेगा.

मैडम (मुस्कुराकर) - हां भई वैसा ही समझलो .

जनकराम - (सभी को बैठाते हुए) अब बतलाइये कैसे आना हुआ.

मैडम - सुना है कि आप अगले साल सुधा की शादी करने वाले है.

जनकराम - हां! ते इसमें किसी को क्या आपत्ति हैं.

मैडम - ऐसा है सुधा के पिताजी, इसमें सभी को आपत्ति हैं. क्या आप नही जानते है कि 18 से कम उम्र की लड़कियो का शरीर विवाह करने के योग्य नही होता. और दूसरी बात कि यह बाल विवाह माना जाता है, जो अपराध है.

प्रियंका - हां चाचाजी! पिछले साल ऐसे ही एक लड़की की शादी हुई थी और वह मां बनने के समय मर गयी. उसके मां बाप आज तक पछता रहे हैं.

रागिनी - हम आपको जल्दी शादी नही करने देंगें और सुधा पढ़ने में भी अच्छी हैं.

(सभी बच्चे बार-बार सुधा के पिताजी से सुधा की शादी नही करने का वचन देने के लिए जिद करने लगते हैं.)

जनकराम - ठीक हैं बच्चों! आप सभी की बातो को सुनकर मुझे ऐसा लग रहा हैं कि मैं बहुत बड़ी गलती करने जा रहा था और मैं वचन देता हूॅ कि जब तक सुधा अपने मन के अनुसार पढ़ लिख नही लेगी,तब तक उसकी शादी नही करुंगा.

(सभी बच्चे, मैडम पाण्डेय और सुधा के साथ प्रसन्न मुद्रा में स्कुल की ओर प्रस्थान करते हैं)

अंतिम दृष्य

(स्कुल वापस आकर सभी बच्चे पुनः सभा कक्ष में बैठते हैं और पाण्डेय मैडम बोलना शुरू करती हैं) -

पाण्डेय मैडम - बच्चों आज हमें एक जीत मिली हैं. पर सुधा की तरह ऐसे कई बच्चे होते हैं जिनका बाल विवाह कर दिया जाता हैं और ऐसे सभी बच्चों को हमें इससे बचाना हैं.

सभी बच्चे एक साथ - हां मैडम! हम सभी इसके लिए निरंतर काम करते रहेंगें.

पाण्डेय मैडम - और आज जो 12 बच्चे सुधा के घर गए थे, वे सभी एक टोली के रुप में काम करेंगें और इस टोली का नाम होगा " निक्की की टोली".

तनु - और मैडम इसके लिए एक स्लोगन भी बना लिया -

" साथ आ जा मेरे हमजोली ".

काम करेंगें बनकर निक्की की टोली"..

(सभी बच्चे हॅसते हुए स्लोगन दोहराते हैं और अपनी - अपनी कक्षा की ओर प्रस्थान करते हैं.)

3

सुरक्षित रास्ता

प्रथम दृष्य

(गांव के ग्राम पंचायत भवन में ग्राम सभा की बैठक आयोजित हैं. बड़ी संख्या में पुरुष एवं महिला उपस्थित हुए हैं. गांव के सरपंच श्री रामनाथ यादव व अन्य पंचगण मंच पर बैठकर ग्राम पंचायत को संबोधित कर रहे है.) -

सरपंच - इस ग्राम सभा में उपस्थित सभी लोगो का ग्राम पंचायत नवरंगपुर हार्दिक स्वागत करती हैं.

ग्राम सभा - जी सरपंच महोदय! धन्यवाद .

सरपंच (ग्राम सभा बुलाने के कारण बतलाते हुए) - भाईयों और बहनों शासन के निर्देशानुसार ग्राम पंचायत व्दारा इस साल शाला छोड़ने वाले बच्चों की जानकारी एकत्रित की गयी है और इससे पता चला कि हमारे गांव की माध्यमिक शाला में पढ़ने वाली तीन लड़किया शाला नही जा रही हैं.

अशोक - सरपंच महोदय! तो इससे क्या. उन लड़कियो का पढ़ाई में मन नही लगा होगा और शाला जाना बंद कर दिया होगा.

सरपंच - नही अशोक! हम लोग ऐसे ही कारणो को मानकर आगे छानबीन करने का प्रयास नही करते और लड़किया स्कूल छोड़ देती हैं.

रेखा - हां सरपंच महोदय! आप बिल्कुल सही कह रहे हैं. मेरी पड़ोसन नीतू की बेटी ने भी अचानक स्कूल जाना बंद कर दिया जबकि वो पढ़ने-लिखने में अच्छी थी.

रामप्रसाद - सरपंच महोदय! तो इसके लिए हम क्या कर सकते हैं?

सरपंच - इसी बात पर तो विचार करने के लिए यह बैठक बुलायी गयी हैं. आप सभी जानते है कि जब तक गांव के सभी बच्चे चाहे वह लड़का हो या लड़की पढ़ लिख नही पायेंगें तब तक वह गांव और देश प्रगति नही कर सकता.

ग्राम सभा - सरपंच महोदय! आप सौ टका सही कह रहे हैं.

सरपंच - इस कार्य में मुझे आप सभी के सहयोग की आवश्यकता हैं. यहां उपस्थित लोगो में से 8-10 लोगो का समूह बनाकर हम उन लड़कियों के घर जाऐंगें और सही कारण जानने का प्रयास करेंगें कि उन्होने शाला जाना क्यों छोड़ा.

ग्राम सभा - हम आपके साथ जाने को तैयार हैं.

सरपंच - बहुत अच्छा! तो कल हम लोग मिलते हैं.

<u>व्दितीय दृष्य</u>

(जगन्नाथ अपने घर में अपने पत्नी राधा से कल के ग्राम सभा में हुए निर्णय के बारे में बात कर रहे हैं) -

जगन्नाथ -आज सरपंच और कुछ लोग हमारे घर आ सकते हैं.

राधा - क्यों?

जगन्नाथ -कि हमारी बेटी सुनीता का नाम भी उन तीन लड़कियों में शामिल हैं जो स्कूल नही जा रही हैं.

राधा - मै भी तो सुनीता से पूछ - पूछ के थक चुकी हूँ. पर वो स्कूल नही जाने का कारण ही नही बतलाती. बस बोलती है कि मन नही लगता.

जगन्नाथ - हो सकता हैं सबके सामने बतला दे. सरपंच और अन्य लोग पहले उन दो लड़कियो के घर जाऐंगें और फिर वहां से उन लड़कियों और उनके माता-पिता के साथ यहां आऐंगें.

राधा - हूँ ! देखते हैं क्या होगा.

<u>तृतीय दृष्य</u>

(दोपहर बारह बजे का समय हो रहा था. जगन्नाथ और राधा खाना खाने के बाद आराम कर रहे थे. सुनीता दूसरे कमरे में टी.वी. देख रही थी, तभी गली में कुछ लोगो की आवाज आई) -

अशोक - जगन्नाथ भाई! अरे हम लोग आए हैं भाई! दरवाजा खोलों.

जगन्नाथ - अभी खोलता हूं. मैं तो कब से प्रतीक्षा कर रहा था. (दरवाजा खोलता है)

अशोक - क्या करें खिलावन और मनोहर के यहां देर हो गई.

जगन्नाथ - आओं! आओ! बैठों.

(सभी को बरामदे में बिछी दरी पर बैठने का इशारा करता हैं और सरंपच के लिए कुर्सी लाकर रखता है.)

रामनाथ (बैठते हुए) - और जगन्नाथ भाई! सुनीता बेटी कहां हैं.

जगन्नाथ - और कहां होगी! टी. वी. देख रही हैं.

रामनाथ - सुनीता बेटी. जरा बाहर तो आओ! देखो तो आज तुम्हारे यहां कितने सारे लोग आए हुए हैं.

सुनीता - (दरवाजे से झांककर शर्माते हुए धीरे-धीरे बाहर आती हैं.) जी दादा जी.

रामनाथ - अरें डरो नही बेटी. देखो तो तुम्हारी सहेली पूनम और सरोज भी तुम्हारे घर आई हैं.

सुनीता - (पूनम और सरोज के पास जाकर बैठ जाती हैं और धीरे से पूछती हैं) - अरे तुम लोग कैसे आए हो?

पूनम - (ईशारो में) -हम स्कूल नही जाते है इस कारण.

(सरपंच रामनाथ बोलना आरंभ करता हैं.)

सरंपच - सुनीता, पूनम और सरोज के माता-पिता आप यह तो जानते है कि हम आज क्यों आए हैं? आप तीनों की बेटियां बहुत दिनों से स्कूल नही जा रही हैं, तो क्या आपने कारण जानने का प्रयास किया हैं.

जगन्नाथ - हम तो पूछ-पूछ कर थक गए हैं पर सुनीता कुछ बतलाती ही नही.

रामनाथ -खिलावन और मनोहर आप लोग कारण जानने का प्रयास किए.

मनोहर - हां! और मेरी बेटी सरोज ने मुझे बतलाया था कि स्कूल जाने के समय कुछ लड़के रास्ते में परेशान करते हैं.

खिलावन - और पूनम तो यहां तक कह रही थी कि वे लड़के चाकू दिखाकर धमकी भी दिए है कि इस घटना के बारे में घर में बतलाओगे तो जान से मार देंगे.

रामनाथ -ः सुनीता बेटी! क्या यह सही हैं.

सुनीता - (चुप)

रामनाथ - अरे डरो नही बेटी! देखो यह इतने सारे लोग तुम सबके साथ खड़ें हैं.

(सुनीता हां में सिर हिलाते हुए रोने लगती हैं.)

रामनाथ - देखो भाईयों! आज हम सभी को पता चला कि हमारे गांव की लड़कियां चाहते हुए भी क्यों नही पढ़ पातीं .

खिलावन - तो अब आगे हम ऐसा क्या कर सकते हैं कि हमारी बेटियां फिर से स्कूल जाना आरंभ कर दें.

रामनाथ - इसके लिए मेरे मन में एक योजना है और उसमें हम बच्चो को ही सशक्त बनाने का प्रयास करेंगें.

मनोहर - बच्चो को सशक्त! वो कैसे?

रामनाथ - (उपस्थित सभी सदस्यों को अपनी योजना के बारे में बतलाता हैं योजना को सुनकर सुनीता, पूनम और सरोज के चेहरे में भी प्रसन्नता के चिन्ह दिखाई दे रहे हैं) - इसके लिए हम सभी कल स्कूल में मिलते है.

सभी लोग - हां ! हम जरूर समय पर स्कूल पहुॅच जाऐंगें.

(सभी लोग अपने-अपने घरों की ओर चले जाते हैं)

<u>चतुर्थ दृष्य</u>

(स्कूल के सभा कक्ष में सभी बच्चे, शिक्षणगण,सरपंच और उनके समिति तथा अन्य लोग बैठे हुए हैं.)

रामनाथ - यहां उपस्थित सभी लोग एवं प्यारे बच्चों. आप सभी को यह बात मालूम हैं कि विगत कुछ वर्षों से हमारे गांव की कुछ लड़कियां शाला छोड़ रही हैं. कारण पता करने पर ज्ञात हुआ कि घर से स्कूल जाते समय रास्ते में उन लड़कियों को कुछ लड़को के व्दारा निरंतर परेशान किया जा रहा था और अभी भी कुछ ऐसे होगें जिनको परेशान किया जाता होगा और वे डर या शर्म के नाम से यह बात किसी को नही बतला रहे होंगें. यह एक गम्भीर समस्या हैं और इसके निदान के लिए आप सब के सामने मैं अपनी योजना रख रहा हूॅ.

प्रधान पाठक - सरपंच महोदय! वाकई यह एक गम्भीर समस्या हैं. मैं भी देख रहा हूॅ कि स्कूल की दर्ज संख्या लगातार कम हो रही हैं. घर जाकर सम्पर्क करने पर पता चला कि पढ़ाई में मन नही लगनें के कारण स्कूल नही आते.

रामनाथ - देखो बच्चों! यह हम सबकी समस्या हैं और इसका समाधान भी हमें ही करना हैं. इसके लिए तुम दस से बारह बच्चे मिल कर एक टोली के रुप में काम करोगे और उस टोली का नाम होंगा - "निक्की की टोली" .

पूनम - सरपंच दादा ! तो क्या हम टोली बनाकर उन लड़को से लड़ाई लड़ेंगें.

रामनाथ (हॅसते हुए) - अरे नही बेटी! देखो ऐसे लड़को की हिम्मत तभी होंती हैं जब रास्ता सूनसान हो या लड़की अकेली हो. "निक्की की टोली" को केवल इतना करना हैं कि ऐसे रास्तो की पहचान करे जहां लड़के छेड़खानी करते हैं. वहां से आने-जाने वाली लड़की के साथ चलना हैं.

सुनीता - सरपंच दादा ! यह तो बहुत आसान हैं. आप का कहना है कि हम घर से स्कूल आते समय अकेले न आकर कुछ लड़कियों के साथ ही आएं.

रामनाथ - हां बेटी! और इसके अतिरिक्त जब भी हमारें सहयोग की आवश्यकता हो तो हमें बताएं.

सभी बच्चें - सरपंच दादा ! आप जैसा कहे हैं हम उसी के अनुसार कार्य करेंगें.

(सभी बच्चे अपनी - अपनी कक्षा में जाकर बैठते हैं)

पंचम दृष्य

(सुनीता दर्पण के सामने गुनगुनाते हुए स्कूल जाने के लिए खड़े होकर कंघी कर रही हैं. तभी उसे पूनम, सरोज,प्रियंका, रागिनी की आवाज सुनाई देती हैं.)

सरोज - सुनीता चलो जल्दी! देर हो रही हैं.

सुनीता - बस आई!

(जल्दी - जल्दी बस्ता उठाकर बाहर की ओर दौड़ती हुए मां से कहती हैं.)

सुनीता - मां ! मैं स्कूल जा रही हूँ.

राधा - अरे ! ठीक से कंघी तो कर लें.

(जगन्नाथ और राधा एक-दूसरे को देखकर हॅसने लगते हैं. सुनीता भी पीछे मुड़कर देख के मुस्कुराते हुए अपनी सहेलियों के साथ स्कूल की ओर चली जाती है.)

4

सच्चा मर्द

प्रथम दृष्य

(सुबह का समय हैं. राजेश,दिवाकर और मनोज गांव के मैदान की ओर बात करते व्यायाम करने जा रहे हैं.)

राजेश - जानते हो मनोज! रात में दादाजी मुझसे कह रहे थे कि बेटा रोज व्यायाम करके ऐसा शरीर बनाना, जिससे लोग देखते ही तुमसे डरने लगे.

मनोज - पर देखो न यार! कितने दिन हो गए व्यायाम करते. यह शरीर है कि बनता ही नही.

दिवाकर - कुछ खाते पीते भी हो की नही. शरीर केवल व्यायाम करने से थोड़ी बन जाएगा. पौष्टिक खाना भी जरुरी हैं.

मनोज - ठीक कह रहे हो यार. पर मां न मेरे खाने की ओर ध्यान नही देती हैं. ओ तो बस शीला को ही पुछती रहती हैं.

राजेश - मेरे घर में ऐसा नही होता. यदि मेरी मां मुझे मेरे खाने-पीने में थोड़ा भी ध्यान न दे तो दादाजी और पापाजी दोनो की डांट खानी पड़ती हैं.

(तीनों मैदान मे पहुंचकर व्यायाम करते हैं.)

व्दितीय दृष्य

(राजेश, मनोज, दिवाकर स्कूल जा रहे हैं. उनके आगे-आगे मनोहर, गिरधर और सपना भी चल रहे हैं.)

राजेश - अरे ओ मनोहर! ये क्या बीमारों के जैसे चल रहे हों. कल शाम से स्कूल जाने के लिए निकले हो क्या?

(मनोज और दिवाकर जोर से हॅसते हैं)

सपना - ए राजेश! तुमको इससे क्या. हम कल से निकले हो या आज से. तुम अपना काम करों न.

राजेश - ए लड़की ज्यादा चपर-चपर मत कर. तुम तीनों के लिए मैं अकेला ही काफी हूॅ.

गिरधर - छोड़ न यार. तुम लोग अपना काम करों हम अपना.

मनोज - क्यों रे. तू कब से बोलना सीख गया. लगता हैं मार खाने का शौक है.

मनोहर - तुम लोग अपने आपको पहलवान न समझों. व्यायाम करके शरीर बना लेने से कोई ताकतवर नही हो जाता. हम तुम्हारें जैसे दिखावा नही करते .

(सभी स्कूल के नजदीक आ जाते हैं.)

राजेश - अभी तो तुम तीनों बच गए. बाद में देखता हूं.

(शाला प्रागंण में सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षा के अनुसार प्रार्थना लाईन में लग जाते हैं.)

तृतीय - दृष्य

(रात में खाने के समय राजेश,उसके दादाजी पिताजी और बहन षीला खाने के लिए बैठे हैं. मां खाना परोस रही हैं, दादाजी खाते-खाते पूछते हैं)

दादाजी - और बेटा राजेश! आजकल व्यायाम वगैरह ठीक से चल रहा हैं की नही.

राजेश - हां दादाजी. और जानते हैं दादाजी मुझे देखकर बहुत से बच्चे डरते हैं.

दादाजी - वाह बेटा! ब्हुत अच्छा.

शीला - लेकिन दादाजी. ये न बिना मतलब के किसी से लड़ने को तैयार हो जाता हैं. ये अच्छी बात हैं क्या.

राजेश - ऐ तुम न ज्यादा चपड़-चपड मत करो. चुपचाप खाना खा और यहां से भाग जा. फिर बोलेगी न तो पड़ेगा.

दादाजी - अरी ओ बहु! देखो राजेश को और कुछ थोड़ी चाहिए.

राजेश की मां - जी पिताजी.

(राजेश की मां थाली में खाना डालते हुए.)

मां - बेटा ! सब्जी इतनी सी है.

राजेश - तो यह लो. अब मैं नही खाऊंगा.

(खाने में ही हाथ धोकर उठने लगता है.)

पिताजी - राजेश की मां! यह क्या तरीका हैं. बेटे को नाराज कर दिया न. मै भी नही खाता.

(वह भी हाथ धोकर उठ जाते हैं)

दादाजी - लाख बार बोला हूँ कि मर्दों के लिए खाने की कमी नही होना चाहिए. खाने से ही तो शरीर बनता हैं और शरीर ही मर्दान्गी की निशानी हैं.पर तुम समझती ही नही .

(वो भी नाराज होकर उठ जाते हैं)

(शीला की मां चुपचाप तीनों की ताने सुनती रहती हैं और शीला अपनी मां के चेहरे को देखती रहती हैं.)

चतुर्थ दृष्य

(राजेश, मनोज,और दिवाकर दूसरे दिनों की तरह अपने से आगे चलने वाले बच्चों पर व्यंग करते,परेशान करते जा रहे हैं, अचानक राजेश का पैर रास्ते के किनारे बने बड़े से पानी भरे गढ़ढे पर पड़ता हैं और वह गिरकर डूबने लगता हैं. राजेश अपने मित्रों को आवाज लगाता हैं.)

राजेश - मनोज, दिवाकर अरें! मैं गढ़ढे में गिरकर डूब रहा हूँ. मुझे जल्दी बाहर निकालों. नही तो मैं मर जाऊंगा.

मनोज - नही, नही राजेश! तुमको बचाने के चक्कर में हम खुद गढ़ढे में गिर जाएंगें.

(दोंनों अपने घरों की ओर भाग जाते हैं. राजेश जोर - जोर से रोते हुए चिल्लाता हैं -बचाओं-बचाओं. उनकी आवाज कुछ दूरी पर चलने वाले बच्चो तक पहुंचती हैं)

गिरधर - यह तो राजेश की आवाज हैं.

सपना - मुझे भी लगता हैं.

मनोहर - उधर गढ़ढे की तरफ से आ रही हैं. चलों जाकर देखते हैं.

(उसी समय पीछे से शीला आ रही थी. राजेश को गढ़ढे में गिरे देखकर रोते हुए चिल्लाई)

शीला - अरे कोई मेरे भईया को बचाओ. वह गढ़ढे में डूब रहा हैं.

(इतने में तीनों गढ़ढे के पास पहुंचकर एक - दूसरे के हाथो को पकड़कर राजेश के हाथ तक अपना हाथ पहुंचाकर खींचते हुए बाहर निकालते हैं. तब तक राजेश बेहोश हो चुका था. चारों बच्चे मिलकर उसे डाक्टर के पास लाते है, और इलाज के बाद राजेश को होश आता हैं.)

पंचम दृष्य

(पूर्व माध्यमिक शाला बसंतपुर के सभा कक्ष में सभी बच्चें इकठ्ठे हुए हैं. आज राजेश के जान बचाने वाले चारों बच्चों को वीरता-पुरस्कार दिया जाना हैं. संस्था के प्रधान पाठक श्रीमती निलिमा जैन बच्चों को संबोधित करते हुए कहती हैं.) -

श्रीमती जैन - प्यारें बच्चों ! आप सभी को बतलाते हुए हर्ष हो रहा हैं कि हमारें इस संस्था के चार बच्चो नें बहादुरी का परिचय देते हुए इसी संस्था के बच्चे राजेश की जान बचाई. मै इन चारों बच्चो का नाम इस वर्ष के वीरता पुरुस्कार के लिए आगे भेजूंगी.

(सभी बच्चे जोर से ताली बजाते हैं)

सुनयना (एक अन्य छात्रा) -ः मेडम जबकि राजेश के साथ रहने वाले दोनो दोस्त दुम दबाकर वहां से भाग गए थें और आए दिन हम लोगो को अपनी शरीर की ताकत दिखाकर चिढ़ाते थे.

श्रीमती जैन - हां सुनयना! पर यह समय शिकायत करने का नही हैं. पर मैं आप सभी बच्चों से स्पष्ट करना चाहती हूं कि बलिष्ठ शरीर से कोई वीर नही हो जाता और न ही बलिष्ठ शरीर हमें किसी को चिढ़ाने, कम समझने या अपमानित करने का अधिकार देता हैं . मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत मन की शक्ति होती हैं औंर मन को यह शक्ति मनों की भाव जैसे - दया, प्रेम, करुणा, त्याग, सम्मान, अपनापन इत्यादि से मिलता हैं जैसा कि इन चारों बच्चों ने दिखलाया.

(सभा कक्ष पुनः तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठती हैं.)

विमला (एक अन्य छात्रा) - मैडम जी यह बात सभी बच्चों के साथ-साथ सभी लोग समझे, उसके लिए हम क्या कर सकते हैं?

श्रीमती जैन - विमला तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया हैं इसके लिए हम अपने संस्था के 10-12 बच्चो का एक टोली बनाते हैं और उसका नाम "निक्की की टोली" होगा. यह टोली निरंतर इस बात का अवलोकन करेगा कि ऐसे कितने बच्चें है जिसमें मर्दानगी की गलत धारणा है और उसका आधार क्या हैं.

(राजेश, मनोज, और दिवाकर सिर नीचा करके सुन रहे हैं. उन्हें अपने पूर्व के व्यवहारों पर पष्चाताप हो रहा है.

सुनयना - मैडम! ऐसी धारणाओ को दूर करने के लिए हमें समय-समय पर जागरुकता, अभियान/गतिविधियों भी चलाना/ करना होगा.

श्रीमती जैन - हां सुनयना! तुमने बिलकुल ठीक कहा.

(मैडम व्दारा समिति/टोली बनाकर सभा का विसर्जन किया जाता है)

षष्ठम दृष्य

(सूरज निकल चुका था. राजेश जग गया था किन्तु बिस्तर पर ही पड़ा था. आज मनोज और दिवाकर व्यायाम करने जाने के लिए बुलाने नही आया था. तभी राजंेश के कानो मे दादाजी की आवाज सुनाई देती हैं)

दादाजी - बेटा राजेश! आज कसरत करने नही जाना है क्या?

राजेश - नही दादाजी! आज नही जाऊंगा.

दादाजी - अरे भाई ! कसरत नही करोगे तो मर्द कैसे बनोगे.

राजेश - दादाजी! आप मुझे जिस तरह का मर्द बनाना चाहते हो, उस तरह का मर्द मैं कभी नही बनना चाहूॅगा.

दादाजी - मेंरे तरह की या तेरे तरह की मर्द ! आखिर मर्द तो मर्द होता हैं.

राजेश - नही दादाजी! आप मुझे जैसा मर्द बनाना चाहते है उसमें दूसरे को हीन समझना,अपमान करना, दूसरो को गुलाम समझना, हिंसा करना ये सब शामिल हैं, जबकि सच्चा मर्द तो वह होता हैं जो सबका सम्मान करें सबके लिए दया, प्रेम, त्याग और अपनापन की मन में भावना रखें.

दादाजी - वाह बेटा! तू तो बड़ा ज्ञानी बन गया है.

राजेश - हां दादाजी ! और मेरी सुन लो. आज से न तो मैं किसी का अपमान करूंगा और न अपने सामने किसी का होने दूंगा.

(राजेश बोलते हुए व्यायाम करने के लिए मैदान की ओर चला जाता हैं)

5

मैं कमजोर नही

प्रथम दृष्य

(रामप्यारे मोटर सायकल खरीदने एजेन्सी जाने की तैयारी कर रहे हैं. उसके बेटा मोहन, बेटी गीता और पत्नी सविता अपने-अपने कामों में लगे हुए है. बेटा मोहन कक्षा 10वी और बेटी गीता कक्षा 12वी में पढ़ रहे है.)

गीता - पापा! आप आज कहां जा रहे हैं.

रामप्यारें - आज मैं मोटर सायकल खरीदनें शहर जा रहा हूँ.

गीता - वाह. मेरें लिए लेने जा रहे हैं?

रामप्यारें - नही बेटी! तुम्हारें भाई मोहन के लिए. वह तीन साल बाद शहर जाएगा न पढ़नें.

गीता - पर पापा! मैं तो अगले साल ही पढ़ने शहर जाऊंगी.

रामप्यारें - बेटी तुम्हारें लिए भी सोचूंगा.

गीता - पापा! कम से कम ऐसी मोटर सायकल खरीदना जो हम दोनों क काम आ जाए जैसे एक्टीवा,प्लेटिना, मेस्ट्रों.

रामप्यारें - ठीक हैं, ठीक हैं ! देखता हूँ.

दूसरा - दृष्य

(रामप्यारें, मोहन को साथ लेंकर शहर चला जाता हैं. गीता की मां घर के काम निपटानें में व्यस्त हैं. गीता स्कूल जाने के लिए तैयार हो गई है. जाने से पहले मां के पास आकर कहती है)

गीता - क्या मां! पापा कभी भी मेरी बात नही सुनते. मैं मोहन से बड़ी हूं, फिर भी पापा को कुछ भी लेना हो तो मोहन से ही पूछते हैं.

सविता - ऐसा ही समाज का दस्तूर हैं बेटी, तो क्या करोगे. मेरीं शादी को हुए 20 साल हो गए हैं. आज तक तुम्हारें पापा ने कभी मुझसे किसी काम पर सलाह-मश्विरा नही किया हैं. तुम तो अभी बच्ची हो.

गीता - तो क्या मां यह सब कुछ ऐसा ही चलता रहेगा.

सविता - मैं नही जानती! तुम्हारें दादाजी तुम्हारें पापा जी से पूछते थें या बतलाते थें, अपने बेटियों से नही और अब तुम्हरे पापा भी अपने बेटों से पूछते और बतलातं हैं, तुमसे नही.

गीता - और मोहन भी अपने बेटों से ही पूछेगा और बतलाएगा, बेटी से नही.

सविता - शायद ऐसा ही हो.

गीता - पर क्यों मां! आखिर हम भी तो उन्ही के बच्चे है. इस परिपाटी को बदलना होगा.

सविता - तुम बदल सकती हो.

गीता - जरुर मां.

<u>दृष्य - तीसरा</u>

(शा0उ0मा0शा0 नवरंगपुर में आज "समाज का संतुलित विकास बंद हो लिंग-भेद पर विश्वास" विषय पर संगोष्ठी कार्यक्रम रखा गया हैं. इस कार्यक्रम में वक्ता के रुप में देश के जाने माने समाजशास्त्र के प्रोफेसर - श्री प्रमोद चक्रवर्ती, मनोविज्ञान के प्रोफेसर - श्री राकुमार बंजारे और संविधान विशेषज्ञ - श्री दिलहरण गायकवाड़ आए हुए हैं.सभी बच्चे सभा कक्ष में उपस्थित है. संस्था के प्राचार्य श्री सोमनाथ पैकरा सभी शिक्षकों और मेहमानों के साथ सभा कक्ष मे प्रवेश करते हैं.)

प्राचार्य - (औपचारिकता पूर्ण करने के बाद) बच्चों जैसा कि आप सभी को मालूम हैं कि आज हमारी संस्था में "समाज का संतुलित विकास-बंद हो लिंग भेद पर विश्वास" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है. अब इस विषय पर विस्तृत प्रकाश डालने के लिए मैं आदरणीय चक्रवर्ती जी को सादर आमंत्रित करता हूँ.

(सभा कक्ष में तालियां बजती है)

चक्रवर्ती - (धन्यवाद करने के बाद) बच्चों लिंग भेद पर विश्वास हम सभी के घरों में कम या ज्यादा रुप में देखने को मिलता हैं. पर क्या आप में से किसी ने सोंचा कि ऐसा क्यों?

मोहन - सर पुरुष शक्तिशाली होता है.

सोहन - सर ! प्रकृति ने कामो का निर्धारण कर दिया है.

दिनेश - सर ! हमारे पूर्वज ऐसा करते रहे हैं इस कारण हम भी करते हैं.

चक्रवर्तीजी - अब आप सब मेरी बातों को ध्यान से सुनों. आवश्यकतापूर्ति के आधार पर प्रकृति ने दो लिंग पुरुष और स्त्री बनाया. मानव विकास के आरंभिक वर्षों में ऐसा कोई काम नही था जिसे पुरुष और स्त्री दोनो न करें. समय के साथ-साथ जब घर, परिवार और गांव ने संगठित रुप स काम करना शुरू किया तब अंदर के कार्य स्त्रियों और बाहर के कार्य पुरुषों के व्दारा किये जाने लगे और आरंभिक स्थिति में इसका आधार पुरुष और स्त्री के बीच भेद न होकर आवश्यकताओ की पूर्ती ही था. धीरे-धीरे यही व्यवस्था भेदभाव में परिणित हो गया जो आज हमें अपने-अपने घरो में झाड़ू लगाना ,बर्तन साफ करना, कपड़ा धोना, दुकान से सामान लाना, बाहर शहरो में जाकर काम करना,कपड़े पहनना इत्यादी में दिखाई देता है.

(अपनी बात समाप्त करते हुए मंच श्री राम कुमार बंजारे को सौंपता हैं)

बंजारे जी - प्यारें बच्चों! जैसा कि चतुर्वेदी जी ने बतलाया कि आरंभिक दिनों में दोनो लिंगो के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नही था. समय के अनुक्रम में जब हम किसी घटना को निरंतर होते हुए देखें तो उसका हमारे मन पर प्रभाव पड़ता हैं. मन पर पड़ने वाले प्ररभाव से सोच बनता है और सोच हमारा व्यवहार बन जाता हैं. चतुर्वेदी जी के व्दारा यहां जितने भी उदाहरण बतलाये गए हैं उन सभी को निरंतर देखने के कारण हमारे मन में यह सोच बना कि यह काम स्त्रियों के लिए हैं और यह काम पुरुषों के लिए. धीरे-धीरे यह सोच हमारा व्यवहार बनता गया और आज इसका परिणाम भेदभाव के रुप में हमारे सामने है.

मोहन - सर! तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि यदि इन बातो को हम मन से निकाल दे तो भेदभाव खत्म हो सकता है.

बंजारे जी - आपने बिल्कुल सही समझा है. बहुत सारे भेदो का आधार हमारा मन ही है.

(अपनी बात समाप्त करते हुए मंच पर श्री दिलहरण गायकवाड़ जी को आने का इशारा करते है.)

गायकवाड़ जी - (अपनी बात कहते हुए) - प्यारे बच्चों! जैसा कि अभी आपने सुना कि स्त्री और पुरुष के मध्य आज जो कुछ भेदभाव हम सबके सामने दिखाई देता हैं उसका बहुत बड़ा कारण मानव निर्मित है. इन भेदभावों को दूर करने का कार्य हमारें संविधान ने किया हैं. इसमें स्त्री और पुरुष के मध्य हर प्रकार के भेदभाव का उन्मूलन किया गया है. यही कारण है कि आज जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं व्दारा उन सभी कार्यो को पूर्ण क्षमता के साथ किया जा रहा हैं जिसे कभी केवल पुरुशों का कार्य माना जाता था.

(गायकवाड़ जी अपनी बात समाप्त करते है. बच्चे ताली बजाकर स्वागत करते हैं. मंच पर प्राचार्य महोदय आते है.)

प्राचार्य - प्यारे बच्चों! अभी आप लोगो ने तीन बुध्दिमान वक्ताओ के बात ध्यान से सुना. आशा हैं इन बातो को अपने व्यवहार में अमल लाते हुए अपने घर से शुरूआत कर भेदभाव को समाप्त करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगें.

सुरेश - सर इसके लिए हम शाला स्तर पर क्या कर सकते हैं?

प्राचार्य - सुरेश! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया हैं. शाला स्तर पर हम आज ही 10से 12 बच्चों की एक टोली बनाऐंगें जो "निक्की की टोली" के नाम से जाना जाएगा. यह टोली शाला व घरेलु स्तर पर होने वाले भेदभाव पर नजर रखते हुए जागरुकता लाकर समाप्त करने का प्रयास करेंगें.

(सभी बच्चे प्रसन्न होकर ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता का इजहार करते हैं. कक्षा शिक्षक "निक्की की टोली" बनाने की प्रक्रिया में जुट जाते हैं. संगोष्ठी सभा समाप्त होती हैं.)

<u>चौथा - दृष्य</u>

(शाम का समय है. स्कूल से आने के बाद मोहन और गीता अपने - अपने गृहकार्य में लगे हुए हैं. तभी उनके पिताजी की मोटर सायकल घर के सामने रुकती हैं. गाड़ी अंदर करने के बाद कपड़ा बदलते हुए रामप्यारे पूछता हैं)

रामप्यारें - और बेटा ! क्या हो रहा हैं ?

मोहन - बस पापा! गृहकार्य कर रहे हैं. पापा आपने दीदी से नही पूछा.

रामप्यारें - ओ तो मैं देख रहा हूॅ बेटा कि तुम्हारी दीदी भी गृहकार्य कर रही होगी.

मोहन - पापा! ओ तों आप मुझे भी देख रहे है. जानते हैं पापा आज हमारे स्कूल मे इसी विषय पर "संगोष्ठी का आयोजन हुआ था.

रामप्यारें - किस विषय पर.

मोहन - "समाज का संतुलित विकास - बंद हो लिंगभेद पर विश्वास".

रामप्यारें - संगोष्ठी में क्या बतलाया गया.

मोहन - यही कि हमारें छोटे-छोटे भेदभावपूर्ण व्यवहार कैसे समय के साथ विकराल रुप धारण करता है.

रामप्यारें - तो बेटा! मैं कहां भेदभाव करता हूॅ और मेरे कौन से व्यवहार से तुमको लगा कि मैं भेदभाव कर रहा हूं.

मोहन - पापा ! वक्ताओं ने बतलाया कि पहले-'पहल किसी को भी नही लगता कि वे भेदभाव कर रहे हैं. जैसे पापा आप याद करिये अभी आप आए तो मुझसे पूछा कि क्या कर रहे हो दीदी से नही .

रामप्यारें (सोचते हुए) - हां बेटा ! तुम सही कह रहे हो . इतनी बारीकी से मैंनें अभी सोंचा ही नही हैं. वो क्या होता हैं कि हम बातो को सहजता से लेते हैं और पता ही नही चलता कि हम भेदभाव कर रहे है.

मोहन - हां पापा! इसी लिए हमारे प्राचार्य महोदय जी ने "निक्की की टोली " बनाई हैं जिसमें मैं और दीदी भी शामिल हैं.

रामप्यारें - बहुत अच्छा बेटे . मै भी धीरे-धीरे अपने व्यवहार को बदल दूंगा.

(रामप्यारें दोनो बच्चो के सिर पर हाथ फेरते हुए कुछ देर वही बैठा रहा.)

<u>पांचवा दृष्य</u>

(रामप्यारें, मोहन और गीता तीनों शहर जाने की तैयारी कर रहे हैं. गीता की माॅ नाष्ता बना रही है.. पंडित रामफल आता है.)

पंडित रामफल - अरे भाई ! आज आाप लोग पूरे परिवार कहां जा रहे है?

रामप्यारें (पंडित को प्रणाम करते हुए) - बस पंडित जी शहर जा रहे है.

पंडित - क्यों?

रामफल - मोटर सायकल खरीदने.

(रामप्यारें, मोहन,गीता और गीता की मां एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते है.)

6

मैं पढ़ूंगी

प्रथम - दृष्य

(मंगल राम अपने खेतों में मजदूरों के साथ बोवाई का काम करा रहा है. आसपास के खेतों में किसान अपने-अपने काम में लगे हुए हैं. उसी समय बगल के खेत के मालिक शिव प्रसाद पैकरा जो शहर में रहकर सरकारी नौकरी करता है, गाँव आया हुआ है, मंगल राम से बातचीत करने उसके खेत पर आया.)

शिव प्रसाद - अरे भाई! मंगल बहुत जोर-शोर से काम में लगे हुए हो. अरे आओ भाई! तनिक बैठ भी लें.

मंगल - (आवाज सुनकर खेत से निकलते हुए) अरे क्या करें भाई शिव प्रसाद. यहीं खेती तो हम लोगों का एक आसरा है. जमकर मेंहनत करो तब जाकर सालभर के लिए कुछ मिल पाता है.

शिव प्रसाद - (मेड़ पर बैठते हुए) हाँ भाई! ओ तो तुमने सहीं कहा. और क्या हाल चाल हैं?

मंगल - (बगल में बैठकर) और बाकी तो ठीक है. सोंच रहा हूं कि इस साल फसल अच्छी हो जाए तो ठंड में चमेली बेटी की विवाह करके गंगा नहा लूँ.

शिव प्रसाद - अरे मंगल! यह क्या कह रहे हो! चमेंली बेटी इतनी बड़ी हो गई कि उसकी शादी करने का विचार कर रहे हो.

मंगल - हाँ भाई! इस साल बारहवीं कक्षा में पढ़ रही है. और कितना पढ़ेगी? आखिर विवाह होने के बाद घर गृहस्थी ही तो सम्हालनी है.

शिव प्रसाद - हाँ मंगल. वो तो ठीक है. जहाँ तक मुझे याद है तुम्हारी बेटी चमेंली और मेरी बेटी स्वाति दोनों बारहवीं में पढ़ रही है. पर मैं अभी उसकी शादी करूंगा ही नहीं.

मंगल - भाई शिव प्रसाद. तुम्हारी बात अलग है. तुम शहर में रहते हो और हम गाँव में.

शिव प्रसाद - तो क्या हुआ मंगल. अब समय बदल रहा है. बेटियों को भी उनके मन भर पढ़ा लिखाकर अच्छे से अपने जिम्मेंदारी निर्वहन करने योग्य बनाना चाहिए.

मंगल - (बात बदलते हुए) और भाई. अकेले ही आए हो कि परिवार सहित और कब तक रहना है.

शिव प्रसाद - बस मंगल. आए तो सभी हैं. पर क्या करोगे छुट्टी मिलती नही. इसलिए एक-दो दिन में निकल जाऊँगा.

(मंगल, शिव प्रसाद को बाद में मिलने की बात कहते हुए खेत में मजदूर को आवाज लगाते हुए चला जाता है. शिव प्रसाद भी अपने खेत पर आ जाता है.)

दूसरा - दृष्य

(रात में खाना खाने के बाद मंगल और उसकी पत्नी मीरा आराम करते हुए बातें कर रहे थे. मंगल खेत में शिव प्रसाद के साथ हुए चर्चा के संबंध में बतला रहा था)

मंगल - चमेंली की माँ. शिव प्रसाद शहर से आया हुआ है. जानती हो मैं और शिव प्रसाद कक्षा 5 वीं तक साथ-साथ पढ़े हैं. और आज देखो वह कहाँ है और मैं कहाँ.

मीरा - क्या करोगे. होनी तो होकर रहता है. अगर आपके घर की परिस्थिति भी ठीक रहती तो आप भी आज पढ़ लिखकर नौकरी करते.

मंगल - अच्छा ये बतलाओ. उसकी पत्नी राधा से मिली हो.

मीरा - नहीं तो. पर हाँ उसकी बेटी स्वाति को देखी हूं. हमारी चमेंली की उम्र की है. लगता है उसकी भी इस साल शादी हो जाएगी.

मंगल - अरे नहीं. आज शिव प्रसाद से खेत में इसी बात पर चर्चा हो रही थी. अप्रत्यक्ष रूप से वह मुझे भी मना कर रहा था कि इतनी जल्दी चमेंली की शादी न करो.

मीरा - तो आपने क्या कहा?

मंगल - कुछ नहीं.

(इसी प्रकार बात करते-करते दोनों को नींद आने लगी और दोनों सो गए.)

तृतीय - दृष्य

(अगले दिन सुबह के समय चमेंली घर के बाहर झाड़ू लगा रही थी. स्वाति अपने घर के छत पर खड़ी ब्रश कर रही थी. चमेंली की नजर स्वाति पर पड़ी और वह मुस्कुराते हुए बोली)

चमेंली - अरे स्वाति! दो-तीन दिन हो गया यहाँ आए. पर घर में बैठने नहीं आई.

स्वाति - बस चमेंली! कुछ देर बाद आ रही हूँ. तब तक तुम भी अपना काम निपट लो.

चमेंली -ठीक है.

(कुछ देर बाद स्वाति चमेंली के यहाँ आती है. चमेंली उसे अपने कमरे मे ले जाकर बैठाती है और पुछती है)

चमेंली -चल अब बता. तेरे शहर का क्या हाल चाल है?

स्वाति -सब ठीक है. तुम अपने बारे में बतलाओ. पढ़ाई-लिखाई कैसे चल रही है और आगे क्या करने का ईरादा है.

चमेंली -पढ़ाई-लिखाई तो ठीक चल रही है. पर आगे क्या करूँगी, यह नहीं बतला सकती. और तुम्हारी पढ़ाई का.

स्वाति - ठीक है चमेंली. और मैं तो आगे पी.एम.टी. की परीक्षा दिलाकर मेडिकल कॉलेज जाना चाहती हूं. पापा भी इसके लिए तैयार है.

चमेंली - तुम्हारा ही अच्छा है. मेरे यहाँ तो कह रहे थे कि अगर अच्छा सा परिवार मिला तो शादी कर देंगे.

स्वाति - शादी! अरे बाप रे! इतनी जल्दी. देखो चमेंली मेरी मान तो अपने मम्मी-पापा को समझा और आगे पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ा हो जा तभी शादी करना.

चमेंली - मेरी बात कहाँ सुनने वाले है स्वाति. तुम्ही कुछ तरीका बतलाओ.

स्वाति -जानती हो चमेंली. वहाँ हमारे साथ पढ़ने वाली एक लड़की की शादी उसके घर वाले जल्दी कर रहे थे तो हमारे स्कूल की ''निक्की की टोली'' की लड़कियाँ जाकर समझाए और उनके समझाने से उसकी मम्मी-पापा मान गए और शादी नहीं हुई.

चमेंली -स्कूल की ''निक्की की टोली''. यह क्या है स्वाति.

स्वाति - अरे चमेंली. तुमको नही पता. जानती हो 11 से 18 वर्ष के बच्चों विशेषकर लड़कियों से संबंधित समस्याओं के निराकरण व जागरूकता लाने के उद्देश्य से सभी शालाओं में कुछ लड़कियों को मिलाकर ''निक्की की टोली'' बनाई गई है.

चमेंली - और यह टोली करती क्या है?

स्वाति - अरे अभी तो बतलाई न. जागरूकता लाती है.

चमेंली - पर हमारे स्कूल में तो बना ही नही है.

स्वाति - तो अपने मैडम या प्राचार्य से चर्चा करो न.

चमेंली - ठीक है! आज कुछ सहेलियों के साथ मिलकर बात करने का प्रयास करती हूँ.

स्वाति - कर ही लेना.

चमेंली - हाँ, हाँ जरूर स्वाति!

(स्वाति अपने घर जाने के लिए विदा लेती है और चमेंली उसे दरवाजे तक छोड़ने के बाद स्कूल जाने की तैयारी करने में जूट जाती है.)

<u>चतुर्थ - दृष्य</u>

(चमेंली तैयार होकर स्कूल जाने के लिए अपने सहेलियों का इन्तजार कर रही है.उसी समय बाहर से मंजू, चमेंली को आवाज लगाती है. आवाज सूनकर चमेली झटपट बस्ता लेकर बाहर निकलती है.)

चमेंली - (रास्ते में) - मंजू! आज प्रिया नहीं आई क्या?

मंजू - नहीं. आज उसकी तबियत ठीक नहीं है.

चमेंली - क्यों क्या हुआ?

शान्ता - अरे मुझे तो लगता है बहाना बना दी. बात कुछ और ही है.

लता - तुम्हें कैसे पता?

शान्ता - वीणा कल बतला रही थी कि उसके घर वाले इस साल के अंत में उसकी शादी करने की तैयारी कर रहे हैं. बेचारी तभी से उदास है.

चमेंली - ये वीणा कौन है?

शान्ता - प्रिया के मामा की लड़की.

चमेंली - बात उदास होने की है ही1 मुझे ही ले लो. मेरी भी शादी इस साल करने की तैयारी कर रहे हैं और जिस दिन से सूनी हूँ, उसी दिन से किसी काम में मन नहीं लगता.

मंजू - तो अपनी मम्मी, पापा से बोलते क्यों नही कि अभी मुझे पढ़ना है.

चमेंली - मम्मी, पापा से बोलने की हिम्मत ही नहीं होती. आज मैं अपने बचपन की सहेली स्वाति को बतलाई हूँ तो वह बोल रही थी कि ''निक्की की टोली'' तुम्हारी मदद कर सकती है.

लता - अरे हाँ चमेंली! मैं तो बतलाना ही भूल गई थी.

चमेंली - क्या?

लता - यहीं की आज हमारे स्कूल में ''निक्की की टोली'' बनाई जाएगी जो ऐसे सभी लड़कियों की सहायता करेगी जो किसी भी प्रकार की समस्या से जूझ रही हो.

चमेंली - सच कहती हूँ लता. आज मैं खूद सोंच रही थी कि स्कूल जाकर मैडम से निक्की की टोली बनाने की बात कहुँगी, ताकि प्रिया और मेरे जैसे लड़कियों की शादी जल्दी न हो और हमें भी मन भर पढ़ने का अवसर मिलें.

शान्ता - पर इसमें पूरी तरह से माँ-बाप का ही दोष नहीं है.

लता - वो कैसे?

शान्ता - तुम तो खुद देखती होगी कि कुछ लड़कियाँ दिन भर सजने-सँवरने में और मोबाईल में ही उलझे रहते हैं. ऐसे में माँ-बाप सोंचते हैं कि लड़की कहीं बिगड़ न जाए, इससे अच्छा है शादी कर दिया जाए.

मन्नू - (बीच में बोलते हुए) - और लड़कियाँ भी तैयार हो जाती है कि उन्हें शादी के बाद बिना रोक-टोक के संजने-संवरने व मोबाईल में बात करने की आजादी मिल जाएगी.

लता - (हँसते हुए) - और इसकी सजा बेचारी प्रिया और चमेंली जैसी होनहार लड़कियों को भी मिल जाती है.

(सभी सहेली हँसते हुए स्कूल के प्रांगण में प्रवेश करते हैं.)

<u>पंचम - दृष्य</u>

(प्रार्थना शुरू होने के समय संस्था के प्राचार्य श्री जी.एल. गुप्ता जी बच्चों को प्रार्थना के बाद सभा कक्ष में बैइने के लिए कहते है. प्रार्थना होने के बाद प्राचार्य महोदय अपने सभी शिक्षकों के साथ सभा-कक्ष में प्रवेश करते है.)

प्राचार्य -प्यारे बच्चों! आप सभी के मन में यह प्रश्न आ रहा होगा कि आप लोगों को आज सभा कक्ष में क्यों बैठाया गया है?

राकेश -हाँ सर! रमेंश सम्भावना व्यक्त कर रहा था कि शायद हमारे स्कूल में भी ''निक्की की टोली'' बनाई जाएगी.

प्राचार्य -राकेश! तुम्हारी सम्भावना बिल्कुल सहीं है और मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि मेरे विद्यालय के छात्र काम की चीजें जानकारी रखने में रूचि लेते हैं.

राकेश -पर सर! इसके बारे में हम कुछ ज्यादा नहीं जानते.

प्राचार्य -ठीक है राकेश. आज मैं आप सभी लोगों को इसके संबंध में विस्तार से बतलाता हूं और जहाँ कहीं भी कुछ प्रश्न करना जरूरी समझोगे, वहाँ प्रश्न भी करना.

सभी बच्चे - जी सर!

प्राचार्य -देखो बच्चों. आप सभी को मालूम है कि 11 वर्ष से लेकर 18 वर्ष की आयु किशोरावस्था की होती है. और इस उम्र में बच्चों की अपनी अलग किस्म की समस्याएँ होती है. उन समस्याओं के संबंध में बच्चे सहजता से किसी को नहीं बतलाते. ऐसी परिस्थिति में समस्याएँ विकराल रूप ले लेती है और बच्चों के साथ-साथ समाज को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है. इस परिस्थिति से बचने के लिए बच्चों का समूह बनाया जानी है, जो निक्की की टोली कहलाएगा और बच्चों की समस्याओं को दूर करने की दिशा में प्रयास करेगा.

लता -सर! इस टोली में क्या केवल लडकियाँ ही होंगी?

प्राचार्य -नहीं लता. इसमें लड़का और लड़की दोनों ही होगे क्योंकि दोनों ही बच्चे हैं.

मन्नू -आप इस टोली में किनको शामिल करेंगे सर.

प्राचार्य -जो बच्चे सक्रिय रहकर इसमें कार्य करेंगे. पर मैं चाहता हूँ कि इसमें शामिल होगे वाले बच्चे स्वयं अपना नाम बोले.

(राकेश, अनुज, लता, मंनू, शान्ता चमेंली, बसन्त, सुमन, तनु, अन्नू, बनवारी व किशोर अपना नाम बोलते हैं)

प्राचार्य -तो ठीक है बच्चों, आज से आप लोग ''निक्की की टोली'' के रूप काम करेंगे और कहीं किसी सहयोग या मार्गदर्षन की जरूरत होगी, तब मेरे और तिवारी मैडम से सहयोग ले लेंगे.

(प्राचार्य महोदय सभी बच्चों को अपने-अपने कक्षा में जाकर बैठने को कहते है. सभा समाप्त होती है.)

छठवाँ - दृष्य

(मंजु और लता के व्दारा बतलाए जाने पर प्राचार्य महोदय गुप्ता जी तिवारी मैडम और निक्की की टोली में शामिल सभी बच्चों को साथ लेकर प्रिया और चमेंली के घर उनके माता-पिता से मिलने जाने का निश्चय करते हैं और अगले दिन चमेंली के यहाँ जाते हैं)

मंगल राम - (सभी को बैठाते हुए) - कहिए सर. कैसे आना हुआ?

प्राचार्य - मंगल हम लोग यहाँ पर क्यों आए हैं, इस संबंध में आपसे मैडम तिवारी बतलाएगी.

मंगल राम - हाँ, हाँ मैडम बतलाईये.

तिवारी मैडम - हम आपको चमेंली की पढ़ाई-लिखाई की जानकारी देने आए हैं. चमेंली के पापा आप बहुत सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं, जो चमेंली जैसी होनहार लड़की के पिता हैं.

मंगल राम - वो कैसे?

लता - (बीच में बोलते हुए) वो ऐसे चाचा जी कि चमेंली हमारे कक्षा की सबसे होशियार लड़की है और अगर उसे पढ़ने का भरपूर अवसर मिले तो एक दिन वह आपके साथ-साथ इस क्षेत्र का नाम रोशन करेगी.

मंगल राम - पर बेटी! मैं चमेंली को पढ़ा तो रहा हूँ.

तिवारी मैडम - बात अभी की ही पढ़ाई की नहीं है. पढ़ाई आगे भी करानी है.

मंगल राम - आगे करानी है. पर मैं तो इस साल शादी करने की सोंच रहा हूँ.

मंजू - चाचा! तो सोंच को बदल डालो.

तिवारी मैडम - हाँ मंगल जी. आपके साथ-साथ ऐसे सभी माँ-बाप को जिनके बच्चे पढ़ने की ईच्छा रखते हैं, उन्हें पूरा अवसर देना चाहिए.

मंगल - पर यह तो हमारे परिवार का रिवाज है. चमेंली तो सबसे ज्यादा पढ़ ली.

तिवारी मैडम - मंगल जी. किसी न किसी को तो पहल करना होगा. इस रिवाज को तोड़ने का और मुझे विश्वास है कि इसकी शुरूआत आप ही से होगा.

(वहाँ आई सभी लड़कियों, तिवारी मैडम, प्राचार्य और स्वयं चमेंली के कहने पर मंगल हँसते हुए कहता है)

मंगल - अच्छा भाई! आप सभी लोगों की बात सुनकर मुझे ऐसा लगा कि मैं सचमूच गलती करने जा रहा था. इसके लिए मुझे खेद है और अब आगे मैं यह भी कोशिश करूँगा कि किसी चमेंली की शादी पढ़ाई पूरे किए बिना न हो.

(सभी बच्चे खुशी के साथ ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं. प्राचार्य अपने साथ आए सभी लोगों और मंगल राम को साथ लेकर प्रिया के घर की ओर प्रस्थान करते है.)

7

मन की आवाज

प्रथम दृष्य

(कक्षा दसवी के कक्षा शिक्षक श्री रामनाथ बंजारे बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्र तैयारी के रूप में हल करा रहे थे)

बंजारे जी - सुनील! तुम्हारे लिए तो यह प्रश्न पत्र हल करना सरल होगा.

सुनील - नहीं सर! कुछ प्रश्न ऐसे हैं जो मुझसे भी नहीं बन रहा है.

बंजारे जी - और दिव्या तुमसे?

दिव्या - सर मुझसे भी पुरा प्रश्न हल नहीं हो रहा है.

बंजारे जी - (नाराज होते हुए) यह क्या है? तुम दोनों हमारे स्कूल के होशियार विद्यार्थी हो और जब तुम दोनों पूरे प्रश्न नहीं हल कर पा रहे हो तो बांकी से मै क्या उम्मीद रखूं.

दिव्या और सुनील (एक साथ) - कोशिश कर रहे है सर.

बंजारे जी - कोशिश नहीं. मुझे पूरा प्रश्न हल किया हुआ मिलना चाहिए. जानते हो पिछले साल दिनेश और वर्षा जब दसवीं में थे तो उनसे एक भी प्रश्न गलत नहीं होता था.

(सुनील और दिव्या के साथ-साथ सभी बच्चे प्री-बोर्ड के प्रश्न-पत्र हल करने में जूट जाते है.)

व्दितीय दृष्य

(सुनील की माँ रमा अपनी पड़ोस की सहेलियों विभा, गोदावरी, गंगा, रंभा के साथ बैठी बातें कर रही है.)

विभा -अब कुछ दिनों बाद बच्चों की बोर्ड परीक्षा आरंभ होने जा रही है. मैं और दिव्या के पिताजी दोनो दिव्या को बोल दिए है कि इस साल 90 प्रतिशत से बिल्कुल कम नहीं आना चाहिए.

रंभा -अरे! हम लोग तो सुनील को सभी कठिन विषय का ट्यूशन दिला रहे है ताकि अच्छे अंक आने में कोई भी कसर ना रहे.

गोदावरी - हमारे यहां तो महावीर के पापा बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते. मैं बोलती भी हुं तो मुझे टोंकते हुए कह देते है कि बच्चे से कुछ मत बोलना. जिसकी क्षमता जितनी होगी, उतना अंक लेकर आएगा. मेरे और तुम्हारे बोलने से थोड़ी कुछ होगा.

गंगा - और हमारे यहां भी गीता के पापा ऐसा ही बोलते हैं.

विभा - हम सभी तो बोल चुके अब तुम्हारा क्या कहना है रंभा बहन.

रंभा - अरे हमारे यहां तो वर्षा के पापा दिन-रात उसके पीछे पड़े रहते हैं. कहते है कि अगर 85-90 प्रतिशत से कम लेकर आई तो दोबारा परीक्षा दिलवाउंगा. न उसे खेलने देती न कुछ देखने और न किसी से बात-चीत करने. मै बार-बार कहती रहती हूं कि बेचारी का बचपन मत छीनों. पर मानते ही नहीं.

रंभा -एक बज रहा है. बच्चों का प्री-बोर्ड परीक्षा का समय पूरा हो गया हैं पेपर बनाके आ रहे होंगे.

विभा -हां बहन! चलो अब चलते हैं. कल फिर बच्चों के स्कूल जाने के बाद बैठेंगे.

(सभी महिलाए अपने-अपने घर की ओर चले जाते हैं.)

<u>दृष्य-तीसरा</u>

(प्री बोर्ड के पेपर देने के बाद बच्चे अपने-अपने घर पहुंचते हैं सुनील भी अपना घर पहुंचता है और कपड़े बदलकर सीधा बिस्तर में सो जाता है.)

सुनील की मां - बेटा सुनील! क्या कर रहा है? आज प्रश्न पत्र का मिलान नहीं करोगे क्या?

सुनील -नहीं मां बाद में करूंगा. अभी थक गया हुं. थोड़ी देर आराम करना चाहता हूं.

मां - नहीं सुनील. पहले यहां आओ. मिलान करो. उसके बाद हाथ पैर धोओ, खाना खाओ फिर पढ़ो और रात में ही सीधा आराम करना है.

सुनील - (धीरे से आता है) मां आज के पेपर में मेरे चार प्रश्न छूट गये. बहुत कठिन आया था.

मां - प्रश्न छूट गये. कैसे छूट गये? इसी कारण बोलते है कि दिन-रात पढ़ने में लगा दो. पर मानते ही नहीं. जब देखो तब आराम करने की चिन्ता में लगे रहते हो.

सुनील -पढ़ता तो हुं मां! मैं अपने तरफ से गलती कहां करता हूं?

मां - गलती नहीं करते तो प्रश्न कैसे छूटता? मुकेश को नहीं जानते. पिछले साल दसवी बोर्ड में मेरिट में आया था. इस साल तुमको भी आना है. नही तो पता नहीं तुम्हारे पापा तुम्हारे साथ क्या करेंगे.

सुनील - (रोते हुए) - इसमें मै क्या कर सकता हुं मां. वह स्कूल में सरजी भी ऐसा ही बोल रहे थे और यहां घर में आप भी.

(सुनील दुःखी होने के कारण थोड़ा सा खाना खाकर उठ जाता है. कल भी पेपर था किन्तु अब उसका पढ़ने में मन नहीं लग रहा था.)

चौथा दृष्य

(अगले दिन पेपर के समय सुनील दिव्या और वर्षा अपने-अपने घरों से स्कूल जाने के लिए निकलते है. रास्ते में एक-दूसरे से मिलने पर अपने घर वालों की बातें एक-दूसरें से शेयर करते (बांटते) हुए दिव्या कहती है)

दिव्या -वर्षा! घर वाले मुझ पर जिस तरह का दबाव बना रहे हैं उससे तो मुझे कभी-कभी लगता है कि कुछ कर लूं.

वर्षा -अरे हां! मेरे घर वाले भी ऐसा कहा करते है. मेरा भी मन अब पढ़ाई से उचटने लगा है.

सुनील - हम तीनों के साथ ही ऐसा ही है. चलो तीनों ऐसा करते है कि यहां से कहीं दूर चले जाएं. न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी.

दिव्या - सुनील! तुम ठीक कह रहे हो और वर्षा क्या तुम भी चलोगी?

वर्षा -पर यहां से जाएंगे कहां?

सुनील -कहीं भीं पर अब ऐसे घर में नहीं रहेंगे जहां दिन-रात नम्बर लाने की बात होती हो.

(तीनों बच्चे पेपर के बाद घर न आकर बस स्टैण्ड में मिलने की बात पर सहमत होते है)

पंचम - दृष्य

तीनों बच्चो के माता-पिता चिन्ता में अपने बच्चों के सभी दोस्तों के घर जाकर पूछताछ करते है. रात के लगभग 10 बज चूके है किन्तु बच्चे अभी तक घर नहीं आए थे. सुनील के पिताजी श्री विशम्भरनाथ दिव्या के पिता श्री अनील कुमार व वर्षा के पिता श्री पिताम्बर दास एक साथ पास के पुलिस थाना जाते है.

पिताम्बर दास - दरोगा साहब! हम तीनों के बच्चे आज सुबह परीक्षा देने जाने के लिए स्कूल निकले थे किन्तु अभी तक नहीं आए है.

अनिल कुमार (बीच में) - ओर दरोगा साहब! उन तीनों में से दो लड़की है एक मेरी बेटी दिव्या और पिताम्बर दास की बेटी वर्षा.

दरोगा साहब -ठीक है. आप लोग चिन्ता मत करिए. तीनों बच्चों के नाम पता और फोटो दे दीजिए. बच्चे अभी जयादा दूर नहीं गए होंगे. मै दल भेज कर पता करवाता हुं और आप लोगों को खबर करूंगा. तब तक के लिए आप लोग घर चले जाईये.

पिताम्बरदास -जी सर! हमारा तो सब कुछ लूट गया. कृपा करके जल्दी खोजने का प्रयास कीजिए.

(दरोगा साहब के आश्वासन दिए जाने के बाद तीनों अपने घरों को लौट आते है)

षष्ठम दृष्य

(तीनों बच्चे प्री-बोर्ड परीक्षा को बीच में ही छोड़कर शहर जाने के लिए बस से निकल चूके थे. शहर में बस स्टैण्ड से वे रेल्वे स्टेशन पैदल ही पहुंच गए. वे जहां जाना चाहते थेवहां की रेल आने में विलम्ब थी. वे तीनों प्लेट फार्म में लगे कुर्सी पर बैठकर इन्तजार करने लगे. रात काफी हो चूकी थी. उसी समय दरोगा साहब की आवाज उन्हें सुनाई देता है)

दरोगा साहब - तुम तीनों बच्चे कहां जा रहे हो?

सुनील (डरते हुए) - जी! मामा के यहां.

दिव्या - जी! चाचा के यहां.

वर्षा (हकलाते हुए) - जी! चाचा के यहां. जी मामा के यहां.

(दरोगा साहब फोटो से पहचान चुके थे कि ये वही तीनों बच्चे है जो घर से भगे हुए थे)

सुनील, दिव्या, वर्षा (तीनों रोते हुए) - साहब हमें जाने दो! हम घर नहीं जाना चाहते.

(दरोगा साहब तीनों को प्रेम से समझाता है. दरोगा के समझाने पर बच्चे घर वापस आने को तैयार हो जाते है. दरोगा घर में बच्चों को उनके पालकों के सुपुर्द करके वापस थाना लौटता है.)

सातवां दृष्य

(प्री बोर्ड की परीक्षा समाप्त हो चूकी है. तीनों बच्चे शेश पेपर देने स्कूल नहीं गए थे. ईधर यह बात पूरी तरफ फैल चुकी थी कि परीक्षा परिणाम के भय से तीन बच्चे घर से भाग गए थे. शाला का प्राचार्य श्रीमती शकुन्तला देशमुख इस बात से चिंतित थी कि वार्षिक परीक्षा के दौरान भी ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो. अतः उन्होने सभी बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों की बैठक बुलाना निश्चित की और स्वयं शहर के मनोचिकित्सक डा. प्रकाश राय से मिलने पहुंची)

प्राचार्य - डा. साहब! क्या मैं अंदर आ सकती हूं.

डा. साहब - हां हां मैडम! जरूर! आपका स्वागत है.

प्राचार्य (बैठते हुए) - वार्षिक परीक्षा को ध्यान में रखते हुए मै चाहती हुं कि पिछले वर्ष की भांति आप इस बार भी बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों का मार्गदर्षन करें. विशेशकर बोर्ड परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले बच्चों का.

डा. साहब - क्यों नहीं मैडम! जरूर! यह तो हमारा कर्तव्य है.

प्राचार्य -डा. साहब तो मै कल का समय निश्चित कर दुं.

डा. साहब -हां -हां बिल्कुल.

प्राचार्य -तो अब अनुमति दीजिए.

(अभिवादन पश्चात कमरे से बाहर निकल जाती है)

<u>आठवां दृष्य</u>

(शा.उ.मा.शा. गोवर्धन नगर का सभा कक्ष सभी बच्चों उनके अभिभावकों, शिक्षकों से भरा हुआ था. डाॅ. प्रकाश राय, संस्था के प्राचार्य श्रीमती शकुन्तला देशमुख के साथ सभा कक्ष में प्रवेश करते है. सभी खड़े होकर अभिवादन करते है. औपचारिकता पश्चात् प्राचार्य व्दारा डा. साहब को सम्बोधन के लिए माइक दिया जाता है)

डा. साहब (धन्यवाद. देते हुए) - आज यहां पर उपस्थित सभी सम्मानित अभिभावकगण एवं प्यारे बच्चों! विगत वर्षो से मेरे व्दारा यहां पर परीक्षा का समय क्या ले निर्णय विषय पर लगातार कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है. उसके बाद भी कुछ बच्चे परीक्षा के तनाव से अपना घर छोड़कर कहीं और जाने को तैयार हो जाते है.

विशम्भर राय - डा. साहब! आखिर बच्चे ऐसा करते क्यों है?

डा. साहब - राय जी! आपका प्रश्न बहुत अच्छा है कि आखिर बच्चे घर छोड़ने, पढ़ाई छोड़ने या कभी-कभी आत्महत्या जैसे कदम क्यों उठा लेते हैं. अब तक के अध्ययन का निष्कर्ष यह कहता है कि इसके प्रमुख रूप से दो कारण होते है अत्यधिक अपेक्षा, अनावश्यक तुलना.

अनिल - अत्यधिक अपेक्षा और तुलना से आपका क्या आशय है डा. साहब.

डा. साहब -अब मेरी बातों को ध्यान से सुनिए एक बच्चे को सबसे ज्यादा माता-पिता और गुरू ही जानता और समझता है क्योंकि बच्चे का अधिकांश समय इन्हीं के नजर के सामने व्यतीत होता हैं. पर अफसोस के साथ कहना पड़ रहा हे कि सब कुछ जानते और समझते हुए भी माता-पिता और गुरूजनों व्दारा बच्चों से अत्यधिक अपेक्षा की जाती है जो तनाव का कारण बनता है.

विशम्भर राय -और डा. साहब आप तुलना करने को भी तनाव का कारण बतला रहे है जबकि माता पिता या गुरूजन बच्चों की तुलना प्रोत्साहन देने के लिए करते है.

डा. साहब - राय जी! आपका यह कहना बिल्कुल गलत है. हम जानते है कि हर बच्चा अपने आप में अलग होता है जिसे हम वैयक्तिक भिन्नता कहते है. फिर दो बच्चे समान कैसे हो सकते है?

अनिल -तो हमें बच्चों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए जिससे वे आगे बढ़ सके?

डा. साहब - हमें बच्चों की मन की आवाज सूननी चाहिए अर्थात् बच्चों को सीखने की जिस विधा में रुचि हो उसे सीखने देना चाहिए. अतयधिक अपेक्षा और दूसरे बच्चे से तुलना तो भूलकर न करें.

प्राचार्य - और डा. साहब शाला स्तर पर हम और क्या कर सकते है?

डा. साहब - प्राचार्य मैडम शाला स्तर पर आप सभी कक्षाओं से सक्रिय बच्चों का चयन कर ''निक्की की टोली'' बनाईये. यह टोली ऐसे बच्चों से चर्चा करेगी जो किसी भी कारण से तनाव में हो विशेशकर परीक्षा के दिनों में. फिर अपने से बड़ों के पास टोली चर्चा करके समस्या समाधान की दिशा में आगे बढ़ेगी.

प्राचार्य -(धन्यवाद देते हुए) - डा. साहब/ यहां आकर हम सभी लोगों की मार्गदर्शन करने के लिए आपका सादर अभिनंदन. (डा. साहब अभिवादन स्वीकार कर जाने के लिए रवाना होते है. डा. के साथ-साथ सभी लोग अपने अपने गंतव्य की ओर चले जाते हैं. सभा विसर्जित होती है.)

<u>नवम दृष्य</u>

(वार्षिक परीक्षा का समय है. सुनील, दिव्या और वर्षा के साथ सभी बच्चे प्रसन्न मुद्रा में पेपर दे रहे है. उनके माता-पिता भी अपने बच्चों को मन से सहयोग कर रहे है. गणित का अंतिम पेपर देने के बाद सुनील, दिव्या और वर्षा रास्ते में बात कर रहे है)

सुनील -वर्षा तुम्हारा पेपर कैसे बना?

वर्षा - ठीक बना है और तुम्हारा?

सुनील -मेरा भी! और दिव्या तुम कुछ क्यों नहीं बोल रही हो?

दिव्या (हंसते हुए) - मेरा पेपर तुम दोनो से खराब बना है.

सुनील और वर्षा (एक साथ हंसते हुए) - दिव्या ये देखो तुम अब फिर से तुलना कर रही हो.

(सुनील, वर्षा और दिव्या तीनों जोर से हंसते हुए अपने अपने घरों की ओर चले जाते है.)

8

शोषण

प्रथम दृष्य

(प्रमिला पड़ोस में रहने वाले मनोहर लाल के पास ट्यूशन पढ़ने जाती है. आज जब वह ट्यूशन पढ़कर वापस आयी तो अपनी मां से बिना बात किए सीधा कमरे में जाकर बिस्तर पर सो गई. उसकी मां दस मिनट बाद आवाज देकर बुलाती है)

मा -अरी ओ प्रमिला! चलो जल्दी से हांथ-मूंह धो लो और खाना खा लो.

प्रमिला-नहीं मां! आज मै नहीं खाउंगी.

मां - क्यों नहीं खाओगी? स्कूल से जब आई तब तो बोल रही थी कि बड़े जोर की भूख लगी है और अब क्या हो गया.

प्रमिला - नही मां. पेट में हल्का-हल्का दर्द हो रहा है. ठीक होने पर खा लूंगी.

मां - तो चलो ईधर आओ! घर के काम में कुछ हांथ बटाओ.

प्रमिला -नहीं मां! आज तुम अकेले ही कर लो! मुझे अच्छा नहीं लग रहा है.

मां - अरे अब बतलाओगी भी कि क्या हुआ. शाम तक तो ठीक थी.

प्रमिला - मां अब मै सो रही हुं.

(प्रमिला की मां बड़बड़ाते हुए अपने काम में लग जाती है. ईधर प्रमिला बिस्तर पर सोने की कोशिश कर रही थी किन्तु नींद आंखों से दूर ही रही.)

व्दितीय दृष्य

(पूर्व माध्य. शाला जवाहर नगर में कक्षाएं लगी हुई हैं.सभी छात्र अपने अपने जगह पर बैठकर शिक्षक के आने की प्रतिक्षा कर रहे है. किन्तु आज प्रमिला अपने जगह पर न बैठकर सबसे पीछे कोने में रखे बैंच पर बैठी है. मैडम अनुराधा राय कक्षा में आती है. बच्चे उठकर अभिवादन करते है. प्रमिला अपने जगह पर ही बैठे रहती है. उसे देखकर मैडम कहती है.)

मैडम - क्यों प्रमिला! सभी बच्चे खड़े हुए. क्या तुम्हें पता नहीं चला?

प्रमिला चुप

मैडम - अरे मै तुमसे पुछ रही हुं.

प्रमिला - जी मैडम! आज तबियत ठीक नहीं लग रही है.

मैडम (बात बदलते हुए) - अच्छा बच्चों आज मै तुम लोगों को पास्को एक्ट के बारे में बताउंगी.

सुनयना -मैडम! ये पास्को एक्ट क्या है और इसका हमसे क्या संबंध है?

मैडम - देखो बच्चों ये पास्को एक्ट बच्चों को यौन-शोषण से बचाने के लिए सरकार व्दारा बनाया गया कानून है.

प्रीति - मैडम अब ये ''यौन-शोषण'' क्या है?

मैडम - देखो बच्चों! यौन-शोषण के अंतर्गत बहुत सारी बातें आती है. जैसे गलत ईरादे से शरीर के अंगो को छूना, गलत-गलत ईशारे करना, बच्चों के सामने अश्लील चित्र देखना या दिखाना और सबसे बड़ी बात लगातार शारीरिक शोषण करना है.

कुसुम - मैडम! क्या यह सारी चीजें केवल लड़कियों के साथ ही होता है.

मैडम - नहीं कुसुम! यौन-शोषण से लड़के और लड़कियां दोनो ही समान रूप से प्रभावित होते हैं इसीलिए ''पास्को-एक्ट'' में लड़के या लड़की शब्द के बदले बच्चे शब्द रखा गया है.

कुसुम - मैडम! ये पास्को एक्ट से क्या होता हे?

मैडम - पास्को का अर्थ है यौन-शोषण के विरूध्द सुरक्षा. इससे बच्चों के शोषण करने वाले को पुलिस तुरन्त गिरफ्तार करती है और उसकी जमानत भी नहीं होती.

(पिरिएड की घंटी लग जाने पर बचे हुए विषय-वस्तु को कल बतलाने की बात कहकर मैडम कक्षा से बाहर निकल जाती है.)

<u>तृतीय दृष्य</u>

(शाम को छुट्टी के बाद प्रमिला, कुसुम, सुनयना और प्रीति साथ-साथ अपने-अपने घरों की ओर आ रहे हैं. रास्ते में कुसुम, सुनयना और प्रीति पास्को-एक्ट और यौन शोषण के बारे में ही चर्चा कर रहे है. प्रमिला को चुप देखकर प्रीति पूछती है.)

प्रीति - क्यों प्रमिला! आज मै सुबह से देख रही हुं तुम कुछ बोल ही नहीं रहे हो और जाकर पीछे भी बैठ गई थी.

प्रमिला - कल से मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है.

सुनयना - क्यों अच्छा नहीं लग रहा है?

प्रमिला - नहीं बतला सकती.

कुसुम - ठीक है चलो न बतलाओ. शाम को ट्यूशन में तो मिलोगी न.

प्रमिला - चुप रहती है.

(घर आने पर सभी अपने-अपने घरों के अंदर चले जाते हैं)

चतुर्थ दृष्य

(स्कूल से आने के बाद प्रमिला बस्ता एक किनारे पर रखकर बिना कपड़ा बदले फिर से बिस्तर पर सो जाती है. उसे ऐसा करते देखकर उसकी मां कहती है)

मां -प्रमिला! यह क्या तरीका है. न हांथ-पैर धोए न कपड़े बदले न चाय नाश्ता किया और सीधे जाकर सो गई.

(प्रमिला चुपचाप रही)

मां. - अरे मै तुमसे बात कर रही हुं. किसी भूत-प्रेत से नहीं. आज ट्यूशन नहीं जाओगी क्या? मनोहर कहने आया था कि प्रमिला को आज जल्दी भेज देना.

प्रमिला (चिढ़ते हुए) नहीं मां मै अब से कोई ट्यूशन पढ़ने नहीं जाउंगी.

मां - ट्यूशन पढ़ने नहीं जाउंगी. यह क्या बात हुई? पहले खूद ही जिद्द करके ट्यूशन लगवाई ओर अब नहीं जाउंगी की जिद्द पर बैठ गई.

प्रमिला - नहीं जाउंगी तो नहीं जाउंगी. मां अब तुम जिद मत करो.

मां - मत जाओ न! मेरा क्या जाएगा. परीक्षा में कम अंक पाओगी तब हमें दोष मत देना कि मां-बाप ने ठीक से पढ़ाया नहीं.

(प्रमिला मां की बातों को चुप-चाप सुनती रही. माु भी बड़बड़ाते हुए काम में लग गई. धीरे-धीरे अंधेरा बढ़ते गया और प्रमिला की आंख भी लग गई.)

पंचम दृष्य

(कक्षा में सभी बच्चे उत्सुकता के साथ बैठे हुए है. प्रमिला आज भी पीछे के बेंच पर ही बैठी हुई है. राय मैडम कक्षा में आ चूकी है. और कल के बात को बढ़ाते हुए कहती है)

मैडम - हां तो बच्चों! कल हम एक महत्वपूर्ण बात पर चर्चा कर रहे थे. कोई बतलाएगा कि हमारी चर्चा कहां तक पहुंची थी.

कुसुम - जी मैडम! कल आप ''यौन शोषण'' और ''पास्को एक्ट'' के बारे में बतला रही थी. पर मैडम इसमे मेरा एक प्रश्न है

मैडम - हां हां कुसुम पुछो.

कुसुम -मैडम! हम कैसे जानेंगे कि किसी बच्चे का यौन शोषण हो रहा है?

मैडम - कुसुम! तुमने बहुत ही अच्छा प्रश्न किया है और आज मै तुम लोगों को इसी के बारे में ही बतलाने जा रही हुं.

प्रीति - और हां मैडम! जरा अच्छे से बतलाना ताकि हम सभी सही ढंग से समझ सकें.

मैडम - तो बच्चो सुनो - ऐसे सभी बच्चे जिनका यौन शोषण होते रहता है वे बहुत ही डरे हुए, उदास, दुःखी, चिड़चिड़े और शांत रहने लगते है. किसी से बात नहीं करते और अकेले रहना पसन्द करते है. यही उनकी मुख्य पहचान है.

सुनयना - पर मैडम! ऐसे बच्चे अपने साथ जो कुछ हो रहा है उसके संबंध में अपने माता-पिता, भाई-बहन, सहेली-दोस्त और शिक्षकों से बतलाते क्यों नहीं?

मैडम - क्योंकि ऐसे बच्चों को शोषण करने वाले व्यक्ति के व्दारा बतलाने पर जान से मारने की धमकी दिया गया होता है और इसके बाद भी अगर कोई बच्चा अपने घर में बतलाता भी है तो बदनामी या शर्मिन्दगी के डर से बात को दबा दिया जाता है.

कुसुम -तो मैडम ऐसे में बच्चों को फिर क्या करना चाहिए?

मैडम - देखो बच्चों! अगर किसी बच्चे का यौन-शोषण होता है तब सबसे पहले उन्हें यह बात अपने माता-पिता से कहनी चाहिए. मानलो माता-पिता के व्दारा इस बात को दबाने का प्रयास किया जाए उस स्थिति में उसे अपने दोस्तों, सहेलियों या शिक्षकों से कहनी चाहिए.

सुनयना - पर मैडम! यहां बात यह है कि जो बच्चे अपनी बात अपने माता-पिता या अन्य से भी न कहे ऐसे बच्चों के लिए क्या कर सकते है?

मैडम - हां सुनयना! ऐसे बच्चों के लिए हम स्कूल में एक ''पास्को-बाक्स'' बनाएंगे. वे बच्चे जिनका यौन-शोषण हो रहा है वे एक छोटे से कागज में लिखकर इस बाक्स में डाल देंगे और प्रतिदिन ''निक्की की टोली'' में शामिल बच्चे इसे खोलकर देखेंगे और अपने शिक्षक को बतलाएंगे.

कुसुम -मैडम! यह निक्की की टोली क्या है?

मैडम -''निक्की की टोली'' बच्चों का समूह है जो सभी बच्चों के व्यवहार व समस्याओं का अवलोकन कर निराकरण का प्रयास करेंगे और हम अपने स्कूल के लिए ''निक्की की टोली'' और पास्को - बाक्स'' आज ही बनाएंगे.

(सभी बच्चे मैडम की बात सुनकर, प्रसन्न होकर ताली बजाते हैं. और निक्की की टोली व पास्को बाक्स बनाने में जूट जाते है.)

<u>षष्ठम-दृष्य</u>

(प्रमिला आज भी ट्यूशन नहीं गई. मां बार-बार बोलती रही. प्रमिला बिस्तर में सोए-सोए काफी देर तक सोचती रहीं. अंत में उठकर बस्ते से पेन और कागज निकालकर लिखती हैं. अगले दिन वह अकेले ही स्कूल के लिए निकल जाती है और पास्को बाक्स में अपने लिखे हुए कागज को डाल देती हैं.कक्षा लगती हैं निक्की की टोली बाक्स खोलती है और उसमें वह पत्र मिलता है जिसे प्रमिला ने लिखा था. पत्र के साथ टोली मैडम के पास जाते है)

निक्की की टोली - मैडम मैडम-मैडम देखिए तो हमें पासको बाक्स में प्रमिला का लिखा यह पत्र मिला है.

(राय मैडम पत्र को पढ़ती हैं. इसमें प्रमिला ने वह सारी बातें लिखी थी जो मनोहर ने ट्यूशन पढ़ाते समय उसके साथ किया था)

मैडम - हां. अब समझी कि प्रमिला कक्षा में पीछे जाकर क्यों बैठती थी.

निक्की की टोली -और हां मैडम वह हम लोगों से भी कुछ नहीं बोलती थी.

(राय मैडम निक्की की टोली से कहती है कि वे प्रमिला को चूपचाप बुलाकर लाए. प्रमिला आती है और पूछने पर रोते हुए सारी बात बतला देती है)

मैडम -अच्छा बच्चो! सभी मेरे साथ प्रमिला के घर चलो.

(मैडम "निक्की की टोली" प्रमिला के घर की ओर जाने लगते हैं.)

सातवां - दृष्य

(मैडम के साथ निक्की की टोली प्रमिला के घर पहुंचते हैं. घर में प्रमिला की मां और पिता जी श्री किशोर अग्रवाल से सारी बातों पर चर्चा होती है. अंत में सभी पास के पुलिस चौकी पर रिपोर्ट लिखाने जाने पर सहमत होते है. थाने में रिपोर्ट लिखने के बाद दरोगा हनुमान सिंह कहता है)

दरोगा - आप सभी की जितनी भी प्रशंसा किया जाए वह कम ही है और विशेषकर प्रमिला की. उन्होने अपना डर तोड़ा और पास्को बाक्स में पत्र लिखकर डाल दिया. मै आप सभी को विश्वास दिलाता हुं कि मनोहर के विरूध्द ऐसा केस बनाउंगा कि वह कभी भी किसी बच्चे की तरफ आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं करेगा.

(सभी लोग दरोगा का धन्यवाद कर वहां से निकलते हैं. ईधर दरोगा अपने दल के साथ मनोहर को गिरफ्तार करने निकलता है. मनोहर को गिरफ्तार करके हवालात में बंद कर दिया जाता है)

आठवां दृष्य

(अगले दिन प्रमिला खूद ही अपने सहेलियों कुसुम, सुनयना और प्रीति को स्कूल जाने के लिए बुलाने जाती है. स्कूल जाते समय रास्ते में)

प्रीति -क्यों री प्रमिला! तुमने हमसे भी कुछ नहीं बतलाई?

प्रमिला -क्या करूं बहन! मै बहुत डर गई थी. वो तो अच्छा हुआ कि राय मैडम ने कक्षा में सारी बातों के संबंध मे चर्चा की और मुझें हिम्मत मिली.

सुनन्दा -अब तो ऐसा नहीं करोगी ना!

प्रमिला - अब मै किसी से डरूंगी ही नहीं. और हां सुनयना मुझे भी अपने ''निक्की की टोली'' में शामिल करो न.

सुनन्दा - क्यों नहीं प्रमिला! तुम अभी से ही निक्की की टोली में शामिल हो गई हो.

(सभी बच्चे कक्षा में पहुंचकर अपने स्थानों पर बैठते है. प्रमिला आज अपने पुरानी जगह सामने की सीट पर बैठती है. राय मैडम कक्षा में आती है. प्रमिला को सामने बैठे देखकर कहती है)

राय मैडम - तुम्हें फिर से सामने बैठे देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई प्रमिला.

प्रमिला - जी मैडम! यह सब आपकी और ''निक्की की टोली'' व्दारा दी गई हिम्मत का परिणाम है.

राय मैडम - और तुम्हारी हिम्मत प्रमिला.

प्रमिला - (हंसते हुए) जी मेरी भी.

(सभी बच्चे मुस्कुराने लगतते है. मैडम अपना विषय पढाना आरंभ करती है.)

9

पौष्टिक भोजन

प्रथम दृष्य

(आज पूर्व माध्य.शाला गांधी नगर में स्वास्थ्य शिविर लगा हुआ है. स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी डाक्टर, शिक्षक और बच्चे सभी उपस्थित है)

डा. विक्रम राठौर - बच्चों आपको याद होगा कि विगत दो वर्षो से हम इस शाला में स्वास्थ्य शिविर लगा रहे है.

सुरेश (बीच में बोलते हुए) - हां डाक्टर साहब! और आप पहचान करते हैं कि कौन-कौन बच्चा शारीरिक रूप से कमजोर है.

डा. राठौर - अच्छा कोई ये बतला सकता है कि पिछले साल हमने किन-किन बच्चों की पहचान की थी.

सुनंदा - हां सर! पिछले साल आपने 5 लड़की ओर दो लड़कों को शारीरिक रूप से कमजोर पाया था.

डा. राठौर - अच्छा वे बच्चे कौन-कौन है?

सुनंदा - जी सर! उनका नाम - नीतू, रूकमणी, परविना, अंजलि, संतू, विपिन और चमन है.

डा. राठौर - क्या वे सभी बच्चे आज के शिविर में यहां पर उपस्थित है?

सुरेश - जी सर! वे सभी यहीं पर है.

(डा. राठौर उन बच्चों को अपने नजदीक बुलाता है. बच्चे पास आकर खड़े हो जाते है. डा. राठौर चेक-अप करने के बाद कहता है)

डा. राठौर - जी! तुम लोग अब भी वैसे के वैसे ही हो जैसे पिछले वर्ष थे. क्यों ठीक से खाना नही खाते. (सभी बच्चे चुप रहे)

डा. राठौर - इस शिविर में उपस्थित सभी बच्चे अब मै जो बतलाने जा रहा हुं उसे ध्यान से सुनेंगे. देखो बच्चों यह जो 11 से 18 वर्ष का उमर होती है वह सभी बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास की उम्र होती है. सभी बच्चे सही ढंग से विकास करें इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों को भरपुर पौष्टिक भोजन मिले.

संजय - सर! यह पौष्टिक भोजन क्या है?

डा. राठौर - क्यों तुम पिछले वर्ष के शिविर में नहीं आए थे क्या? मैं पिछले वर्ष बतलाया था कि पौष्टिक भोजन क्या है और यह हमें किन-किन चीजों से मिल सकता है. मै अब एक बार पुनः इस पर विस्तृत जानकारी दे रहा हूं. आप सभी ध्यान से सुनना.

(डा. राठौर पौष्टिक भोजन उसके स्रोत और शारीरिक, मानसिक विकास में उपयोगिता पर प्रकाश जलने के बाद बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण करने लगे.)

<u>व्दितीय दृष्य</u>

(रात्रि में भोजन के समय नीतू अपने पिताजी और भाई आकाश के साथ खाने पर बैठी हुई है. मां सभी को खाना परोस रही है. खाते-खाते नीतू अपनी मां से बोली)

नीतू - मां! आज हमारे स्कूल में फिर से स्वास्थ्य शिविर लगा था. डाक्टर साहब बोल रहे थे कि मेरे स्वास्थ्य में शारीरिक विकास में कोई भी प्रगति नहीं हुई है. अच्छा खाना खाने के लिए बोल रहे थे.

मां - अरे! डाक्टर जो बोलता है, उसी के अनुसार तो खाना खाती हो. इससे ज्यादा और क्या खा सकती हो?

नीतू - नहीं मां, डाक्टर साहब का कहना है कि ज्यादा खाने से अच्छा है पौष्टिक भोजन खाएंं जैसे दूध, घी, अण्डा, मछली, हरी-हरी सब्जी इत्यादि.

मां - अरे! ये सब खाओगी तो मोटी तो हो जाओगी. फिर कौन तुमसे शादी करेगा. ये सब तो तुम अपने भाई आकाश को ही खाने दो.

नीतू - क्यों मां! आकाश खाएगा तो क्या वह मोटा नहीं हो जाएगा. फिर उससे कौन शादी करेगा.

मां - अरे! वह लड़का है. उसे आगे चलकर घर का बाहर, भीतर दोनो जगह का काम करना होगा, हमारा वंश बढ़ाएगा. इसलिए उसके लिए अच्छा-अच्छा खाना जरूरी है और तुम्हें क्या?

नीतू - और मुझे क्या मां? बतलाओ मुझे क्या? यही न कि मुझे शादी करके घर गृहस्थी चलानी हैं पर सोचो इन सभी के लिए भी तो शारीरिक और मानसिक विकास जरूरी है, जो पौष्टिक भोजन से ही मिलता है.

मां -देख रही हुं पिछले साल जब से शिविर की बात सुनकर आई है. खाना खाने में बहुत नखरा दिखाती है.

नीतू - यह नखरा नहीं जरूरत है मां. जितना और जिन चीजों के लिए आकाश को पौष्टिक भोजन की आवश्यकता है उतना ही मुझे भी.

(मां बड़बड़ाते बड़बड़ाते खाना परोसती है.)

मां - ठीक है ठीक है! जल्दी-जल्दी खाओ. घर का काम भी पुरा करना है.

(नीतू खाकर उठती है. घर का काम निपटाती है और फिर सोने चली जाती है)

<u>तृतीय दृष्य</u>

(अगले दिन नीतू समय पर स्कूल जाने के लिए निकलती है. प्रार्थना के बाद बच्चे कक्षा में बैठते है. कक्षा आठवी की कक्षा शिक्षिका श्रीमती रमा कश्यप प्रवेश करती है. बच्चे खड़े होकर अभिवादन करते है.)

कश्यप मैडम - (बच्चों को बैठाते हुए) - बच्चों आप सभी कल के स्वास्थ्य शिविर में उपस्थित थे.

सभी बच्चे (एक साथ) जी मैडम!

कश्यप मैडम - देखा बच्चों! आप लोगों के जाने के बाद डा. साहब हम लोगों से ऐसे बच्चे जो शारीरिक दृष्टि से कमजोर है उनके सम्बंध में और कुछ विशेश बातें बतलाये हैं.

सुनंदा - और क्या बतलाएं है मैडम.

कश्यप मैडम -यही की हमारे घरों में लड़का और लड़की में खान-पान पर किए जाने वाले भेद-भाव के कारण यह परिस्थिति ज्यादा निर्मित होती है.

सुनंदा - मैडम! क्या ऐसा भी होता है? किसी घर में लड़के को अलग और लड़कियों को अलग खाना.

कश्यप मैडम - हा सुनंदा! ऐसा भी होता है. बहुत से मा-बाप यह सोंच रखते है कि लड़कों से ही यह संसार चलता है और अपने इसी सोंच के कारण वे खान-पान में भी लड़के लड़की में भेदभाव करते हैं.

सुनंदा - तो मैडम! इसका मतलब है कि हमारे स्कूल के जो लड़कियां कमजोर पाई गई है वे सभी इस भेदभाव के कारण है.

कश्यप मैडम - हा सुनंदा! तुम बिल्कुल ठीक समझ रही हो.

सुनंदा - तो मैडम! इसके रोकने के लिए हमें कुछ न कुछ जरूर करना चाहिए और आप ही बतलाईये कि हम क्या-क्या कर सकते है.

कश्यप मैडम- सुनंदा! इस प्रकार के भेदभाव को रोकने के लिए हम अपने शाला की कुछ लड़कियों का समूह बनाएंगे जो निक्की टोली कहलाएगा और इसमें उन लड़कियों को अनिवार्य रूप से शामिल करंगे जो कमजोर लड़की के रूप में चिन्हांकित है.

सभी बच्चे (एक साथ) - हां मैडम! जरूर बनाईये. हम सब आपके साथ है. यह भदभाव हमारे घरो से जल्दी से जल्दी दूर होना चाहिए.

(सभी बच्चे ताली बजाते है.)

चतुर्थ दृष्य

(गांव के चौक में निक्की की टोली में शामिल लड़कियों के व्दारा पौष्टिक भोजन बंद करो बच्चों का शोषण विषय पर प्रहसन किए जाने की तैयारी हैं. गांव के सभी लोग चौक में उपस्थित है. नीतू की मां सुमित्रा भी प्रहसन देखने आई है. प्रहसन शुरू होता है. इसमें भाग लेने बच्चे सभी पात्रों का अभिनय करते है.)

डाक्टर - अरे! इस बच्चे को क्या हुआ?

मां - देखिए न डाक्टर साहब! ये लड़की थोड़ी दूर भी चलती है तो हांफ जाती है और दिन में इसे एक बार चक्कर भी आ जाता है.

डाक्टर (चेक-अप करने के बाद) - देखो! बीमारी तो कुछ नहीं है. केवल खाने पीने की कमजोरी है.

(उमा धीरे-धीरे आंखे खोलकर बैठ जाती है.)(

डाक्टर - - क्यों बेटी उमा! ठीक से खाना क्यों नहीं खाती? क्या खाना अच्छा नहीं लगता.

उमा - अच्छा खाना किसे अच्छा नहीं लगेगा सर.

(उमा अपनी मां की ओर देखने लगती है. डा. उमा की नजर से पहचान जाता है कि असली बात क्या है)

डाक्टर - - देखा उमा की मां! मै बहुत से माता-पिता को यह समझा चुका हुं कि खाने के लिए लड़के और लड़की में भेदभाव करना किसी भी दृष्टि से उचित नही है. आखिर दोनों ही हमारे बच्चे है पौष्टिक भोजन से ही शरीर और मन का विकास होता है जो उन्हें भविष्य में जीवन निर्वहन करने में सक्षम बनाता है.

मां- जी डाक्टर साहब! अब से ऐसा बिल्कुल नहीं होगा

(निक्की की टोली 'उपस्थित लोगों से निवेदन करते है कि किसी भी घर में खाने के आधार पर लड़का लड़की में भेदभाव न किया जाए)

सभी लोग - एक साथ ताली बजाकर टोली का स्वागत करते है.

पंचम दृष्य

(नीतू के घर में सभी लोग खाने पर बैठे हुए है. मां सभी को प्रेम से खाना परोस रही है. खाना देते देते मां बोली)

मां - बेटी नीतू! तू जब सब जानती थी तो पहले क्यों नहीं बोली?

नीतू - मैं तो अप्रत्यक्ष रूप से रोज बोलती थी मां.

मां - देखो बेटी! पहले जो हुआ अब उसकी पुनरावृत्ति नहीं होगी. फिर भी तुमको ऐसा लगे कि तुम्हारे और आकाश में किसी प्रकार का भेदभाव हो रहा है तो बिना किसी हिचक के कह देना.

नीतू - जी मां! ऐसी कोई बात नहीं होगी.

मां - (बात बदलते हुए) - देखो बेटी आज मै तुम्हारे लिए क्या क्या बनाई हूँ. ये हरी सब्जी, घी, अण्डा सभी है जितना मन आए खा लेना.

नीतू - और मां कही ये सब खाने से मोटी हो गई तो.

मां - अरे मोटी हो जाएगी तो क्या होगा.

नीतू - फिर मुझसे शादी कौन करेगा.

मां (हंसते हुए) - तू भी जो पाती है बोलते रहती है.

(नीतू और मां की बातें सुनकर सभी लोग खिल-खिलाकर हंसने लगते हैं.)

10

<u>सुन्दर मन</u>

<u>प्रथम दृष्य</u>

(सुबह का दस बज रहा है. सुनीता स्कूल जाने की तैयारी कर रही है. सुनीता की मां कौशिल्या घर का काम करते करते बड़बड़ा रही है.)

कौशिल्या - पता नहीं इस लड़की को कब समझ आएगी. जिस समय देखो दर्पण के सामने ही बैठे रहती है. स्कूल का समय हो गया है पर दर्पण के सामने से उठने का नाम नहीं ले रही है.

मां - (जोर से आवाज लगाते हुए) अरे ओ सुनीता! अब हो गया सजना-संवरना कि अभी भी कुछ बांकी है.

सुनीता - जी मां! बस अभी आती हूं.

कौशिल्या -कब से तो बोल रही हो आती हुं, आती हुं. पर उठने का नाम नहीं लेती. स्कूल जाना है कि नहीं.

सुनीता - जी मां जाउंगी.

(दर्पण के पास से उठती है. बस्ता पकड़ते हुए मां से कहती है)

सुनीता - अच्छा मां! स्कूल जाने के लिए देर हो गई है. मै खाना घर आकर शाम को खा लूंगी. प्रार्थना के बाद जाउंगी तो मैडम डाटेगी.

कौशिल्या - इसी बात को पहले सोंच लेती. रोज-रोज स्कूल जाने में देरी करोगी तो मैडम डांटेगी नही तो क्या आरती उतारेगी.

सुनीता - मां! तो क्या मै बिना तैयार हुए ही स्कूल जाया करूं.

कौशिल्या - एक तुम ही बस तो स्कूल नहीं जाती. सुमन, गुंजन, वंदना, प्रियंका और न जाने कितनी लड़कियां और लड़के स्कूल जाते है पर तुम्हारे जैसे देरी नहीं करते.

सुनीता - अब बस भी करो मां! मुझे सजना-संवरना अच्छा लगता है उनके जैसा थोड़ी कि जैसा पाओ, वैसा ही स्कूल चले जाओ.

कौशिल्या - अब बात ही करती रहोगी कि स्कूल भी जाओगी. वैसे ही पहले से देरी हो गई है और अब तर्क वितर्क करके और देर कर रही है.

(मां की बात सुनकर सुनीता जल्दी जल्दी अकेले ही स्कूल जाने के लिए निकलती है.)

<u>व्दितीय दृष्य</u>

(लगभग 11 बज चूका है. स्कूल लग गई है. सिंह मैडम कक्षा 8वीं में अपना विषय गणित का पिरिएड ले रही है. सुनीता कक्षा के बाहर खड़ा होकर बोलती है)

सुनीता - मै आई कम इन मैडम?

मैडम -(नाराजगी से देखते हुए) सुनीता! तुमको कितने बार बोल चुकी हूं कि स्कूल समय पर आया करो. एक तो देर से आती हो और पूरे कक्षा को डिस्टर्ब करती हो.

सुनीता - सारी मैडम.

मैडम - रोज सारी बोलती हो. सारी कहने का मतलब भी जानती हो.

सुनीता - जी मैडम.

मैडम -(अंदर आने का इशारा करती है) क्या जी मैडम! अगर कल से देर से आई तो कक्षा के अंदर घुसने भी नहीं दुंगी.

(सुनीता चूपचाप अपनी जगह पर बैठ जाती है. पिरिएड समाप्त होने पर सिंह मैडम कक्षा से बाहर चली जाती है.)

<u>तृतीय दृष्य</u>

(मैडम के चले जाने के बाद सुनीता, वीणा के पास जाती है और जबरदस्ती खिसकाते हुए उसके सीट पर बैठ जाती है. बैठने के बाद सुनीता, वीणा से कहती है.)

सुनीता -ऐ वीणा! मुझे अपना गणित की कॉपी देना.

वीणा -बाद में ले लेना बहन. अभी मै थोड़ा सा लिखुंगी. आज का दिया हुआ काम बाकी है.

सुनीता - ऐ सीधी देती है कि जबरदस्ती निकाल लूं.

वीणा (कापी निकालते हुए) - ऐ लो बहन! पर यहीं अपना काम करके मुझे वापस कर दे. फिर मैं भी करूंगी.

सुनीता - नहीं! मै तो घर ले जाउंगी और ईधर उधर करेगी तो यहीं फाड़ दूंगी.

वीणा - ये लो फाड़ना मत.

सुनीता (लेते हुए) - वाह! कापी को तो इतना सजा के रखी है जैसे किसी खजाने में रखेगी. जितना कापी को सजा के रखती है उतना अपने शरीर और चेहरे पर भी ध्यान दे दिया कर. चिपड़ी कहीं की.

(सुनीता की बातों को सुनकर अगल-बगल के बच्चे जोर-जोर से हंसने लगे, वीणा सिर नीचे करके सुबकने लगी)

चतुर्थ दृष्य

(स्कूल से छुट्टी होने के बाद वीणा घर आती है. घर पहुंचते ही मां को देखकर रोने लगती है. मां वीणा को नजदीक बैठाकर पूछती है)

मां - अरे वीणा! स्कूल में कुछ हुआ क्या?

वीणा - हां मां! देखो न आज सुनीता मुझे फिर चिढ़ा रही थी और कुछ बच्चे हंस रहे थे.

मां - वीणा बेटी! तो क्या हुआ जो चिढ़ाते है उन्हें चिढ़ाने दो. उनकी तरफ बिल्कुल ध्यान मत देना. यह तो मै तुमसे कई बार बोल चुकी हूं.

वीणा - पर मां! आखिर भगवान ने मुझे ऐसा बनाया ही क्यों कि सब कोई मेरा मजाक उड़ाए.

मां - देखो बेटी! इसमें न तुम्हारी कोई गलती है न हमारी. फिर ये जरूरी तो नहीं होता कि जो दिखने में सुन्दर हो वह अच्छा ही हो जैसे सुनीता दिखने में कितनी सुन्दर है पर गुण चाल में सबसे खराब. वही तुम्हें ले लो तुम दिखने में भले से सामान्य हो पर गुण चाल में लाखों में एक हो.

वीणा - मां मै तुम्हारी बेटी हूं, इसलिए ऐसा कह रही हो.

मां - नहीं बेटी! मै तुम्हें दुनिया की सच्चाई बतला रही हुं जो मन से सुन्दर और अच्दा होता है उसी को सम्मान मिलता है. तनकी सुन्दरता तो कुछ समय के लिए ही लोगों का ध्यान खींचता है सदैव के लिए नहीं.

वीणा - मां! तुम यह सब मेरे मन रखने के लिए तो नहीं कह रही हो?

माॅ - नहीं बेटी! बिल्कुल नहीं! तुम जैसे भी हो बहुत अच्छे हो! बेकार की बातों में ध्यान न देकर अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाया करो. तन की सुन्दरता पर इतराने वालों को किसी न किसी दिन पता चल जाएगा.

वीणा - जी मां! मै अब से कभी आपसे इस बात की शिकायत नहीं करूंगी.

माॅ - बहुत अच्छा! मेंरी रानी बेटी.

(वीणा अपना कपड़ा बदलकर कुछ नाश्ता करने के बाद पढ़ने के लिए बैठ जाती है.)

पंचम - दृष्य

(शाला में अर्ध्द-वार्षिक परीक्षा का परिणाम बतलाया गया. परिणाम के अनुसार संज्ञानात्मक और सह संज्ञानात्मक दोनों क्षेत्रों में वीणा ए प्लस ग्रेड पाकर सबसे आगे रही. वही सुनीता दोनों क्षेत्रों में डी ग्रेड पाई. शाला से छुट्टी होने के बाद सिंह मैडम सुनीता के यहां जाती है.)

मैडम - सुनीता की मां! आज बच्चों को अर्ध्द-वार्षिक परीक्षा का परिणाम बतलाया गया.

मां. - हमें तो पहले से ही पता है मैडम कि सुनीता का क्या होगा?

मैडम - जब पहले से पता था तो सुनीता को पढ़ने के लिए बोलते क्यों नहीं थे.

मां - (पास खड़ी सुनीता की ओर देखते हुए) - कोई फायदा नहीं मैडम! इस लड़की को बोलते-बोलते मै और इसके पापा दोनों थक गए है पता नहीं कौन इसके दिमाग में भर दिया हे कि पढ़ने लिखने से अच्छा बनना संवरना है.

मैडम - (पास खड़ी सुनीता से) - क्यों री सुनीता! तुम अपने मां-बाप की बात सुनते क्यों नहीं? देखो प्रकृति ने जिसको जैसा बनाया है वह वैसा ही रहेगा. हमारे शरीर और चेहरे का अच्छा दिखना ही जरूरी नहीं है इसके साथ-साथ हमारा मन भी सुन्दर होना चाहिए. मेरा कहने का मतलब है कि हम सभी का व्यवहार एक-दूसरे के साथ अच्छा होना चाहिए.

सुनीता -जी मैडम! आगे से पढ़ने पर ध्यान लगाऊँगी.

मैडम - तो अच्छा सुनीता की मां! अभी मुझे कुछ और बच्चों के घर भी जाना है. चलती हूं.

सुनीता - जी मैडम! नमस्ते!

(मैडम वहां से निकलकर दूसरे बच्चों के यहां जाने लगती है)

(शिक्षक कक्ष में प्रधान पाठक श्री नारायण प्रसाद सिंगरौल सिंह मैडम से कहता है)

सिंगरौल जी - सिंह मैडम! ऐसा करो जो कल आपने अभिभावकों के लिए कहा क्या उसे हम किसी रूप में बच्चों पर लागू कर सकते हैं. मेरा तात्पर्य है कि बच्चे भी एक-दूसरे के व्यवहारों का अवलोकन करें.

मैडम -हां सर! रात में मै भी यही सोंच रही थी.

सिंगरौल - तो क्या सोंची मैडम.

मैडम - यही कि हम अपने स्कूल के बच्चों का एक समूह बनाते है और वह समूह ''निक्की की टोली'' के नाम से जाना जाएगा. यह टोली बच्चों के ऐसे व्यवहार का अवलोकन करेगी जो किसी भ्रम के शिकार होकर किया जा रहा हो. फिर इसकी सूचना हमें देंगे और हम कोई समाधान निकालेंगे.

सिंगरौल- बहुत अच्छा विचार है मैडम! फिर जल्दी करो. नेक काम में देर नहीं होना चाहिए.

(मैडम - कक्षाओं में जाकर समूह टोली बनाने के लिए बच्चों की पहचान करने लगी.)

<u>षष्ठम दृष्य</u>

(दूसरे दिन शाला में सभी बच्चों को एक ही स्थान पर बैठाया गया. सभी शिक्षकों के साथ-साथ कुछ अभिभावकों को भी बुलाया गया है. सिंह मैडम खड़ी होती है और बोलना आरंभ करती है.)

सिंह मैडम -(अभिवादन की औपचारिकतापूर्ण कर) - यहां आप सभी को एक विशेश उद्देश्य से बुलाया गया है.

रणजीत - मै जानता हुं. आप यहां पर सभी को एक साथ क्यों बैठाएं है और वह यह है कि आप हमारे परिणाम की जानकारी अभिभावक को बतलाएंगे.

मैडम - नहीं रणजीत! परीक्षा परिणाम बतलाने का तो सबसे अच्छा तरीका घर जाकर बतलाना ही है. यहां तो मै यह बतलाना चाह रही हुं कि हमें कैसे बच्चों के व्यवहार का सतत् अवलोकनकरते रहना चाहिए. ताकि हम समय पर बच्चों के मन से भ्रम को दूर कर सकें.

मुरली (अभिभावक) - मैडम तो क्या आप यह कहना चाह रही है कि माता-पिता अपने बच्चों के व्यवहार के बारे में कोई जानकारी नहीं रखते.

मैडम - नहीं! ऐसा मै बिल्कुल नहीं सोचती. मै तो केवल इतना बतलाना चाहती हुं कि बच्चों का कुछ व्यवहार केवल भ्रम के कारण गलत रूप ले लेता है. जैसे कई बच्चे समझते है कि सुन्दर होना ही सबसे बड़ा गुण है, कई बच्चे अपने शरीर को बलिष्ठ बनाना चाहते है, तो कई बच्चे सोंचते है कि किसी को धमकाने या रौब से बात करने से उसकी ताकत स्थापित होती है इत्यादि. और हमें ऐसे ही व्यवहार पर निगरानी रखकर समय रहते सुधारने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा बच्चे पढ़ाई लिखाई से बहुत दूर चले जाएंगे.

(उपस्थित सभी सदस्यों व्दारा ताली बजाकर सिंह मैडम की बातों का समर्थन व स्वागत किया जाता है.)

सभी लोग - हम आज से ही अपनें बच्चों के व्यवहारों पर जरूर ध्यान देंगे.

(इसके बाद बच्चे अपने कक्षा व अभिभावक अपने घरों की ओर प्रस्थान करते है.)

सप्तम - दृष्य

(सिंह मैडम व्दारा ''निक्की की टोली'' बनाई जाती है. इसमें वीणा के साथ-साथ सुनीता को भी रखा जाता है.)

सुनीता - ''निक्की की टोली'' में रहकर मुझे काम करना बहुत अच्छा लग रहा है.

रणजीत - दिखावा कर रही हो कि सही बोल रही हो. तुम्हारे जैसी लड़की अगर सुधर गई तो समझो हमारी टोली सफल हो गई.

वीणा - ऐ रणजीत! ऐसा क्यों बोल रहे हो? तुम्हें नहीं पता कि गलती सबसे होती है. बड़ी बात यह है कि समय रहते हम उसे सुधार लें और सुनीता अब बिल्कुल सुधर गई है. क्यों सुनीता!

सुनीता - हां वीणा! और इसमें तुम्हारे अपनेपन का बहुत बड़ा योगदान है. अब आगे मै किसी का दिल नहीं दुखाउंगी और पढ़ने पर ध्यान दुंगी.

वीणा - (गले लगाते हुए) - मेरी अच्छी सहेली!

(सिंह मैडम बच्चो की बात को सून रही थी और मन ही मन मुस्कुरा भी रही थी.)

11

खेलो सब खेल

प्रथम - दृष्य

(रानी शहर के माल में अपने मामा दिवाकर राय के साथ दंगल फिल्म देख रही है. फिल्म में मुख्य अभिनय निभाने वाली लड़की के व्दारा कुश्ती के खेल में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल-स्पर्धा जीतने से प्रभावित हो मन मे ठान लेती है कि वह भी कुश्ती खेलेगी. फिल्म समाप्त होने पर घर लौटते समय मामा से कहती है)

रानी - बहुत अच्छी फिल्म थी न मामा!

मामा -हां! तुमको फिल्म इतनी अच्छी क्यों लगी?

रानी - ओ इसलिए मामा कि देखा नहीं कैसे एक लड़की संघर्ष करते हुए आगे बढ़ी.

मामा - रानी! कहीं ऐसा तो नहीं कि फिल्म देखकर तुम्हारे मन में भी कुश्ती लड़ने की ईच्छा हो रही है.

रानी -मामा! क्या सचमुच मैं भी कुश्ती लड़ना सीख सकती हुं?

मामा - क्यों नहीं रानी! ऐसा क्या काम है जिसे कोई इन्सान चाहे और न कर सके.

रानी - मामा! मेरा मतलब यह नहीं था.

मामा - तो क्या था?

रानी - यहीं कि मै एक लड़की हुं और हमारे ईधर क्षेत्र में कोई भी लड़की कुश्ती नहीं लड़ती.

मामा - अरे! तो फिल्म में क्या देखी? ओ भी तो लड़की थी.

रानी - मामा! लेकिन ओ तो फिल्म है. मै सही की बाात कर रही हुं. क्या घर में मम्मी-पापा, ताउजी, चाचाजी सब अनुमति देंगे.

मामा - वाह रानी! पढ़ तो रही है आठवी लेकिन बात कर रही हो बड़ों जैसी!

रानी -(हॅसते हुए) मामा! क्या आाप मम्मी-पापा से इस बारे में मेरे लिए बात करोगे.

मामा - अरे बाप रे! जीजा जी से! मुझे भी डर लगता है, पर मैं दीदी से एक बार जरूर बात करूंगा. अब खुश हो न!

रानी - हां! मामा!.

(बात करते करते दोनो घर पहुंच गए. खाना खाने के बाद अपने-अपने कमरे में सोने चले जाते है)

<u>व्दितीय दृष्य</u>

(सुबह चाय पीते-पीते दिवाकर सोंच रहा था कि अभी अच्छा अवसर है दीदी से बात कर लिया जाय. आखिर दिवाकर को सोंच में डूबे देखकर रानी की मां ने पूछ ही लिया)

रानी की मां - क्यों रे दिवाकर! चाय पी रहा है कि उसमें डुबकी लगा रहा है?

दिवाकर - (एकाएक चैंकते हुए) - ऊँ. कुछ नहीं दीदी. बस ऐसे ही कुछ सोंच रहा था.

दीदी - ऐसे ही क्या? सीधा सीधा बतलाओ न कि क्या सोंच रहे हो?

दिवाकर - सोंच रहा हूं दीदी कि मन में जो कुछ है उसे आप से कहूं या न कहूं.

दीदी - यह भी क्या बात हुई! भई मुझसे ही कहने के लिए सोंच रहे हो तो कह डालो. ऐसे भी कहां कोई बात अपने मन में रखते हो.

दिवाकर - हां दीदी! आप सही कह रहे हो. आप से ही तो कह सकता हूं

दीदी (हंसते हुए) - तो कह भी डालो.

दिवाकर - दीदी मैं सोच रहा हुं कि रानी इस साल जब आठवी पास हो जाएगी उसके बाद उसे पढ़ने के लिए बड़े शहर भेज देना चाहिए.

दीदी - क्यों! अगले साल नवमी ही तो पढ़ेगी न कोई कालेज थोड़े पढ़ेगी. आगे सोचेंगे.

दिवाकर - नहीं दीदी! मै कहना चाह रहा हुं कि रानी को ऐसे स्कूल में पढ़ाना है, जहां पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद सीखने-सिखाने की भी व्यवस्था हो.

दीदी - खेल कूद! कैसा खेल-कूद.

दिवाकर - दीदी! कल रानी बोल रही थी कि उसे कुश्ती का खेल अच्छा लगता है और वह भी कुश्ती खेलकर अपने साथ-साथ सबका नाम रोशन करेगी.

दीदी (चैंकते हुए) - क्या कहा! कुश्ती! दिवाकर मेरे सामने बोल दिया तो बोल दिया. अपने जीजा के सामने भूलकर भी न कहना. नही तो नाम रोशन तो दूर घर से निकाला पहले होगा.

दिवाकर - पर दीदी! एक बार बोलकर तो देखना! आखिर कुश्ती खेलने में बुराई ही क्या है?

दीदी - दिवाकर! तुम नहीं जानते! तुम्हारे जीजा के दोस्त की बहन भी भारोत्तोलन के खिलाड़ी थी. पुरूषो के समान गठिले शरीर होने के कारण बेचारी की आज तक शादी नहीं हुई हैं. तब से तुम्हारे जीजा जी लड़कियों के लिए ऐसे सभी खेल के दुश्मन हो गए है, जिनसे लड़कियों का शरीर पुरूष के समान बन जाता है.

दिवाकर - अब तो दिनों-दिन समय बदल रहा है दीदी. आपने मेरी काम, कर्णम मल्लेश्वरी, मिताली राज का नाम तो सुना ही होगा. इन सभी का हंसता मुस्कुराता परिवार है. एक बार चर्चा करके तो देखना.

दीदी - तू कहता है तो चर्चा कर दूंगी. पर उम्मीद न ही रखना तो अच्छा होगा.

दिवाकर (हंसते हुए) - आधी जीत तो अभी हो गई दीदी.

(दोनो भाई-बहन चाय पीते-पीते हंसने लगे.

<u>तृतीय-दृष्य</u>

(संकुल केन्द्र विकास नगर में पूर्व में आयोजित निबंध प्रतियोगिता के परिणाम घोशित हाने वाला है. सभी माध्यमिक शाला के प्रधान-पाठक कुछ शिक्षकगण प्रतिभागी छात्र-छात्राएं एवं संकुल समन्वयक श्री केदारनाथ श्रीवास उपस्थित हैं. परिणाम बतलाते हुए संकुल समन्वयक कहता है)

श्रीवास जी - यहां उपस्थित सभी शिक्षकगण और मेरे प्यारे बच्चों! जैसा कि आप सभी को मालूम है कि पिछले सप्ताह हमारे संकुल मेंअंर्तशालेय निंबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था और जिसका विषय था ''बच्चों के समस्या-समाधान में विद्यालय की भूमिका'' इस ि◌विशय पर भाग लेने वाले सभी बच्चों ने अपने विचार बहुत ही सुंदर ढंग से व्यक्त किए. अब मै इसके परिणाम की घोशणा करता हुं. इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पूर्व मा.शा. आजाद नगर की छात्रा कु. रानी श्रीवास्तव को मिला है.

(सभी उपस्थित लोगों ने ताली बजाकर रानी को प्रोत्साहित किया)

व्दितीय स्थान पर पूर्व मा. शा. के छात्र रजनीश गिरि और तृतीय स्थान पर भीम नगर के छात्रा कु. शीला है.

(सभी लोगों ने विजेता छात्र-छात्राओं का तालियों से स्वागत किया.)

श्री छोटेलाल कोरी (शिक्षक) - सर! अब हम विजेता छात्रों से उनके शब्दों में सुनना चाहते है.

श्रीवासजी - मेरी भी यही ईच्छा हे कोरी जी! और अब मै कु.रानी को यहां आमंत्रित करता हुं कि वे दो शब्द अपने निबंध में लिखे विचारों के प्रेरणा स्रोत के संबंध में बतलाए.

(कु. रानी अपने स्थान से उठकर सामने मंच की ओर आती है सभी लोग ताली बजाकर उत्साहवर्धन करते है.)

कु. रानी - मेरे सभी सम्मानित शिक्षकगण व सहपाठी छात्र-छात्राएं हम सभी का यह अनुभव रहा है कि स्कूलों में जो कुछ हम पढ़ते है, और अपने घरों में जैसा जीवन जीते है उसमें जमीन-आसमान का फर्क होता हैं. हम में से बहुत से बच्चे ऐसे है जो अपने माता-पिता से अपनी मन की बात नहीं कह पाते और यही पर विद्यालय की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंक विद्यालय बच्चों के लिए दूसरा घर और शिक्षक, अभिभावक के समान होते है.

श्रीमती सुशमा वर्मा (शिक्षिका) - रानी बेटी! क्या तुम इसका कुछ उदाहरण दे सकती हो?

रानी - जी मैडम! जैसे हम में से बहुत से बच्चे अपने साथ होने वाले अन्याय व शोषण, ईच्छाओं का हनन, भेदभाव, बहुत से क्षेत्रोंमें जाने पर पाबंदी इत्यादि के बारे में माता-पिता से बोलने का साहस ही नहीं कर पाते.

श्री अविनाश भानू (शिक्षक) -तो रानी! तुमने इन समस्याओं के समाधान के लिए अपने निबंध में क्या सुझाव रखे है?

रानी -जी सर! इस संबंध में मैने विचार रखी है कि प्रत्येक विद्यालय व शिक्षक को दुसरा घर व अभिभावक के रूप् में कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए जिससें बच्चों की समस्याओं का उचित समाधान हो सके और उनकी ईच्छाओं को सही दिशा मिल सके.

श्रीवास सर (खड़े होते हुए) - और इसके लिए रानी ने जो कार्य करने की सुझाव दी है, वह मुझे बहुत अच्छा लगा.

सभी एक साथ - और वह सुझाव क्या है सर!

श्रीवास सर - यही कि हम अपने शाला के सभी कक्षाओं से कुछ बच्चों का चयन कर एक समूह बनाएं और उस समूह का नाम ‘‘निक्की की टोली हो! यह समूह बच्चों की समस्या का पहचान कर शिक्षकों से चर्चा करेगी और फिर सब मिलकर समस्या का समाधान करेंगे.

सभी एक साथ - सर! सचमुच यह एक बहुत ही सुन्दर सुझाव है और हम सभी आपको विश्वास दिलाते है कि यहां से जाने के बाद तत्काल हम लोग अपने-अपने शालाओं में ‘‘निक्की की टोली‘‘ बनाएंगे.

(श्रीवास सर सभी उपस्थित लोगों को धन्यवाद देता है. सभी शिक्षक व छात्र-छात्राऐं अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करते हैं)

<u>चतुर्थ दृष्य</u>

(सभी शालाओं में ‘‘निक्की की टोली‘‘ ने कार्य करना आरंभ कर दिया है. इस बीच टोली के माध्यम से शिक्षकों को इस बात की भी जानकारी होने लगी है कि बच्चे की क्या-क्या समस्याएं है? रानी के प्रधान पाठक श्री गिरधर नाग

को रानी की समस्या ज्ञात होने पर अभिभावकों का बैठक बुलाने का निर्णय लेता है. बैठक के दिन सभी अभिभावक उपस्थित है.)

श्री गिरधर नाग (उपस्थित अभिभावकों के अभिवादन पश्चात्) - उपस्थित सम्मानित अभिभावकगण! जब से हम सभी के विद्यालयों में ''निक्की की टोली'' कार्य करना आरंभ किया है, तब से हमें बच्चों की समस्याएं और ईच्छाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त होने लगी है और आप सभी को यह जानकर आश्चर्य के साथ-साथ दुःख भी होगा कि हम अपने लड़के और लड़कियों में कितना भेदभाव करते है.

श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा (अभिभावक) - मास्टर साहब! दुनिया की दस्तूर ही ऐसा चला आ रहा है

श्री नाग जी - तो वर्मा जी! आखिर किसी न किसी को और कभी न कभी तो इस दस्तूर को तोड़ना पड़ेगा ना.

श्री मलिक राम चौबे (अभिभावक) - समाज के रीति रिवाजों को बदलना कोई सरल काम थोड़े ही है मास्टर जी.

श्री नाग सर -मै मानता हुं कि सरल नहीं है. पर पहल तो करना पड़ेगा न. विशेष कर खेल-कूद की दुनिया में. हम में से ऐसे बहुत से अभिभावक है जो खेलकूद को भी लड़के और लड़कियों में बांट दिए हैं.

श्री मोहित राम यादव (अभिभावक) - तो मास्टर जी! क्या हम अपनी लड़कियों को कुश्ती कबड्डी भारोत्तोलन और क्रिकेट, हाकी, फुटबाल के खिलाड़ी बनाएं.

श्री नाग सर -यादव जी! बिल्कुल बनाएं! ऐसा कहां लिखा है कि ये सभी खेल केवल लड़के खेल सकते हैं, लड़कियां नहीं.

रमाशंकर विश्वास (अभिभावक) - मास्टर जी! लिखा तो नहीं है. पर कुछ खेल ऐसे होते है, जिनको खेलने से लड़कियों का शरीर बेडौल हो जाता है और जिनके कारण उन्हें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है. मेरी बहन को ही ले लो. भारोत्तोलक होने के कारण उसकी शादी आज तक नहीं हो पाई हैं.

श्री नाग सर - आप सभी लोगों ने मेरी काम, कर्णम मललेश्वरी, मिताली राज, सबा अंजुम जैसे महिला खिलाड़ियों का नाम तो सुना ही होगा. इन सभी खिलाड़ियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में नामकमाया और आज खुशहाल जीवन जी रहे है. केवल सोंच बदलने की जरूरत है.

श्री गौरीशंकर श्रीवास्तव (रानी के पिता जी) - मास्टर जी बिल्कुल सहीं कह रहे है. पहले मै भी यही सोचता था कि कुछ खेलों से लड़कियों को दूर ही रखना चाहिए. पर रानी की मां और मेरे साले दिवाकर ने मेरे सोंच पर पड़े धूल को साफ करके रख दिया और अब तो मैने निश्चय कर लिया है कि अपनी बेटी रानी को जो कुश्ती लड़ना सीखना चाहती है, अगले साल कोचिंग के लिए शहर भेजुंगा.

श्रीनाग सर - ये हुई न बात! मेरा आप सभी अभिभावकों से आग्रह है कि आप लोग भी अपने-अपने रूढ़िवादी विचारों को छोड़े और अपने बच्चों को जो भी खेल खेलना चाहे, उसमें आगे बढ़ने दे.

(अंत में सभी अभिभावकगण मास्टर जी के तर्क से संतुष्ट होते है और मन में निश्चय करते है कि अब वे खेलों को लड़के और लड़कियों में नहीं बाटेंगे! अभिभावक बैठक समाप्त होती है.)

पंचम - दृष्य

(नया शिक्षा सत्र आरंभ होने में कुछ ही दिन शेश है. ईधर गौरीशंकर ने अपने बेटी रानी को कुश्ती के कोचिंग के लिए इंदौर भेजने का निश्चय कर लिया है. नियत दिन पर रानी अपने पिता जी मां और मामा दिवाकर के साथ रेल्वे प्लेट फार्म पर ट्रेन आने की प्रतिक्षा कर रही है)

दिवाकर - रानी! वहां रहकर पढ़ना भी है, यह मत भूलना.

रानी - नहीं भुलूंगी मामा. कुश्ती भी सीखूंगी और पढ़ूंगी भी.

रानी के पिता जी -अच्छा बेटी! अपने खाने-पीने पर भी बराबर ध्यान देना. ठीक से खाओगी पिओगी नहीं तो पहलवान कैसे बनोगी.

रानी - पापा! आप बिल्कुल चिंता मत करो.

मां - और हां बेटी! जब भी कुश्ती लड़ना अपने को लड़की समझकर मत लड़ना.

दिवाकर - दारा सिंह समझना अपने को. दारा सिंह.

रानी - हां मामा! और मेरी पहली कुश्ती आपके साथ ही होगी.

दिवाकर - अरे बाप रे! न बाबा न!

(सभी हॅसने लगते है. ट्रेन आती है. रानी अपने सीट पर बैठती है. पिताजी, मां और दिवाकर खिड़की के पास खड़े-खड़े बातें कर रहे है. ट्रेन चलने लगती है. सभी लोगों का हाथ हवा में ट्रेन के आंखों से ओझल होते तक लहराता रहता है.)

12

मैं और तुम

प्रथम - दृष्य

(विनिता की माँ सरोजनी अपने पति हीराधर गुप्ता के साथ घरेलू सामान की खरीदारी करने शहर गई है. रास्ते में उन्हें स्कूल कॉलेज में पढ़ने वाले ऐसे कई लड़के और लड़कियाँ दिखाई दिए जो या तो साथ-साथ घूम रहे थे या अपने स्कूल, कॉलेज के कैम्पस में एक साथ बैठे हुए थे. उन्हें यह सब अच्छा नहीं लगा और एकाएक बड़बड़ाने लगी)

सरोजनी - राम.राम. क्या जमाना आ गया है. आज कल के लड़के लड़कियों को थोड़ा भी लाज शरम नहीं है.

(हीराधार, सरोजनी के बड़बड़ाने की आवाज सुनकर मोटर सायकल रोकते हुए पूछता है)

हीराधार -विनिता की माँ क्या हुआ? मुझसे कुछ कह रही हो?

सरोजनी -नहीं. आपसे क्या कहुँ? ये आजकल के लड़के-लड़कियों के रहन-सहन को देखकर रहा नहीं गया तो अपने आप से ही बोल रही थी.

हीराधर -अरे! छोड़ो न तुम भी. बेकार की बातों में पड़ी रहती हो. ये लोग न तो हमारे लड़के हैं और न हमारे लड़कियाँ.

सरोजनी -आप भी न कभी-कभी बिना सोंचे-समझे बोल देते हैं. अरे आज हमारे बच्चे नहीं है, पर कल भी न रहें इसकी क्या गारंटी है?

हीराधर -(हँसते हुए) - विनिता की माँ. इसकी गारंटी यह है कि हमारे बच्चे गाँवों में पले-बढ़े हैं और गाँवों में बचपन से ही सीखाया जाता है कि तुम लड़के हो तो लड़कों से ही बातचीत करो और लड़की हो तो लड़कियों के साथ घुमो-फिरो.

सरोजनी -पर विनिता के पापा. हवा को भी भला कभी कोई रोक पाया है? ओ देखो. यहाँ की हवा कितनी तेजी से गाँवों की ओर जा रही है.

हीराधार -(गाड़ी स्टार्ट करते हुए) - अरे! जल्दी बैठो! बाते ही करती रहोगी कि सामान खरीदकर घर भी वापस जाओगी और हाँ जल्दी गाँव पहुँचकर ईधर से जाने वाली हवाओं को भी तो रोकना है?

सरोजनी -(मुस्कुराते हुए) - आप भी न हर बात को मजाक में ले लेते है.

(हीराधर मोटर सायकल से सीधा खरीदारी करने शहर के मुख्य बाजार की ओर जाने लगता है. पीछे सीट पर बैठी सरोजनी गंभीर मुद्रा में कुछ सोंच रही है.)

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(विनिता और पारस स्कूल से आने के बाद अपना-अपना गृह कार्य कर रहे थे. तभी घर के बाहर मोटर सायकल रूकने की आवाज आई. दोनों समझ गए कि मम्मी-पापा शहर से आ गए. दरवाजा खोलकर हीराधर और सरोजनी घर के अंदर प्रविष्ट हुए)

विनिता -ओ मम्मी! आप आ गइ. हम लोगों के लिए क्या-क्या चीजे लेकर आई और क्या-क्या देखी.

माँ (सामान टेबल पर रखते हुए) - अरे बेटी. पुछो मत कि क्या-क्या देखी? शहर में लड़के, लड़कियों की चाल-ढाल देखकर तो लगता है कि न कभी खूद शहर जाऊँ और न तुम लोगों को कभी जाने दूँ.

पारस -लेकिन मम्मी. आखिर वहाँ देख क्या ली जो सबके शहर आने जाने पर प्रतिबंध लगाना चाह रही हो.

माँ -तुम भी पूरे अपने पापा पर गए हो. हर बात का मजाक उड़ाना.

पारस -(हँसते हुए) - मजाक नहीं उड़ा रहा हूं मम्मी. मैं तो केवल पूछ रहा हूँ.

माँ -अरे बेटा! और क्या देखी. यहीं कि स्कूल-कॉलेज जाने वाले बच्चे एक-दूसरे के साथ घूम रहे हैं या फिर किसी जगह बैठकर गप्पे मार रहे हैं.

विनिता -बस माँ. इतनी सी बात पर आप क्यों अपना रक्तचाप बढ़ा रही है..

माँ -(गुस्से से)तुम दोनों को ये बात इतनी सी लग रही है. जानते हो हमारे समय में अगर कोई लड़का या लड़की एक-दूसरे के साथ घूमना, बैठना तो दूर बात भी कर लेते तो लोग महिनों तक तानों की बरसात करते.

पारस -लेकिन मम्मी. अब समय बदल रहा है. लड़का और लड़की दोनों का एक-दूसरे के साथ उठना, बैठना, बातें करना कोई गलत बात नहीं है और फिर क्या दोनों का एक-दूसरे का संग होना हमेशा गलत ही थोड़ी होता है. दोनों एक-दूसरे के दोस्त भी हो सकते हैं जैसा कि लड़का लड़के का लड़की-लड़कियों का.

विनिता -(आगे बोलते हुए) - और माँ. जानती हो. हमारे समाज में फैली ऐसे ही मिथ्या और भ्रमपूर्ण धारणाओं को मिटाने के लिए हमारे स्कूल में बच्चों का समूह जिसे ''निक्की की टोली'' नाम दिया गया है, आज ही बनाए हैं.

माँ -और यह ''निक्की की टोली'' लड़कों को लड़कियों से और लड़कियों को लड़कों से घूमना, फिरना और गप्प मारना सिखाएगा. यहीं बतलाना चाह रहे हो न.

पारस -मम्मी. आप फिर गलत समझ रहे हैं. निक्की की टोली यह सिखाएगी की लड़के और लड़की प्राकृतिक रूप से भले ही दो अलग लिंग है. इसका यह मतलब नहीं है कि दोनों एक-दूसरे के साथ घूम-फिर या बात भी नहीं कर सकते. दोनों ही समाज के अंग हैं और इसलिए दोनों दोस्त भी हो सकते हैं.

माँ -(हीराधर की ओर देखकर) - ये देखो. मैं कह रही थी न कि शहर की हवा गाँवों की ओर नहीं आएगी इसकी गारंटी कोई नहीं दे सकता. पर मैं यह नहीं जानती थी की वहाँ कि हवा मेरे घर के अंदर तक पहुँच गई है.

हीराधर - (मजाक करते हुए) - और इसी कारण तो मैं भी कह रहा था कि घर जल्दी चलो, जिससे हवा को पहुँचने से पहले रोक सकें.

(अपने पापा की बात को सुनकर दोनों बच्चे जोर से हँसने लगते हैं. तीनों की हँसी सरोजनी को अच्छी नहीं लगी और वह नाराज होते हुए दूसरे कमरे में चली गई.)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(विनिता की माँ घर के सारे काम-काज निपटाकर आराम करने को सोंच रही थी कि तभी उसे जानी-पहचानी आवाज सुनाई देती है. बाहर निकलकर देखती है तो मोहल्ले के ही गोदावरी, रम्भा और गीता आई हुई है. उन्हें बैठने को कहकर खुद साथ में बैठते हुए बोलती है.)

सरोजनी - अरे भाई. सुनाओ और क्या हाल-चाल है? इस बार बहुत दिनों के बाद बैठने आई.

गोदावरी - क्या करें बहन. हम तो आ भी जाते हैं. तुम तो बैठने भी नहीं आती.

सरोजनी - क्या बतलाऊँ बहन. बच्चों को तैयार करने खाना बनाने और विनिता के पापा के आँफिस जाने की तैयारी के बाद समय ही नहीं निकलता.

रम्भा - तुम तो ऐसे बात कर रही हो जैसे हम लोगों के बच्चे और पति ही नहीं है.

(सभी हँसने लगते है.)

सरोजनी - और सुनाओ गाँव बस्ती का क्या हाल-चाल है?

गोदावरी - गाँव बस्ती की तो छोड़ बहन जो हाल-चाल था, वहीं है. हाँ आजकल स्कूल में जो ''निक्की की टोली'' बनाई गई है, उसी की चर्चा सब तरफ चल रही है.

रम्भा -हाँ बहन. कई लोग तो यहाँ तक कहते है कि अगर ''निक्की की टोली'' जैसा काम कर रही है उसके अनुसार गाँव के लड़के और लड़कियाँ ढ़लने लगे तो शहर और गाँव में कोई अन्तर ही नहीं रह जाएगा.

सरोजनी -अरे मैं क्या बतलाऊँ बहन. मेरे यहाँ के बच्चे तो ''निक्की की टोली'' के सिद्धांतों पर चलने भी लगे है. मैं समझाने का प्रयास की तो मुझे ही बोलने लगे मम्मी तुम समझती नहीं. अब समय बदल रहा है.

रम्भा -अरे बहन. समय को तो जब बदलना होगा तब बदलेगा. लेकिन हमारे गाँव के लड़के और लड़कियाँ अभी से बदलने लगे हैं.

गोदावरी - ठीक कह रही हो बहन. मैं तो कल ही कुछ लड़कों और लड़कियों को गली में हँस-हँस के बातें करते देखी थी.

सरोजनी - अब इसमें हम कर ही क्या सकते हैं बहन. बच्चों के ऊपर ज्यादा दबाव भी नहीं डाल सकते. कहीं कुछ उल्टा-पुलटा हो गया तो.... मैं तो यहीं सोंचकर अब बोलना ही बंद कर दी.

(कुछ देर ऐसे ही ईधर-उधर की बातें होती रही. फिर सभी अपने-अपने घर चले गए.)

चतुर्थ - दृष्य

(पारस अपने दोस्तों के साथ स्कूल के लिए निकल गया था. हीराधर भी आँफिस जा चुका था. विनिता स्कूल जाने की तैयारी कर रही थी. जल्दबाजी में विनिता का पैर घर के आँगन के फर्ष पर रखे साबुन पर पड़ी और वह फिसलकर जोर से गिरकर बेहोश हो गई.

सरोजनी-(धड़ाम की आवाज सुनकर) - अरे विनिता क्या हो गया. हे राम. लड़की तो कुछ बोल भी नहीं रही है.

(नजदीक बैठकर जोर-जोर से रोने लगी)

सरोजनी - हे भगवान. मेरी बेटी को ये क्या हो गया? इसके पापा और भाई दोनों नहीं है. अब इसे हाँस्पिटल लेकर कौन जाएगा. मोंहल्ले में भी कोई नहीं दिख रहा है.

प्रमोद - (मोहल्ले का लड़का, जो रोने की आवाज सुनकर दौड़ते हुए आता है) - अरे चाची. क्या हो गया? क्यों रो रही हो?

सरोजनी - (विनिता की ओर ईशारा करके) - प्रमोद! देखो न विनिता फिसल कर गिर गई है और तभी से बेहोश है. हे भगवान अब मैं क्या करूँ. मेरी बेटी को कहीं कुछ हो गया तो मैं कैसे जीऊँगी?

प्रमोद - (विनिता को देखते हुए) - अरे चाची. डरो मत. सिर में चोट लगने के कारण बेहोश हो गई है. मैं जल्दी से मोटर सायकल लेकर आता हूँ. आप हाँस्पिटल चलने की तैयारी करो.

(प्रमोद मोटर सायकल लेकर आता है. इस बीच सरोजनी भी फटाफट तैयार हो जाती है. प्रमोद विनिता को मोटर सायकल के बीच में बैठाने के बाद सरोजनी से पीछे बैठने को कहता है और गाड़ी शहर की ओर चलने लगती है.)

पंचम - दृष्य

(समय पर ईलाज शुरू हो जाने के कारण विनिता को कुछ देर बाद ही होश आ जाता है. इस बीच सूचना मिलने पर हीराधर और पारस भी हॉस्पीटल पहुँच चुके हैं.)

हीराधर -(रोते हुए) - भला हो प्रमोद का. अगर आज वह समय पर नहीं आता तो पता नहीं मेरी बेटी का क्या हाल होता.

पारस -माँ प्रमोद लेकर आया था. आप तो उसे बिल्कुल पसन्द नहीं करती थी और विनिता से भी बोलती थी कि प्रमोद भले ही हमारे मोहल्ले का लड़का है, पर आखिर है तो वह लड़का और किसी भी लड़के से तुम्हें बात नहीं करना है.

सरोजनी - हाँ बेटा. मैं ऐसा बोलती और सोंचती थी. पर आज मुझे पता चला कि लड़के और लड़कियाँ अर्थात् स्त्री और पुरूष एक-दूसरे के पूरक है, दुश्मन नहीं.

हीराधर -चलो विनिता की माँ. कम से कम सद्बुध्दि तो आई. मैं तो अब भी यहीं सोच-सोचकर काँप जाता हूँ कि कहीं तुम उस समय यह सोचती कि न तो मैं और न मेरी बेटी किसी बाहरी लड़के के साथ जाऐंगे, तब क्या होता?

सरोजनी - अब आप भी मुझे ताना मत मारो. मैं अब सभी से कहूँगी कि लड़के और लड़कियों के मिलने-जुलने या फिर बातचीत करने में कोई बुराई नहीं है.

हीराधर -(मुस्कुराते हुए) और विनिता की माँ. वह देखो यहाँ की हवा हमारे गाँवों की ओर ही जा रही है. चलो जल्दी जाकर इसे रोक दें.

सरोजनी - नहीं विनिता के पापा. इन हवाओं को स्वतंत्रतापूर्वक बहने दीजिए. इसमें सुख है, शाँति है, जीवन है, विश्वास है.

(हीराधर विनिता के पलंग के पास बैठकर कभी विनिता के सिर पर तो कभी सरोजनी के सिर पर हाँथ फेर रहा है. सरोजनी हॉस्पीटल के खिड़की से बहने वाली हवा को निरंतर देख रही है.)

13

छोड़ नकल, बन असल

प्रथम - दृष्य

(विकास खण्ड स्त्रोत केन्द्र में चित्रकला प्रतिस्पर्धा का परिणाम बतलाया जाना था. संकुल स्तर पर प्रथम व व्दितीय स्थान प्राप्त किए बच्चों ने इसमें सहभागिता दिया था. जब से दिनेश संकुल स्तर की चित्रकला स्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था उसी दिन से आनंद और गौतम उससे बात करना बंद कर दिए थे.)

दिनेश -(गौतम की माँ से) चाची. गौतम कहाँ है. क्या वह आज चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने कोटा नहीं जाएगा?

गौतम की माँ - पता नहीं बेटा. वह तो जो कुछ चित्र बनाया था, उसे भी आज सुबह फाड़कर जला रहा था.

दिनेश -वह ऐसा क्यों कर रहा था चाची? वह तो बहुत सुन्दर चित्रकारी करता है.

गौतम की माँ - मै भी सुबह समझा-समझा कर थक गई बेटा, पर वह मानता ही नहीं! कह रहा था कि अब से वह कभी चित्र नहीं बनाएगा.

दिनेश -ठीक है चाची. मैं अब जा रहा हूँ. जल्दी कोटा जाना है. गौतम आएगा तो बतला देना कि दिनेश कोटा जाने के लिए बुलाने आया था.

गौतम की माँ - ठीक है बेटा! कह दुंगी.

(दिनेश, गौतम के घर से अपने घर की ओर चला जाता है.)

व्दितीय - दृष्य

(गौतम अपने दोस्त आनंद और विमल के साथ घर आता है. घर आने पर गौतम की माँ बतलाती है कि दिनेश कोटा जाने के लिए बुलाने आया था. इतना सुनकर गौतम गुस्से में बोलता है)

गौतम -वह यहाँ क्यों आया था? मैं उससे स्कूल में बोल चुका हूँ कि मुझे तुमसे बात करना नहीं है.

आनंद - यार! वह हमें चिढ़ाने आया था.

विमल - लगता है उसका हाथ तोड़ना पड़ेगा.

गौतम की माँ -अरे! ये तुम लोग क्या तोड़ने मारने की बात कर रहे हो. वह बेचारा तो तुम लोगों को कोटा जाने के लिए बुलाने आया था.

गौतम -अरे माँ. तुम समझती नहीं हो.वह हमें चिढाने और नीचा दिखाने आया था.

गौतम की माँ - कैसे चिढ़ाने और नीचा दिखाने. मुझे भी तो कुछ बतलाओ.

गौतम - यहीं माँ कि वह संकुल की चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम क्या आ गया अपने आप को बड़ा चित्रकार समझने लगा और हमें नीचा दिखाने का प्रयास करता है.

गौतम की माँ - ऐसा कभी उसने तुम लोगों से कहा कि वह कोई बड़ा चित्रकार है या तुम लोग चित्र बनाना नहीं जानते.

विमल - कहा तो नहीं है चाची. पर उसका हाव भाव यहीं रहता है कि हम उसके सामने कुछ नहीं है.

गौतम - इस बार तो उसको छोड़ुँगा नहीं. देखना माँ आज विकास खण्ड स्तर की चित्रकला प्रतियोगिता में मैं ही प्रथम आऊँगा.

गौतम की माँ - पर बेटा लड़ना झगड़ना मत. जो अच्छा चित्र बनाएगा वहीं जीतेगा. वह तुम भी हो सकते हो और दिनेश भी.

गौतम - माँ तुम भी उसी की तरफदारी कर रही हो.

गौतम की माँ - मैं सच्चाई की तरफदारी कर रही हूँ.

(गौतम और उसके दोस्त झटपट तैयार होकर कोटा जाने के लिए निकलते हैं)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(विकास खण्ड स्तर पर सभी सकुल के प्रतिभागियों ने निर्धारित विषय पर अपने चित्र बनाए थे. विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री भानू राम यादव जी व्दारा परिणाम बतलाया गया. यहाँ भी दिनेश प्रथम स्तर पर रहा)

श्री यादव जी - चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी छात्र एवं छात्राओं- चित्रकला प्रतियोगिता का परिणाम आप सभी को बतला दिया गया है. पर एक बात हमेशा ध्यान में रखना कि प्रतियोगिता हमें दूसरो से नहीं अपने आप से करना है अर्थात् हम सदैव ऐसा करने का प्रयास करें जो पहले से श्रेष्ठ हो.

(सभी बच्चे और उपस्थित अन्य लोग ताली बजाते हैं)

श्री यादव जी -आप सभी प्रतिभागी और विजेताओं को एक बार पुनः शुभकामना.

(अपनी बात कह कर श्री यादव जी सीट पर बैठते है)

चतुर्थ - दृष्य

(कार्यक्रम समाप्त होने के बाद गौतम अपने दोस्तों के साथ जल्दी-जल्दी बाहर निकलता है और अपने गाँव की ओर जाने लगता है. घर पहुँचकर किसी से बिना कुछ बोले अपने कमरे में जाता है और दरवाजा अंदर से बंद कर लेता है. थोड़ी देर बाद माँ आती है और दरवाजा खटखटाते हुए कहती है)

माँ -बेटा गौतम. दरवाजा खोलो! देखो तुम्हारा दोस्त जयेश शहर से तुमसे मिलने आया है.

(माँ के दो तीन बार कहने पर दरवाजा खोलते हुए गौतम पुछता है)

गौतम -माँ. कहाँ है जयेश.

जयेश -अरे भाई गौतम! देखोगे तभी तो दिखुँगा न.

गौतम -अरे. गाँव कब से आए हुए हो?

जयेश -बस यार. आज ही आया हूँ और आते ही तुमसे मिलने चला आया.

गौतम -जयेश! ऐसा कर ना मैं कल तुम्हारे घर आता हूँ. अभी मेरी तबियत ठीक नहीं है.

जयेश -यह भी क्या बात हुई गौतम. मैं तुमसे ही मिलने आया हूँ और तुम बोल रहे हो कि तबियत ठीक नही है. आखिर हुआ क्या है.

माँ -अरे जयेश बेटा. न ही पुछो तो अच्छा है. इसे मैं बार-बारबोल के थक चुकी हूं कि जिस काम को ठीक से नहीं कर सकता उस काम को दूसरे की देखा-देखी करना छोड़ दे. पर यह अपनी जिद पर अड़ा रहता है.

जयेश -पर हुआ क्या है चाची?

माँ -अरे बेटा. ये हर बार चित्रकला में भाग लेता है और इसी के कक्षा का दिनेश प्रथम स्थान पर रहता है. बस उसी बात को लेकर कि मैं दिनेश को हरा के रहूँगा दिन रात तनाव और गुस्से में रहता है. वहीं इसके दोस्त आनंद और विमल इसे भड़काते रहते है.

जयेश - (बैठते हुए) गौतम. चाची बिल्कुल सही कह रही है. देखो हर आदमी का परिवेश और स्वभाव अलग-अलग होता है. कोई आदमी किसी काम में अच्छा होता है, तो कोई किसी अन्य काम में. ठीक है दिनेश को चित्र बनाना

अच्छा आता है, पर सोंचों तुम खेल-खेल में ही कितने दूरी तक कूद लगा लेते थे. तो तुम चित्र बनाने को छोड़कर कूदने में ध्यान लगाओ, तो देखना तुम्ही प्रथम आओगे.

माँ -वाह बेटा जयेश. कितनी अच्छी बात तुम बतलाए हो. ये सब तुमने कहाँ से सीखा है बेटा.

जयेश - चाची. यह सब हमें ''निक्की की टोली'' से सीखने को मिला है.

माँ - यह ''निक्की की टोली'' क्या है बेटा. मेरे साथ-साथ इस ना समझ को भी समझा दें. (गौतम की ओर ईशारा करती है.)

जयेश - चाची. यह ''निक्की की टोली'' बच्चों का समूह है, जो बच्चों के सोंच, विचार को बदलते हुए उनकी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करता है. और इसे सभी स्कूलों में बनाया जाना है.

गौतम - (बीच में बोलते हुए) और तुम कहना चाह रहे हो कि मेरे सोच विचार में दोष है.

जयेश - (मुस्कुराते हुए) - नहीं गौतम. ऐसा नहीं है. ''निक्की की टोली'' से ही मुझे पता चला कि कोई भी मनुष्य एक जैसे नहीं होते. सभी में कोई न कोई अच्छी चीज होती है. जरूरी यह है कि हम अपनी अच्छाई को समझें और उसे अच्छे ढ़ंग सेनिखारने का प्रयास करें. इससे हम एक तो दूसरे की नकल करने से बचेंगे और दूसरा इसके कारण उत्पन्न तनाव, व्देश व शत्रुता से भी.

गौतम - (माँ की ओर देखकर) - माँ. जयेश बहत दिनो बाद हमारे घर आया है. इसके लिए कुछ नाश्ता बना दो और साथ में मैं भी खा लूँगा.

जयेश - यह हुई न बात. ऐसे ही मुस्कुराते रहा करो यार.

(दोनों मित्रों के साथ-साथ गौतम की माँ भी मुस्कुराने लगती है और मुस्कुराते हुए ही रसोई घर की ओर जाती है.)

<u>पंचम - दृष्य</u>

(पूर्व मा.शा. राजमहल में भी ''निक्की की टोली'' बनाई गई. इसमें गौतम और उसके दोस्तों के अतिरिक्त दिनेश के साथ-साथ कुछ लड़कियाँ भी शामिल हुई. ''निक्की की टोली'' को उनका कर्तव्य समझाते हुए संस्था के प्रधान पाठक श्री दिनदयाल सिन्हा जी कहते हैं)

श्री सिन्हा जी- देखो. बच्चों! यह जो निक्की की टोली बनाई गई है, उसके कार्यो को सरल रूप में नहीं लेना है. मेरा कहना तो यहाँ तक है कि न केवल स्कूल के बच्चों अपितु अगर बाहर के बच्चों के भी समस्या पहचान कर

उसका समाधान कर सकें तो अच्छा होगा और मुझे विश्वास है कि इस टोली के सभी बच्चें अपने कर्तव्यों का निर्वहन सही ढ़ंग से करेंगे.

निक्की की टोली (एक साथ) - सर! हम आपके विश्वास को बनाए रखेंगे.

सिन्हा जी - बहुत अच्छे बच्चो. मुझे यहीं उम्मीद है.

विमल - सर! हमने तो बच्चों की समस्याओं को पहचानना और उसका समाधान करना अभी से शुरू कर दिया है.

निकिता - और सर! जिस बच्चे की समस्या की पहचान कर समाधान खोजें हैं वह लड़का है गौतम.

(सभी बच्चे मुस्कुराते है)

वंदना - सर! गौतम की समस्या यह थी कि जिस काम को वह ठीक से जानता नही था, उसे वह करना चाहता था और तनाव मेंरहता था. जबकि जो वह कर सकता था, उस पर ध्यान नही देता था. अब से वह लम्बी कूद पर ध्यान देगा.

आनंद - और देखना सर! एक दिन गौतम लम्बी कूद में प्रथम आएगा.

लोकेश - और तुम किसमें प्रथम आओगे?

वंदना - इसकी पहचान कर रहे हैं.

(सभी बच्चों के साथ-साथ सिन्हा सर भी जोर से हँसने लगता है. गौतम, दिनेश के करीब आकर चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम आने की बधाई देता है और एक-दूसरे के मुस्कुराते हुए गले लगते है.)

14

अनमोल - देन

प्रथम - दृष्य

(ठंड का महिना था. रात के करीब नौ बज रहे थे. निकिता बाथरूम में नहाते नहाते रो रही थी. पास ही उसकी माँ उर्मिला खड़ी निकिता को नहाते देख रही थी. निकिता से जब रहा नहीं गया तब अपनी माँ से बोली)

निकिता - (रोते हुए) माँ! अब रहने दो न. कितने समय तक नहाऊँगी. कल सबेरे धूप निकलने पर नहा लूँगी.

माँ -अरे नहीं. बिल्कुल नहीं. जब तक पूरे सिर के बाल में साबुन लगाकर नहा नहीं लोगे, तब तक घर के अंदर घुसने भी नहीं दुँगी.

निकिता - माँ. मेरी अगले सप्ताह से अर्ध्दवार्षिक परीक्षा होने वाली है. ऐसे में तो मैं बीमार पड़ जाऊँगी और परीक्षा भी नहीं दे पाऊँगी.

माँ - तुम्हारी परीक्षा का क्या होगा? मैं कुछ नहीं जानती. जब तक सही ढ़ंग से नहा नहीं लोगी तब तक घर के अंदर घुस नहीं सकती. आधे-अधूरे नहाकर मैं तुम्हे पूरे घर को अपवित्र नहीं करने दुँगी.

निकिता - (सिसकते हुए) - माँ! मेरे नहाने या नहीं नहाने से घर कैसे अशुध्द हो जाएगा? कुछ तो दया करो माँ.

माँ - अभी तुम तेरह साल की हो न और पहली बार है, इस कारण नहीं समझ रही है. जब मेरे साथ ऐसा होता था तो मेरी माँ मुझे आधी रात को नहलाती थी. तब कहीं घर में घूसने को मिलता था.

(निकिता के बार-बार कहने पर भी उर्मिला नहीं मानी और जब तक उर्मिला संतुष्ट नहीं हो गई, तब तक ठंड में काँपते-काँपते साबुन से नहाती रही.)

व्दितीय - दृष्य

(स्कूल जाने के समय सिमरन, ज्योति, अरूणा, निकिता के घर बुलाने आई. निकिता बिस्तर में ही पड़ी हुई थी. अभी तक निकिता को सोए देखकर सिमरन बोली.)

सिमरन - अरे निकिता. स्कूल जाने का समय हो गया है और तुम अभी तक सोई हुई हो.

निकिता - सिमरन! मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगी. तबियत ठीक नहीं है. रात भर बुखार और सिरदर्द में तड़फ रही थी.

अरूणा - क्यों निकिता? कल शाम तक तो भली चंगी थी. फिर जान तो रही हो इस हप्ते प्रत्येक दिन हम लोगों का टेस्ट होगा.

निकिता - अब मैं क्या करूँ बहन? मैं मम्मी से कितने बार बोली कि रात में मत नहवाओ. पर वो मानी ही नहीं.

ज्योति - अरे पर ऐसा क्या हो गया था कि तुम्हें रात में नहाना पड़ गया. वो भी इतनी ठंड में.

(निकिता की माँ वहाँ पर आती है और निकिता की सहेलियों से कहती है)

माँ - क्यों तुम लोगों को पता नहीं है क्या? घर में अपने-अपने मम्मी से पुछना कि क्या होता है तो रात में भी नहाना पड़ता है. फिर चाहे कड़कड़ाती ठंड हो या तबियत ही खराब हो.

सिमरन - फिर भी चाची. मैं तो बिल्कुल ही नहीं नहाती.

निकिता - ठीक है सिमरन! तुम लोग स्कूल जाओ. मैं ठीक होने पर खुद तुम लोगों को बुलाने आऊँगी.

(निकिता के कहने पर सिमरन, ज्योति और अरूणा अपने स्कूल की ओर चले जाते हैं)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(स्कूल लगी हुई थी. सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में बैठे थे. कक्षा सातवीं की कक्षा शिक्षिका श्रीमती जूही शर्मा आती है और बच्चों का हाजिरी लेना आरंभ करती है. बच्चे अपने नाम आने पर यस मैडम कहती है.)

शर्मा मैडम - निकिता. निकिता.

अरूणा - जी मैडम. वो आज नहीं आई है.

शर्मा मैडम - अरूणा मैं देख रही हूँ कि निकिता आज लगातार पाँच दिन से स्कूल नहीं आई है. क्यों सब ठीक तो है न?

सिमरन - मैडम! हम लोग उसे बुलाने गए थे. उसकी तबियत खराब है और वह कह रही थी कि ठीक होने पर स्कूल जाऊँगी.

शर्मा मैडम - उसकी तबियत कैसे खराब हो गई?

सिमरन - जी मैडम. निकिता बतला रही थी कि उसकी माँ जबरदस्ती उसे बाल धोकर रात में ही नहाने को बोली थी और उसी दिन से उसकी तबियत खराब हुई है.

शर्मा मैडम - ये तो बहुत बुरा हुआ. अच्छा अब ये बतलाओ कि तुम में से ऐसी कितनी लड़कियाँ है जिनको रात में नहाना पड़ा है या घर वाले आचार को छूने से मना करते हो और पूजा घर में जाने से मना करते हों.

(कक्षा में दर्ज 20 लड़कियों में से बारह लड़कियों ने अपना हाथ ऊपर की.)

सिमरन - पर मैडम. घर वाले ऐसा क्यों करते हैं?

शर्मा मैडम - बतलाऊँगी सिमरन. पर उसके पहले जिन लड़कियों ने हाथ उपर किए हैं वे यह बतलाओ कि उसके बाद तुम लोग स्कूल आते हो कि नहीं.

गंगा - (हाथ उपर किए लड़कियों में से एक) - जी नहीं मैडम. माँ स्कूल आने ही नहीं देती. कहती है कि जब तक सब कुछ ठीक न हो जाए, तब तक स्कूल नहीं जाना है.

शर्मा मैडम- हाँ गंगा! अब मैं समझी कि आए दिन कोई न कोई लड़की स्कूल से लगातार अनुपस्थित क्यों रहती है.

अरूणा - क्यों अनुपस्थित रहते हैं मैडम. हमें भी बतलाईये.

शर्मा मैडम - जरूर बतलाऊँगी अरूणा. पर आज नहीं कल. और हाँ तुम सभी लड़कियाँ अपने-अपने माँ को कल बारह बजे स्कूल लेकर आना और निकिता और उसकी माँ को तो जरूर. और हाँ मैं नर्स दीदी को भी कल आने के लिए बोल दूंगी.

बच्चे - जी मैडम.

(काल खण्ड समाप्त होने पर शर्मा मैडम कक्षा से बाहर निकलती है. सभी बच्चे अपने कक्षा कार्य करने में लग जाते हैं.)

<u>चतुर्थ- दृष्य</u>

(दूसरे दिन शाला में अध्ययनरत् ज्यादातर बच्चों की माँ उपस्थित हुई. सभी के मन में एक ही प्रश्न चल रहा था कि आखिर आज बच्चों की माँ को ही क्यों बुलाया गया है? निकिता की माँ उर्मिला भी आई थी. इसी बीच शर्मा मैडम नर्स दीदी बिंदेश्वरी मरकाम के साथ वहाँ आई.)

शर्मा मैडम - (बैठते हुए) - आप सभी का हमारे शाला में स्वागत है.

उपस्थित लोग - मैडम जी. धन्यवाद!

शर्मा मैडम - आप सभी के मन में यह बात आ रही होगी कि हमें क्यों बुलाया गया है?

दामिनी - (अरूणा की माँ) - हाँ मैडम. हम लोग तो यहाँ बैठे-बैठे अनुमान भी लगा रहे थे.

शर्मा मैडम - वाह भाई! यह तो अच्छी बात है. तो क्या अनुमान लगाई अरूणा की माँ.

दामिनी - यहीं मैडम कि बच्चों की परीक्षा के संबंध में कुछ जानकारी देना होगा.

उर्मिला -(निकिता की माँ) - या फिर हमारे बच्चों से कोई गलती हुई होगी.

शर्मा मैडम - निकिता की माँ. आज हम ऐसे विषय पर चर्चा करने के लिए आप लोगों को बुलाएँ हैं जिसमें बच्चों की नहीं बल्कि आप लोगों की गलती होती है.

उर्मिला - मैडम. अब आप बातों की पहेली मत बुझाओ. खुलकर बतलाओ.

शर्मा मैडम- अच्छा निकिता की माँ. पहले आप यह बतलाईये कि निकिता पिछले पाँच दिन से स्कूल क्यों नहीं आ रही है?

उर्मिला - जी मैडम. उसकी तबियत खराब है.

शर्मा मैडम- क्यों क्या हुआ है उसे सर्दी, खाँसी, बुखार, टी.बी. या फिर और कोई बड़ा बीमारी.

उर्मिला -राम. राम. भगवान करे ये सब बीमारी किसी भी बच्चे को न हो.

शर्मा मैडम - तो फिर?

उर्मिला -जी मैडम. वो मैं यहाँ पर नहीं बतला सकती.

शर्मा मैडम - बस मैं यहीं सुनना चाहती थी. यहीं पर आप लोग घर में गलती करते हैं और बच्चे भुगतते हैं.

सभीयाँ -(एक साथ) - मैडम. अब हमें आप खुलकर बतलाईये.

शर्मा मैडम - जी इस संबंध में आप लोगों से चर्चा नर्स दीदी मरकाम करेगी.

दामिनी - तभी तो मैं सोंचू कि ये डाक्टरनी यहाँ पर कैसे आई है.

(शर्मा मैडम, नर्स दीदी मरकाम को मंच पर आमंत्रित करती है. मरकाम मैडम उपस्थित माँओं को समझाते हुए कहती है)

मरकाम मैडम -देखो! आप सभी यह जानते हैं कि हम सभी औरतों के जीवन में यह प्रत्येक माह होता है, जिसे हम मासिक चक्र या माहवारी कहते हैं और यह सभी औरतों के लिए अभिशाप न होकर वरदान होता है.

उर्मिला - छी. छी. नर्स मैडम. जिसके बारे में हम आपस में बात करने पर शर्माते हैं, संकोच करते हैं, उसके संबंध में आप सभी बच्चों और शिक्षकों के सामने बात कर रहे हैं और तो और उसे वरदान भी बतला रहे हैं. क्या आप हमें यहीं बतलाने के लिए बुलाए हैं.

मरकाम मैडम - देखो बहन! आप नाराज मत होईये. हम औरतों के बीच इसके संबंध में फैली गलत धारणाओं को ही दूर करने कुछ बतलाना चाहती हूँ.

दामिनी - कैसी गलत धारणा नर्स दीदी! आप कहना चाह रही हैं कि हम अब तक गलत फहमी में जी रहे थे.

मरकाम मैडम- चलो अच्छा यह बतलाओ कि यहाँ जितने भी महिला उपस्थित हैं, उनमें से कौन नहीं चाहती की उनके बच्चे हो.

उर्मिला - यहाँ तो क्या आपको कहीं भी ऐसी कोई औरत नहीं मिलेगी जो माँ न बनना चाहे. यहीं तो हमारे औरत होने का प्रमाण है.

मरकाम मैडम -आप बिल्कुल सहीं कह रही हैं. और क्या आप जानते है कि इसी मासिक चक्र के कारण ही औरतें माँ बन पाती है. तो हुआ न यह वरदान.

दामिनी - हाँ दीदी. अगर ऐसा है तो सहीं में यह हम सबके लिए वरदान है.

मरकाम मैडम -तो फिर इसके आधार पर होने वाले अत्याचार बंद होना चाहिए कि नहीं?

दामिनी - हाँ दादी! पर यह भी तो बतलाईये कि क्या-क्या अत्याचार होता है?

मरकाम मैडम -हमारे घरों में जब कोई लड़की मासिक चक्र या माहवारी से गुजरती है तो सबसे पहले रात हो या दिन ठंड हो या बरसात सिर धोकर नहाने को कहा जाता है. बहुत से घरों में ऐसे लड़कियों के आचार या अन्य कोई भी सामान को छूने तथा पूजा-पाठ करने की मनाही होती है. यहाँ तक कि बहुत सी लड़कियों को घर से बाहर निकलने, किसी से बात करने और स्कूल तक जाने नहीं दिया जाता.

उर्मिला -वो तो हम इस कारण करते हैं कि किसी की नजर न लग जाए और फिर मानलो रास्ते में या स्कूल में हो जाए तब तो बहुत शर्मिन्दा होना पड़ेगा न.

मरकाम मैडम -बिल्कुल नहीं. लड़कियों को इन परिस्थितियों से बचाने के लिए आजकल जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है और इस दिशा में सभी शालाओं में ''निक्की की टोली'' बनाई जा रही है.

उर्मिला - पर मैडम. आपने यह तो नहीं बतलाया कि मान लो स्कूल में हो जाए तब लड़कियाँ क्या करेंगी?

शर्मा मैडम - (बीच में उठते हुए) - देखो बहन. इसके लिए सभी शालाओं के शौचालय में एक छोटा सा कक्ष, जिसे ''इनसिनेरेटर'' कहा जाता है बनाया गया है. वहाँ लड़कियों के लिए आवश्यक सभी सामान जैसे- नेपकीन, पैड, साबुन सब कुछ रखा होता है.

दामिनी - इसका मतलब है कि हम अपनी बच्चियों को बिना किसी चिंता या भय के रोज स्कूल भेज सकते हैं.

शर्मा मैडम - बिल्कुल! इससे लड़कियों के पढ़ाई में आने वाला व्यवधान भी दूर होगा और वे सही तरीके से आगे पढ़ पाऐंगे.

मरकाम मैडम - तो अब तो आप लोग मान गए न कि ''माहवारी औरतों के लिए अभिशाप नही वरदान है'' और इसमें व्याप्त भ्रामक धारणाओं को हम छोड़ के रहेंगे.

(उपस्थित सभी लोगों ने हाथ हिलाकर अपनी सहमति व्यक्त किए. दामिनी के कहने पर उर्मिला ने भी मुस्कुराकर शर्मा मैडम और मरकाम मैडम की बातों पर चलने का निश्चय किया.)

<u>पंचम - दृष्य</u>

(निकिता अब स्कूल आना आरंभ कर दी थी. शाला में ''निक्की की टोली'' बनाकर उन लड़कियों को सम्मिलित किया गया था, जो इस माहवारी या मासिक चक्र की प्रक्रिया से गुजरते हैं. शर्मा मैडम कक्षा में आकर कहती है.)

शर्मा मैडम - बहुत खुशी की बात है कि आप लोगों की मेहनत रंग ला रही है. जिस दिन से निक्की की टोली नेअपना काम करना आरंभ किया है, तब से लड़कियों की उपस्थिति शत-प्रतिशत हो रही है. इसके लिए निक्की की टोली को धन्यवाद.

निकिता - मैडम जी. और मेरी माँ तो एकदम बदल गई है.

शर्मा मैडम - वो कैसे निकिता?

निकिता - मैडम! माँ बोल रही थी कि अब के बार तुम मासिक चक्र में रहोगी तब तुम्ही से आचार बनवाऊँगी और रोज स्कूल भेजुँगी.

शर्मा मैडम- यह तो बहुत अच्छी बात है निकिता. पर हमें यह कार्य तब तक करते रहना है, जब तक प्रत्येक घर तक यह संदेश न पहुँच जाए कि मासिक चक्र या माहवारी औरतों को प्रकृति का दिया अनमोल देन है.

(निक्की की टोली - जी मैडम. ऐसा करने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे.

शर्मा मैडम - मुझे तुम लोगों से ऐसा ही विश्वास है. और पुनः सभी को शुभकामना.

सभी बच्चे ताली बजाकर स्वागत करते है. व्दितीय कालखंड आरंभ होता है. बच्चे पढ़ने में जुट जाते हैं.)

15

जीवन सँवार लें

प्रथम - दृष्य

(निक्कू अपने दोस्त बाँबी, सोनू और रमेंश के साथ तालाब में मछली पकड़ रहा था. उसी समय मनोहर दौड़ते हुए आया और निक्कू से कहा.)

मनोहर - निक्कू, निक्कू! तुम्हारे यहाँ पोर्ते और वर्मा सर आए हैं.

निक्कू - ये दोनों सर न कब से मेरे पीछे पड़े हैं. आने दो कितने बार घर आऐंगे.

मनोहर - नहीं निक्कू! इस बार सरजी अपने साथ कुछ बच्चों को भी लेकर आए हैं.

निक्कू - बच्चों को. बच्चे क्या करने आए हैं?

मनोहर - अब मुझे क्या पता. मैं घर के पास खेल रहा था. देखा तो तुम्हें बतलाने आ गया.

निक्कू - चल आ ही गया है तो मछली पकड़ने में हम लोगों की मदद कर.

मनोहर - नहीं भाई. मेरे स्कूल जाने का समय हो रहा है. जल्दी से तैयार होकर स्कूल जाऊँगा.

बाँबी - स्कूल जाकर क्या बन जाओगे. कम से कम हमारे साथ रहकर मछली पकड़ना तो सीख ही जाएगा.

मनोहर - नहीं भाई. पिछले बार तुम लोगों के चक्कर में एक सप्ताह स्कूल नहीं गया था. जानते हो कितनी मार पड़ी थी.

सोनू - अरे! मार ही तो पड़ी थी. जान थोड़ी चला गया. फिर दोस्तो के लिए मार भी खा लिया तो क्या?

मनोहर - नहीं सोनू. मैं तो जा रहा हूं. तुम लोग अपनी जानों. फिर न कहना कि बतलाया नहीं.

निक्कू, बाँबी, सोनू व रमेश (एक साथ हँसते हुए) - जा जा! बड़ा पढ़ लिख कर साहेब बन जाएगा.

(मनोहर अपने घर की ओर चला जाता है और निक्कू अपने दोस्तों के साथ मछली पकड़ने में लगा जाता है.)

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(राधेश्याम पोर्ते और जगत राम वर्मा सर पूर्व मा.शा. मनोहरपुर के कुछ बच्चों के साथ निक्कू के घर के सामने उसके पिताजी श्री मोहित राम श्रीवास से बात कर रहे हैं. वहीं गाँव के कुछ अन्य व्यक्ति भी खड़े होकर बातें सुन रहे हैं)

पोर्ते सर - भाई. मोहित राम जी निक्कू कहाँ है? उसे स्कूल क्यों नहीं भेजते? हम लोग देख रहे है कि वह महिने में केवल दो-तीन दिन ही स्कूल आता है.

मोहित राम - कया बतलाऊँ सर जी. बार-बार बोलने के बाद भी एक ही रट लगाए रहता कि अब नहीं पढ़ुँगा. उसके मामा, चाचा, जीजाजी सब समझा-समझा कर थक गए है. बस सबको एक ही जवाब कि अब नहीं पढ़ुँगा.

बलदाऊ - (वहाँ खड़े अन्य व्यक्ति) - अरे! मोहित भाई. पढ़ेगा नहीं तो क्या करेगा. अभी निक्कू की उमर ही कितना है. कक्षा सातवीं ही तो पढ़ रहा है.

नरेन्द्र - (एक अन्य व्यक्ति) - बलदाऊ भाई. एक तो इसका लड़का खुद पढ़ता-लिखता नहीं ओर मोहल्लें के दूसरे लड़कों को भी स्कूल नहीं जाने देता. मैं अभी देखकर आ रहा हूँ कि चार बच्चे तालाब में मछली पकड़ रहे हैं.

वर्मा सर - देखो भाई. चाहे निक्कू के पिताजी से हो या आप लोगों से एक बात तो यह स्पष्ट हो गया कि बच्चे लगातार स्कूल नहीं जा रहे हैं, इसकी जानकारी सभी को है.

नरेन्द्र - वर्मा सर. तो इससे क्या होगा? हम तो बच्चे की चेहरा देखकर जान जाते हैं कि कौन पढ़ेगा और कौन नहीं?

वर्मा सर -(मजाक करते हुए) - तो अच्छा नरेन्द्र महराज. जब इतना सब कुछ जानते हैं, तब यह भी बतला दो कि वो चारो बच्चे कब से स्कूल आना शुरू करेंगे?

नरेन्द्र - भाई! यह तो मैं नहीं बतला सकता. अगर उनके घर वाले चाहें तो बच्चों की हिम्मत ही नहीं होगी कि वो स्कूल जाना बंद कर दें.

बलदाऊ - और सरजी. मैं भी यहीं मानता हूँ कि ये सब घर वालों की छूट के कारण होता है.

पोर्ते सर - देखो भाई! मैं आप लोगों की इस बात पर आंशिक रूप से ही सहमत हूँ.

नरेन्द्र - (बीच में) - आंशिक रूप से क्यों सर?

पोर्ते सर - वो इस कारण कि जब तक हम बच्चों से स्कूल नहीं आने के कारण उनके मुँह से नहीं सुन लेंगे, तब तक नहीं कह सकते कि केवल घर वाले ही जिम्मेंदार है.

मोहित राम - तो सर जी! अब यह बतलाईए कि हम क्या कर सकते है?

पोर्ते सर - वहीं जानकारी देने के लिए तो हम आज आए है. देखिए आज से दो दिन बाद हम ऐसे सभी बच्चों के पालक जो स्कूल ही नहीं आते या फिर बहुत कम आते हैं, की बैठक स्कूल में रखे हैं. मेरे साथ ये जो बच्चे आए हैं, वे भी आप लोगों को इस काम में अर्थात् पालक सम्पर्क में सहयोग देंगे.

नरेन्द्र - ये बहुत अच्छा काम कर रहे है सरजी. हम लोग जरूर ऐसे बच्चों के पालकों से सम्पर्क कर नियत तारीख को शाला में उपस्थित होंगे.

पोर्ते और शर्मा सर (एक साथ) - हमें आप लोगों से यहीं आशा थी. अच्छा अब हम चलते है. स्कूल में प्रार्थना का समय हो रहा है. आप सभी को नमस्कार.

सभी लोग - आपको भी नमस्कार.

(सभी लोग अपने अपने नियत स्थान की ओर चले जाते हैं.)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(दिन के लगभग 12 बज रहे है. स्कूल में पढ़ाई चल रही है. मोहित राम खाना खाकर घर में ही आराम कर रहा है. उसी समय निक्कू हाथ में पॉलीथीन में कुछ रखकर घर के अंदर प्रवेश करता है. उसे देखकर मोहित राम जी कहता है.)

पिताजी - क्यों रे निक्कू! तुम सुबह से घर से निकले थे, और अभी आ रहे हों. इतनी देर तक कहाँ थे और क्या कर रहे थे?

निक्कू - नहीं नहीं पिताजी. पास में ही खेल रहा था.

पिताजी -ये कोई खेलने का समय है. गाँव मोहल्ले के सभी बच्चे स्कूल पढ़ने के लिए चले गए हैं और तुम हो, जो स्कूल जाने का नाम ही नहीं लेते. आखिर 13-14 साल के उम्र से ही पढ़ाई छोड़कर क्या करोगे? यहीं न चोरी, डाका, मार-पीट, हत्या या फिर कुछ और. अब तो तुम्हारे कारण हम लोगों को यह भी सुनना पड़ रहा है कि अपने साथ-साथ और बच्चों को भी बिगाड़ रहे हो. और ये हाथ में क्या रखे हो?

निक्कु - कुछ नही पिताजी.

पिताजी - निक्कू! अब तुम्हारी कुछ भी बहाने बाजी नहीं चलेगी. या तो तुम कल से रोज स्कूल जाओगे या नहीं जाओगे तो मन में क्या है? उसे स्पष्ट बतलाओगे. कम से कम कारण जानकर सही रास्ते पर चलाने का प्रयास तो कर सकता हूँ.

निक्कू - (बात बदलते हुए) - पिताजी1 और माँ कहाँ है? दिख नहीं रही है.

पिताजी - (बिना बात पर ध्यान दिए) - और हाँ. एक बात कान खोलकर सुनले परसो स्कूल में तुमकों मेरे साथ चलना है. पिछले बार की तरह समय पर कहीं भग न जाना.

(उसी समय निक्कु की माँ आती है. निक्कू माँ से कहती है कि भूख लग रही है. माँ निक्कु को किंचन के तरफ लेकर आती है.)

<u>चतुर्थ - दृष्य</u>

(नियत दिन सभी लोग स्कूल में उपस्थित होते हैं. निक्कू, बाॅबी, सोनू और रमेश भी अपने-अपने पिताजी के साथ बैठे हुए है. पोर्ते सर सबका अभिवादन करते हुए कहना आरंभ करता है)

पोर्ते सर - आप सभी को यहाँ पर क्यों आमंत्रित किया गया है, यह तो आप जानते ही है. बच्चों का असमय शाला छोड़ देने से उस बच्चे के जीवन और समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है उसे आप लोगों के सामने हमारे स्कूल के ''निक्की की टोली'' व्दारा नाट्क रूप में प्रस्तुत किया जाएगा.

निक्कू - सरजी. यह ''निक्की की टोली'' क्या है? और जब मैं स्कूल आया था, तब तो यह टोली नहीं थी.

पोर्ते सर - अच्छा निक्कू. तुम यह तो बतलाओ कि स्कूल कब आए थे. कुछ याद भी है. स्कूल आते नहीं हो तो ''निक्की की टोली'' के बारे में क्या जानोगे.

निक्कू - फिर भी सर बतलाओ न.

पोर्ते सर - निक्कू यह टोली तुम्हारे जैसे ही स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों का समूह है और अब इस समूह व्दारा प्रस्तुत नाटक को ध्यान से देखना और समझना. आखिरी में तुम्ही से प्रश्न पुछुँगा कि क्या समझे?

(निक्कू चुनचाप बैठ जाता है. कुछ बच्चे हँसते है. निक्की की टोली व्दारा नाटक प्रस्तुत किया जाता है.निक्की की टोली में सम्मिलित बच्चों के व्दारा प्रस्तुत नाटक में दिखाया जाता है कि कैसे एक लड़के और लड़की स्कूल नहीं आते थे और बाहर ईधर उधर घूमते रहते थे. उनके इस स्थिति का फायदा उसी क्षेत्र के रहने वाले एक बदमाश उठाता है और दोनों बच्चों को गलत रास्ते पर लगा देता है. परिणाम यह होता है कि लडके को पुलिस पकड़ कर ले

जाती है. और बाल संप्रेक्षण गृह में डाल देती है. वहीं लड़की के माँ-बाप परेशान होकर जल्दी उसकी शादी कर देते हैं और वह लड़की कुछ ही दिनों के भीतर ससुराल वालों के हाथ जलाकर मार दिया जाता है.)

(नाटक समाप्त होने के बाद पोर्ते सर बोलते है.)

पोर्ते सर - आशा है आप लोग निक्की की टोली व्दारा प्रस्तुत इस नाटक के सार को समझ गए होंगे.

सभी लोग - हाँ सर समझ भी गए और हमारी आँखें भी खुल गई.

पोर्ते सर - और निक्कू तुमको समझ आया कि नहीं.

निक्कू - हाँ सर! मैं भी समझ गया हूँ.

पोर्ते सर - तो सबको बतलाओ भाई कि क्या समझे?

निक्कू - यहीं सर कि सभी बच्चों को स्कूल जरूर जाना चाहिए. स्कूल जाने से बच्चे सीखते हैं कि कैसे उनके जीवन में समस्याएँ आसकती है और उन समस्याओं का निदान कैसे किया जा सकता है.

पार्ते सर - निक्कू! तो क्या अब हम लोग समझें कि अब से न केवल तुम बल्कि तुम्हारे सभी साथी स्कूल आऐंगे.

निक्कू - सर! मैं यहाँ सबके सामने कुछ कहना चाहता हूँ.

पोर्ते सर - हाँ निक्कू. बोलो.

निक्कू - यहीं सर? हमें कुछ विषयों को पढ़ने में मजा नहीं आता और इसी कारण स्कूल भी आने को मन नहीं करता. जैसे इस नाटक के व्दारा कठिन बात को मजेदार ढ़ंग से बतलाया गया और हम लोग समझ गए. उसी प्रकार गणित, विज्ञान, अंग्रेजी को भी मजेदार पढ़ाने का उपाय किया जाए.

पोर्ते सर - बहुत अच्छा निक्कू! अब से हम इस बात पर जरूर ध्यान देंगे.

सभी लोग - हाँ सर! निक्कू ने बहुत सुन्दर बात रखी है.

पोर्ते सर - जी! आप सभी की इच्छाओं का ध्यान रखा जाएंगा.

(वर्मा सर सभी आने वाले लोगों को धन्यवाद देते हैं. लोग अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान करते हैं. बच्चे कक्षा में जाकर बैठते हैं)

पंचम - दृष्य

(पोर्ते और वर्मा सर दोनों अपने स्टाफ के अन्य शिक्षकों को प्रेरित कर मा.शा. में पढ़ाए जाने वाले सभी विशयों के कठिन बिन्दुओं को नवाचार, इंटरनेट व पी.एल.सी. के सहयोग से सरल व रोचक बनाने के प्रयास किए. साथ ही एस.एम.सी. व अन्य लोगों के सहयोग से कक्षा को डिजीटल बनाने के दिशा में काम किया गया, जिसकी चर्चा अब गाँवों में होने लगी. यह खबर निक्कू व उसके दोस्तों तक पहुँची और उनके मन में भी स्कूल जाने की ईच्छा हुई.)

मनोहर - कैसे निक्कू! उस दिन तो बोल रहे थे कि सर विषय को रोचक और मजेदार बनाईए, तब हम स्कूल आऐंगे. अब क्या हुआ?

निक्कू - हाँ यार. रमेश भी बोल रहा था कि अब हमें स्कूल जाना चाहिए.

मनोहर -निक्कू! रमेश, बाँबी और सोनू क्या बोल रहे थे, इसको छोड़. तू अपनी बात कर. कल आ जाऊँ बुलाने.

निक्कू - नहीं यार! तू मत आना! मैं आऊँगा.

मनोहर - अगर ऐसा हो गया, तब तो चमत्कार ही समझुँगा.

निक्कू - ठीक है. तू दुआ कर की चमत्कार हो जाए.

मनोहर - जरूर निक्कू.

निक्कू - ठीक है. फिर कल मिलते हैं.

(दोनों अपने-अपने घर की ओर चले जाते है.)

षष्ठम - दृष्य

(निक्कू, बाबी, सोनू और रमेश से मिलकर स्कूल के बारे में बतलाता है. चारो अगले दिन से स्कूल जाने को तैयार होते हैं. इसी बीच रमेश कहता है.)

रमेश - निक्कू मैं तो पहले ही बतला दिया था कि अब स्कूल का माहौल बदल गया है.

निक्कू - हाँ यार. हम ही देर कर दिए.

बॉबी - चलो देर ही सही, पर हो तो रहा है अच्छा ही न.

सोनू - हम जब तक स्कूल के चैखट पर कदम न रखलें, तब तक मत मानों की अच्छा हो रहा है. ऐसा निश्चय तो हम पहले कई बार कर चुके हैं. पर वो कल आया ही नहीं.

निक्कू, रमेश, बाबी - (एक साथ) - इस बार जरूर आएगा सोनू.

सोनू - तो फिर मिलाओ हाथ.

(चारो दोस्त एक साथ हाथ मिलाते है. दूर किसी के घर से रेडियो में गाना बज रहा था -

''आ अपने जीवन से प्यार कर लें.

पढ़ लिखकर अपना जीवन सँवार ले..

चारो दोस्त गाने की बोल दोहराते हुए कल 9.30 में मिलने की बात कहकर अपने घरों की ओर प्रस्थान करते है.)

16

बंद करो अत्याचार

प्रथम - दृष्य

(रागिनी स्कूल से आकर कपड़े बदल रही है. रागिनी की माँ निर्मला रसोई घर में रात के खाने की तैयारी कर रही है. उसी समय मोहल्ले के ही रागिनी के साथ कक्षा-छठवीं में पढ़ने वाली जूही और चम्पा आती है और रागिनी से कहती है)

जूही - अरी ओ रागिनी! तू अभी तक कपड़े बदल रही है. देख हम लोग भी तो तेरे साथ ही आए हैं और कपड़े बदल कर यहाँ भी आ गए. खेलने नही जाना है क्या?

रागिनी की माँ -तुम लोग यहाँ फिर आ गए. मना किया था न कि रागिनी तुम लोगों के साथ खेलने नहीं जाएगी. उसे घर का अभी काम करना है.

रागिनी - जाने दो न माँ. खेलने के बाद काम कर लूँगी.

माँ - तू चुप कर. बड़ा खेलने के बाद काम करेगी. खाने के लिए तो नहीं कहती कि काम करने के बाद खा लूँगी.

चम्पा - चाची! तुम अच्छी नहीं हो.

रागिनी की माँ -ले ले जा यहाँ से! तुम्हारे कहने से मैं अच्छी हो जाऊँगी. बित्ता भर लड़की और मुझे बुरी बोल रही है.

रागिनी -माँ जाने दो न! जूही और चम्पा की माँ उन्हें कुछ नहीं कहती.

माँ - तू भी जबान चला रही है. सब इन्हीं लड़कियों से सीखा होगा. सीधी जाकर बर्तन माँज, नहीं तो रात में भूखी ही सुलाऊँगी और तुम दोनों लड़कियों से कहे देती हूँ, कल से इस घर में कदम रखोगी, तो ठीक नहीं होगा.

(निर्मला, रागिनी के हाथ को पकड़कर रसोई घर की ओर ले जाती है. जूही और चम्पा वहाँ से अपने दूसरे सहेलियों के घर चली जाती है और रागिनी सुबकते हुए बर्तन माँजने लगती है.)

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(आज हफ्ते का अंतिम दिन शनिवार है. रोज की तरह पूर्व मा.शा. सुन्दर नगर में कक्षाएँ लगी हुई है. जूही, चम्पा, नीरा, नीलू सभी अपने-अपने बेंच पर बैठे हुए हैं लेकिन रागिनी की जगह खाली है. जूही की नजर बार-बार दरवाजे पर जाकर ठहर जाती थी कि शायद अब रागिनी आ जाए. कक्षा में श्रीमती कमला भानू मैडम आती है और हाजिरी लेना आरंभ करती है.)

भानू मैडम - रागिनी! रागिनी!

जूही - नहीं आई है मैडम.

भानू मैडम - मैं देख रही हूँ रागिनी इस हफ्ते में एक दिन भी स्कूल नहीं आई है.

विनोद - (उसी कक्षा का लड़का) - मैडम! यह तो रागिनी की आदत है. पहले वह हफ्ते में दो-तीन दिन नहीं आती थी और इस बार पूरा हफ्ता नहीं आई.

भानू मैडम - क्यों जूही तुम्हें कुछ पता है. तुम तो उसके घर के पास रहती हो.

जूही - जी मैडम! मैं पिछले हफ्ते गई थी. उसके बाद तो वह दिखाई भी नहीं दी है.

भानु मैडम - अरे जूही. तो पता करना था न. आखिर वह तुम्हारी अच्छी सहेली है.

चमपा - हम लोग उनके यहाँ जाने से डरते हैं मैडम. उसकी माँ हमें डाँटती है और भगा देती है और कहती है कि रागिनी अभी घर का काम करेगी.

जूही - हाँ मैडम! उसकी माँ उससे बहुत काम करवाती है और छोटी-छोटी बात पर डाँटती भी है. मुझे तो बेचारी पर बहुत दया आती है.

भानू मैडम - ठीक है जूही! आज शाम को पता करने की और कोशिश करना.

जूही - जी मैडम.

भानू मैडम -सपन कुमार. सपन कुमार.

रवि - जी मैडम. वह भी आज नहीं आया है.

भानू मैडम -क्यों नहीं आया है? किसी को पता है.

रवि - हां मैडम! कल मैंने देखा कि सपन का पिताजी उसे डंडे से बहुत मार रहा था.

भानू मैडम - डंडे से मार रहा था! क्यों मार रहा था?

रवि - कोई बतला रहा था मैडम कि सपन ने घर में रखा हुआ दूध जमीन पर गिरा दिया था, इस कारण.

भानू मैडम - दूध के गिरने के कारण डंडे से पीट रहा था.

रवि - हाँ मैडम.

(इन बातों को सुनने के बाद भानू मैडम का कक्षा में मन नहीं लगा. शेश बच्चों की उपस्थिति जल्दी-जल्दी लेकर वह स्टाफ रूम की ओर आने लगी और सोंच रही थी कि छोटी सी बात पर कोई अपने बच्चे को कैसे इतना मार सकता है या बच्चों के पढ़ने-खेलने की उम्र में दिन-रात काम करा सकता है.)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(बाल-अधिकार संरक्षण आयोग व्दारा विभिन्न गाँवों में जागरूकता के उद्देश्य से रैली निकाला जा रहा था. इस कार्य में आस-पास के स्कूलों के बच्चे शिक्षक व पंचगण तथा आयोग व शिक्षा विभाग के अधिकारी भी शामिल हुए थे. आज रैली सुन्दर नगर गाँव की गलियों में निकली हुई है. सामने अधिकारी नारा बोल रहे है, जिसे बच्चे दोहरा रहे हैं.)

अधिकारी - न छीनों बच्चों से बचपन.

खेलें जब तक चाहे मन..''

बच्चे - दोहराते हैं.

अधिकारी - 'मेरे साथ दोहराते जाओ.

बचपन बचाओ, बचपन बचाओ.''

बच्चे - दोहराते हैं.

अधिकारी - ''हम सबने यह ठाना है.

बच्चों को घरेलू हिंसा से बचाना है.''

बच्चे - दोहराते हैं.

अधिकारी - ''खुलकर करो घरेलू हिंसा की बात.

हम सब होंगे तुम्हारे साथ.''

बच्चे - दोहराते हैं.

अधिकारी -''बच्चे रो-रो करे पुकार.

बंद हो उन पर अत्याचार..''

बच्चे - दोहराते हैं.

अधिकारी - ''हम सब अपना फर्ज निभाएँगे.

अत्याचारी को सजा दिलाएँगे.

बच्चे - दोहराते हैं.

(नारा बोलते रैली सुन्दर नगर गाँव की सभी गलियों में घूम रही है. रागिनी के मोहल्ले में जब रैली आती है, वह अपने घर के दरवाजे से झांक कर देखती है. उसे रैली में जूही, चम्पा, रवि और कक्षा 6वीं में पढ़ने वाले सभी बच्चे दिखाई देते हैं. रैली जाने के बाद वह रोते हुए अपने कमरे की ओर चली जाती है.)

चतुर्थ - दृष्य

(संकुल समन्वयक श्री रमानंद पाण्डेय अपने संकुल के सभी शिक्षकों का बैठक लेते हुए बतला रहा है कि बाल संरक्षण आयोग व्दारा उन लोगों के लिए क्या निर्देश है तथा इसे किस प्रकार सभी शालाओं में कार्यान्वित किया जाना है.)

श्री पाण्डेय जी - आप सभी को यह बतलाते हुए प्रसन्नता हो रही है कि मेरे संकुल के सभी गाँवों में बाल अधिकार संरक्षण आयोग व्दारा किया गया जागरूकता का यह कार्य आप सभी के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया. इसके लिए आप सभी को धन्यवाद.

श्री विरेन्द्र यादव - (एक शिक्षक) - सर. यह तो हम सभी शिक्षकों का कर्तव्य है. ऐसे कार्यक्रमों की सचमुच निरंतर जरूरत है.

श्री पाण्डेय जी - हाँ यादव जी. हमें इस कार्यक्रम के उद्देश्य की निरंतरता को बनाए रखना है.

श्री भरत राम नागेश (शिक्षक) - और सर! क्या हम इस कार्य में अपने शाला के बच्चों को जोड़ सकते है?

श्री पाण्डेय जी - अरे भाई नागेश जी. बच्चे ही तो इस कार्यक्रम की आत्मा है. हमारे बच्चे ही तो घरेलू हिंसा के शिकार होते है. उनके बिना इसकी सफलता के बारे में सोंच ही नहीं सकते.

श्री यादव जी - हम बच्चों को कैसे जोड़ सकते हैं सर?

श्री पाण्डेय जी - यादव जी! इसके लिए मेरे मन में एक योजना है और वह यह है कि हम अपने शालाओं के कुछ चयनित बच्चों का एक समूह बनाएँगे और इस समूह का नाम होगा ''निक्की की टोली.''

श्री नागेश जी - निक्की की टोली. वाह पाण्डेय जी! जितनी अच्छी आपकी योजना है, उतना ही सुन्दर इसका नाम ''निक्की की टोली''.

श्री पाण्डेय जी - (हँसते हुए) - हाँ नागेश जी! निक्की की टोली और इस टोली के बच्चों का काम होगा ऐसे बच्चों की पहचान करना जो घरेलू हिंसा चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक के शिकार हो और फिर शिक्षकों के साथ चर्चा कर उनसे मुक्ति दिलाने का प्रयास करना.

श्री यादव जी - हाँ सर! और जब बच्चों व हमारे प्रयासों से भी ऐसे दुष्ट माता- पिता अपने व्यवहार में सुधार न करे, तब तो बाल अधिकार संरक्षण आयोग और पुलिस थाने का रास्ता खुला ही है.

श्री पाण्डेय जी - बिल्कुल सही यादव जी. पर हमें यह याद रखना होगा कि पुलिस थाना आखिरी विकल्प हो पहला नहीं.

श्री नागेश जी - जरूर याद रखेंगे सर! और अब मैं भी एक नारा देता हूँ.

सभी शिक्षक - स्वागत है नागेश सर.

श्री नागेश जी - ''शिक्षक और बच्चे जब होंगे साथ.

होगी सुखद, समृद्ध बचपन की बात..''

सभी शिक्षक - नारा दोहराते हैं.

(संकुल की बैठक समाप्त होती है और सभी शिक्षक अपने- अपने गंतव्य की ओर चले जाते है.)

पंचम - दृष्य

(लगभग तीन माह का समय व्यतीत हो चुका था. संकुल समन्वयक श्री पाण्डेय जी इस बात से संतुष्ट था कि उसके संकुल के सभी पूर्व मा. व हाई/हायर सेकेण्डरी स्कूल में ''निक्की की टोली'' ने कार्य करना आरंभ कर दिया है और ऐसे सभी बच्चे जो घरेलू हिंसा के शिकार थे, उनका जीवन बदल रहा है. पूर्व मा. शा. सुन्दर नगर की भानू मैडम कक्षा में हाजिरी ले रही है.)

भानू मैडम - रवि.

रवि - जी मैडम.

भानू मैडम - पंकज, उमेंश, रमा, उर्वशी .....

सभी - जी मैडम.

भानू मैडम -रागिनी. रागिनी.

चम्पा - मैडम. आज वह नहीं आई है.

भानू मैडम -क्यों? क्या उसके साथ पहले वाली बात फिर से होने लगी है?

जूही - नहीं मैडम. मैं और चम्पा स्कूल आते समय घर गए थे. सचमुच उसकी तबियत खराब है.

भानू मैडम - (हँसते हुए) - लगता है उसकी माँ तुम लोगों को खूब डांट-डपट कर भगा दी होगी. क्यों ऐसा ही है न?

चम्पा - नहीं मैडम. अब चाची का भी व्यवहार बिल्कुल बदल गया है. हमें रोज अपने यहाँ खेलने के लिए बुलाती है और नहीं जाने पर रागिनी को ही हम लोगों के पास भेज देती है.भानू मैडम - ये तो अच्छी बात है और इसका सारा श्रेय तुम लोगों की ''निक्की की टोली'' को जाता है. अच्छा रागिनी और रवि को भी शामिल किए हो की नहीं.

जूही -हाँ मैडम! शामिल कर लिए हैं.

उमेश -और मैडम! सपन को तो उसके पापा अब रोज आइसक्रीम भी खिलाता है.

सभी बच्चे और भानू मैडम - (खिल-खिलाकर हँसते है) - बहुत अच्छा! बच्चों को ऐसा ही प्यार मिलें. यह उनका अधिकार है.

17

डिजीटल इंडिया

प्रथम - दृष्य

(श्री रामदीन चैहान के बेटे और नाती शहर से गाँव आए हुए हैं. उनके नाती ओम प्रकाश कक्षा आठवी व नातिन कल्याणी कक्षा दसवीं में पढ़ रहे हैं. जब से वे गाँव आए है, तब से अपने-अपने मोबाईल पर लगे हुए हैं. उन्हें देखकर रामदीन चैहान अपनी पत्नी श्रीमती रमावती से कहता है.)

रामदीन - सुखनंदन की माँ! आज कल के बच्चों को देख रहे हो. जब से यहाँ आए हैं, अपने-अपने डब्बे में ही लगे हुए हैं. ऐसा नहीं सोंच रहे हैं कि चलों कुछ समय दादा-दादी से बात कर लें.

रमावती - आप दादा-दादी की बात कर रहे हैं. मैं तो उन्हें अपने माँ-बाप से भी बात करते नहीं देखी हूँ.

रामदीन - तुम सही कह रही हो. सुखनंदन और बहु को तो उन्हें समझाना चाहिए न.

रमावती - जैसे माँ-बाप हैं, वैसे उनके बेटे-बेटी! अरे सुखनंदन और बहु भी तो दिन-रात उसी में लगे रहते हैं.

रामदीन - सुखनंदन की माँ. पर मैं एक चीज नहीं समझ पाता कि उस डिब्बे में ऐसा क्या है कि जिसे देखो वहीं उसमें डूबे रहते हैं.

रमावती - (हँसते हुए) इसके बारे में जितना तुम जानते हो, उतना ही मैं भी. ये कल्याणी को बुलाकर पुछ लो कि उस डिब्बे में क्या जादू है.

रामदीन - तुम ठीक कह रही हो. आज पुछ ही लेता हूँ.

(रामदीन आवाज देकर कल्याणी को बुलाता है. कल्याणी अपने दादा जी के पास आती है और बोलती है.)

कल्याणी - जी दादाजी. आपने बुलाया.

रामदीन - हाँ बेटी. मैं यह पूछने के लिए बुलाया हूँ कि दो चार मिनट पढ़ते लिखते भी हो कि बस इस डिब्बे से ही खेलते रहते हो.

कल्याणी - दादाजी. मैं अपने इस मोबाईल से ही पढ़ती हूँ.

रामदीन और रमावती (एक साथ) - मोबाइल से. इससे कोई भला कैसे पढ़ते-लिखते होंगे और पढ़ाता कौन है.

कल्याणी - दादा-दादी देखो. आजकल बहुत से स्कूलों में कम्प्यूटर के व्दारा इंटरनेट की सहायता से बहुत से कोर्स की आनलाईन पढ़ाई होती है. इसमें संबंधित कोर्स को विडियो के व्दारा विशेशज्ञों व्दारा समझाया जाता है. यह मोबाईल भी कम्प्यूटर ही है. आज संसार का हर काम जैसे- किसी को सूचना देना या लेना, पैसा भेजना, मौसम की जानकारी इत्यादि सभी कुछ इससे हो जाता है. यहाँ तक की बिमारी का पता लगाकर आॅपरेशन भी किया जाता है.

रमावती - कल्याणी के दादा अब कुछ समझे.

रामदीन -और तुम कल्याणी की दादी.

(रामदीन और रमावती एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराने लगते हैं. पास बैठी कल्याणी भी मुस्कुराने लगती है.)

<u>व्दितीय - दृष्य</u>

(रामदीन के बेटे और बहु अपने बच्चों के साथ शहर चले गए थे. शाम का वक्त है. रामदीन चाय पीकर घर के बरामदे में कुर्सी पर बैठा सोंच रहा है कि उनके बचपन के दिन और अब में कितना अंतर आ गया है. उसी समय उसके बचपन का मित्र बालमुकुंद तिवारी आता है. उसे देखकर रामदीन कहता है.)

रामदीन - अरे आओ यार बालमुंकुद. तुम्हारा तो कुछ पता ही नहीं चलता. कितने दिन बाद ईधर का रास्ता पकड़े हो.

बाल मुंकुद - (पास की कुर्सी में बैठते हुए) - अरे क्या बतलाऊँ रामदीन. कोई भी बच्चे घर में रहते नहीं. सब शहरों में जाकर रहने लगे. ऐसे में घर की जिम्मेदारी से फुर्सत ही नहीं मिल पाता. और तुम अपनी सुनाओ. थोड़ा बुझे-बुझे से दिख रहे हो.

रामदीन - नहीं यार. ओ क्या है कि अभी सुखनंदन बच्चों के साथ आया था. कुछ दिन रूका और चला गया. बस उन्हीं की याद आ रही है और कम्बख्त अखबार वाला भी आज अखबार नहीं लाया. उसी में कुछ वक्त गुजर जाता था.

बाल मुंकुद - यार रामदीन तुम भी किस जमाने में रह रहे हो. माना की हमारा जन्म बीसवीं सदी में हुआ पर अब इक्कीसवीं सदी चल रहा है भाई! अपने आप को इसके रंग में ढ़ालो. नहीं तो पिछड़ जाओगे.

रामदीन - यार बालमुंकुद. ये क्या बीसवीं-इक्कीसवीं सदी की बात कर रहे हो. मेरा तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है.

बाल मुकुंद - अरे भाई. मोबाईल तो देखे ही होगे न और न भी देखे होगे तो सूने होगे.

रामदीन - हाँ हाँ बाल मुकुंद. मेरे बेटे-बहु, नाती और नातिन सभी के पास मोबाईल है.

बाल मुकुंद - यार तो एक अपने लिए भी खरीदवा लो.

रामदीन - तो उससे क्या होगा?

बालमुकुंद - भाई! उससे जब चाहे और जितना समय तक चाहे अपने बेटे बहु, नाती और नातिन से चेहरे देखते हुए बात कर सकते हो और जब कभी अखबार नहीं आया तो अखबार भी पढ़ सकते हो और तो और अपने समय के फिल्म गंगा जमुना, अनाड़ी, हम दोनो भी देख सकते हो.

रामदीन - (हँसते हुए) - यार बाल मुकुंद तुम ये सब करते हो.

बाल मुकुंद - हां यार! मैं तो अपने बेटे से एक मोबाईल ले लिया हूँ और मुझे अब कोई कमी महसूस नहीं होती.

रामदीन - पर उस डिब्बे को चलाना कैसे जानें?

बाल मुकुंद - यार! इसमें भी कोई समस्या नहीं है. आज कल सभी स्कूलों में ''निक्की की टोली'' बना हुआ है. मेरी नातिन चंचल इसके बारे में बतलाई थी. मैं यहाँ स्कूल के ''निक्की की टोली'' के बच्चों से मिला और उन्होंने सब सीखा दिया.

रामदीन - मतलब तुम इक्सीसवीं सदी के बन गए हो.

बाल मुकुंद - हाँ यार.

(मुस्कुराते हुए बाल मुकुंद अपना घर चला जाता है.)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(सोमवार का दिन है. पूर्व मा. शाला पारस नगर के प्रधान पाठक श्री रमाशंकर मिश्रा कक्षा आठवीं में गणित पढ़ा रहा है. उसी समय रामदीन अपनी पत्नी के साथ स्कूल में प्रवेश करता है. उन्हें देखकर मिश्रा जी बाहर आकर बैठने को कहता है और बोलता है.)

मिश्राजी -कहिए चैहान जी! बड़े अर्से बाद स्कूल में आए हैं.

चैहान जी - हाँ मिश्रा जी. हमारे बच्चे तो इसी स्कूल से पढ़े और पास हुए. अब वे अपने बच्चों को शहरों में पढ़ाते हैं. ऐसे में मन में आता है कि स्कूल जाकर क्या करेंगे?

मिश्राजी - नहीं चैहान जी. आपके खुद के बच्चे न भी पढ़े तो क्या हुआ. आखिर यहाँ पढ़ने वाले सभी बच्चे आपके बच्चे जैसे ही हैं. कभी कभी आकर हाल-चाल ले लिया करें.

चैहान जी - हाँ भाई! इसीलिए तो आया हूँ. ओ बाल मुकुंद बतला रहा था कि आपके स्कूल में ''निक्की की टोली'' बना है. बस उसी से मोबाईल चलाने के बारे में सींखना है.

मिश्राजी - हाँ चैहान जी. यह तो बहुत अच्छी बात है. मैं अभी निक्की की टोली के बच्चों को बुलाता हूँ.

(मिश्राजी ''निक्की की टोली'' में सम्मिलित सभी बच्चों को बुलाता है और कहता है कि इन्हें मोबाईल चलाना सींखना है. टोली के एक छात्रा यामिनी जो चैहान जी के पड़ोस में रहती है, कहती है.)

यामिनी - दादा जी! क्या दादीजी भी मोबाईल चलाना सीखेगी?

चैहान जी - हाँ बेटी. ये भी सीख जाए तो अच्छा ही होगा.

यामिनी - दादाजी. अभी आपके पास मोबाईल है.

चैहान जी - (धीरे से अपना मोबाईल निकालते हुए) - हाँ बेटी. इसे कल ही मैं हर प्रसाद के बेटे गौरी शंकर को शहर भेजकर मँगाया हूँ.

यामिनी - पर दादाजी. इसको पूरा सींखने में आपको कुछ दिन लगेगा.

रमावती - बेटी. तो क्या हमें रोज स्कूल आना पड़ेगा.

यामिनी - नहीं दादी! स्कूल से घर जाने के बाद मैं रोज आपके यहाँ आकर थोड़ा-थोड़ा करके सीखा दुँगी.

चैहान जी - बेटी! हम दोनों मोबाईल चलाना सीख तो जाएँगे न.

यामिनी - क्यों नहीं दादाजी1 सीखने का कोई उम्र नहीं होता. जब मन में इच्छा हो तब जरूर सीख जाएँगे.

रमावती - तो ठीक है बेटी! हम लोग घर जा रहे हैं और तुम आज से ही रोज आ जाया करना.

यामिनी - जी दादी! मैं जरूर आऊँगी.

(चैहान जी अपनी पत्नी रमावती के साथ प्रधान पाठक श्री मिश्राजी को धन्यवाद देते हुए अपने घर की ओर जाने लगते है.)

चतुर्थ - दृष्य

(यामिनी रोज शाम को चैहान जी के यहाँ मोबाईल सींखाने जाती. धीरे-धीरे ही सही चैहान जी काफी कुछ मोबाईल चलाना सींख गया था. अब वह अपने बेटे-बहु और नाती-नातिन से व्हाट्सएप, स्काईएप और फेसबुक से भी जुड़ गया था. यहाँ तक की आॅन लाईन बैकिंग, रेल्वे टिकट व अखबार इत्यादि में भी उपयोग करने लगा था. रमावती को भी अब खुद सीखाने लगा था. एक दिन रास्ते में बाल मुकुंद मिलता है और कहता है.)

बाल मुकुंद - भाई रामदीन! व्हाट्सएप पर तुम्हारा और भाभीजी का फोटो देखकर अच्छा लगा.

रामदीन - यार! इसका पूरा श्रेय तुमको जाता है. तुमने ''निक्की की टोली'' के बारे में बतलाकर बहुत अच्छा किया.

बाल मुकुंद - हाँ रामदीन! अभी भी हमारे गाँव में ऐसे बहुत से लोग हैं जो मोबाईल में बात करने को छोड़कर कुछ नहीं जानते. ऐसे सभी लोगों को हमें भी ''निक्की की टोली'' के साथ मिलकर सीखाने का प्रयास करना होगा.

रामदीन - हाँ यार. तुम सहीं कह रहे हो और यह काम तो मैंने शुरू भी कर दिया है.

बाल मुकुंद -क्या! शुरू भी कर दिया है. किससे से?

रामदीन -अरे यार! उसी श्याम सुन्दर से जो हमारे साथ चैथी में पढ़ता था.

बाल मुकुंद -यानी श्याम सुन्दर भी अपने को ईक्कसवीं सदी का बना रहा है.

रामदीन -हाँ यार!

(दोनों हँसते हुए अपने-अपने गंतव्य की ओर चले जाते हैं.)

पंचम - दृष्य

(रामदीन के बेटे अपने परिवार के साथ गर्मी के छुट्टी में गाँव आए हुए हैं. दोनों बच्चे बहुत खुश हैं और मन में सोंच के आए हैं कि इस बार दादा-दादी दोनों से बहुत सी कहानियाँ सुनेंगे. बच्चों को दादा-दादी के व्दारा मोबाइल चलाना सींखने की बात पहले से पता रहती है. कल्याणी अपने दादाजी के पास आकर कहती है.)

कल्याणी - दादाजी! जब से आप लोगों ने मोबाईल का उपयोग करना सीखा है, तब से बिल्कुल भी नहीं लगता कि आप लोग हमारे साथ नहीं रहते.

चैहान जी - (अपने मोबाईल में कुछ करते हुए) - हाँ बेटी! हमें भी ऐसा ही लगता है.

कल्याणी - और दादीजी! जानती हो, ओ शहर में रहने वाली आँटी को जब पता चला की आप भी मोबाईल चलाती हैं, तो विश्वास ही नहीं कर नही थी.

रमावती - (अपने मोबाईल में कुछ करती हुई) - क्यों विश्वास नहीं कर रही थी? ऐसा कहाँ पर लिखा है कि केवल शहर वाले ही मोबाईल चलाना सींख सकते हैं, गाँव वाले नहीं.

(इसी बीच वहाँ ओम प्रकाश (कल्याणी का भाई) आता है और अपने दादा-दादी से नाराज होते हुए कहता है.)

ओम प्रकाश - दादाजी! दादीजी! मैं कब से देख रहा हूं कि दीदी आप लोग से बोलती जा रही है और आप दोनों अपने-अपने डिब्बे में डूबे हुए हो. थोड़ा बहुत हम लोगों से बात भी कर लिया कीजिए.

रामदीन और रमावती - (एक साथ) - वहीं तो कर रहे हैं बेटे. यह देखो. तुम्हारी दीदी जितनी भी बात बोली है, वह सब विडियो बनाकर इस डिब्बे में बंद कर लिए है और जब तुम लोग यहां से चले जाओगे इसे हम देखेंगे.

(दोनों बच्चे दादा-दादी से लिपट जाते है.)

18

सजग रहो

प्रथम - दृष्य

(रंजना स्कूल से आने के बाद अपने कमरे में रखे कम्प्यूटर के सामने जाकर बैठ गई. ईधर सागर पहले से आकर छत पर बैठे अपने मोबाईल पर कुछ कर रहा था. उसी समय रंजना की माँ माया आवाज लगाती है.)

माँ -रंजना! प्रकाश! अरे आओ! नाश्ता बन गया है.

रंजना -जी माँ! अभी आई!

(थोड़ी देर इंतजार करने के बाद माँ फिर आवाज लगाती है.)

माँ -अरे तुम दोनों सुन भी रहे हो की नहीं.

रंजना -बस माँ. आ ही रही हूँ.

माँ -जब से आवाज दे रही हूँ, तब से आ रही हूँ, आ रही हूँ, ही बोले जा रही है.पर आने का नाम नहीं ले रही है.

रंजना -बस माँ दो मिनट और.

माँ -तुम दोनों बच्चे परेशान करके रख दिए हो. जब से स्कूल से आए हो एक कम्प्यूटर के पास जाकर बैठ गई है और दूसरा छत पर मोबाईल में न जाने क्या कर रहा है. आने दो आज तुम्हारे पापा को उनको सब बतलाती हूँ.

रंजना - लो माँ आ गई. अब जल्दी से नाश्ता दे दो.

आकाश -और माँ? मैं भी आ गया?

माँ - हे भगवान! तुम लोग स्कूल से कब के आ गए हो और बिना यूनिफार्म बदले कम्प्यूटर और मोबाईल में लग गए थे? तुम लोगों की आदत तो बिगड़ती ही जा रही है. तुम्हारे पापा से मैं आज ही बात करती हूँ.

(यह सब बोलते-बोलते माया दोनों बच्चों को नाश्ता देकर अन्य काम करने में व्यस्त हो जाती है? रंजना और प्रकाश कपड़े बदलकर फिर से कम्प्यूटर और मोबाईल चलाने में लग जाते हैं.)

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(दूसरे दिन सुबह करीब दस बजे रंजना और प्रकाश के घर से कुछ दूरी पर रहने वाले महेश्वर, जो कक्षा बारहवीं का छात्र है, के घर के पास पुलिस की गाड़ी सकती है. कुछ पुलिस वाले घर के अंदर से महेश्वर को पकड़कर गाड़ी में बैठाकर थाने ले जाते हैं. सभी मोहल्ले वाले देखते रहते है?)

आकाश - (महेश्वर के साथ पढ़ने वाले एक अन्य ल़ड़का विनय से) - विनय! ये पुलिस वाले महेश्वर को पकड़कर क्यों ले गए?

विनय - मुझे भी पता नहीं यार. महेश्वर ने तो मुझे कभी ऐसा कोई चीज नहीं बतलाया था. अशोक को कुछ पता होगा. चलो उसी से पूछते हैं.

आकाश और विनय - ए अशोक! तुमको पता है क्या कि पुलिस महेश्वर को क्यों पकड़कर ले गई?

अशोक - निश्चित तो नहीं बतला सकता? हाँ कुछ अंदाजा जरूर लगा सकता हूँ.

आकाश - (थोड़ा गुस्साते हुए) - ए अशोक! तुम कोई भविष्य वक्ता हो क्या जो अंदाज या अनुमान लगाकर बतलाओगे?

अशोक - तो फिर भाग यहाँ से. जा किसी और से पूछ ले.

विनय - (शाँत स्वर में) - ए अशोक! लो ना यार! इसकी बात का क्या बूरा मानना. चल जल्दी से अपना अंदाजा ही बतला दे.

अशोक -तू कहता है तो बतलाता हूँ. सुन! जिस समय पुलिस घर के अंदर महेश्वर को पकड़ रही थी, उस समय उसकी माँ बार-बार कह रही थी कि बेटा तुझे इसी कारण मना करती थी कि दिन-रात मोबाईल और कम्प्यूटर में मत डूबा रह? अब भोग अपनी करनी का फल.

विनय -तो तुम्हारा मतलब है कि मोबाईल से किसी लड़की के साथ कुछ किया होगा.

अशोक -हाँ यार! पुलिस के धर-पकड़ से तो ऐसा ही लग रहा है

आकाश -चल यार विनय! किसी दूसरे से पुछते हैं. ए तो ऐसे ही फेंक रहा है.

अशोक - मुझे पहले से पता था कि तुम नहीं मानोगे. और छत में बैठकर जो रात तक मोबाईल में लगे रहते हो न, देखना एक-दिन तुम भी महेश्वर के जैसे जाओगे.

विनय -अच्छा ठीक है अशोक! चलते है?

(प्रकाश और अशोक के बीच झगड़े की आशंका को भाँपकर विनय प्रकाश को घर की ओर ले आता है. अशोक भी वहाँ से चला जाता है.)

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(रंजना और आकाश के पिताजी श्री किशोर रजवाड़े शाम को आफिस से घर आता है! रात में माया अपने पति के साथ-साथ बच्चों को खाना खिलाने व अन्य काम निपटाकर अपने कमरें में सोने जाती है. किशोर अभी भी अपने बिस्तर पर पड़े जाग रहा हैं. बगल में बैठकर माया बोलती है.)

माया - रंजना के पापा. कुछ दिनों से मैं आपसे कुछ बोलना चाह रही हूँ.

किशोर - (बीच में) - अरें! तो बोलती क्यों नहीं. कौन रोक रखा है बोलने से?

माया - ओ महेश्वर वाली बात तो सूने ही होंगे.

किशोर - हाँ सुना हूँ. पर उसके बारे में क्या बोलना चाहती हो. जैसा किया वैसा भरा.

माया - वो तो ठीक हैं रंजना के पापा! मुझे अपने बच्चों की चिन्ता होती है. स्कूल आने के बाद और स्कूल जाने के पहले रोज कम्प्यूटर और मोबाईल में ही लगे रहते हैं. मना करती हूं तो कुछ सुनते भी नहीं. आपको क्या है, दिन भर घर से बाहर रहते हो.

किशोर - अरे तुम चिन्ता मत करो.

माया - चिंता मत करूँ. कैसे पिता हो. कहीं ऊँच-नीच हो गया तो क्या करेंगे?

किशोर - रंजना की माँ. मैंने बोला न कि तुम चिंता मत करों. हमने कुछ उपाय सोंच रखा है.

माया - हमने. आपके साथ और कौन-कौन शामिल है.

किशोर - यहाँ के स्कूल के प्राचार्य, कुछ बच्चों के पिताजी और अपने गाँव के सरपंच महोदय.

माया - तो आप सभी ने मिलकर क्या सोंचा है?

किशोर - देखो रंजना की माँ. तुम इतना तो जानती हो कि आज तकनीकी का युग है. ऐसे में हमारे क्या सभी के बच्चों को कम्प्यूटर और मोबाईल की जानकारी होनी ही चाहिए. रह गया सवाल इंटरनेट के सही उपयोग करने और न करने की, तो इसके लिए हम सब कोई पुलिस विभाग के साइबर क्राईम ब्राँच गए थे. वहाँ अधिकारियों ने बोला है कि वे लोग स्कूल, स्कूल जाकर शिविर लगाकर बच्चों को इसके सहीं उपयोग के बारे में बतलाएँगे.

माया - रंजना के पापा. यह तो बहुत अच्छी बात है. मैं तो भगवान से प्रार्थना करूँगी की रंजना और आकाश के स्कूल में यह शिविर जल्दी से जल्दी हो.

किशोर - रंजना की माँ. अब तो नहीं कहोगी न कि दिनभर घर से बाहर रहते हो.

माया - (हँसते हुए) - कभी नहीं.

किशोर - तो फिर सोएँ. लाइट बंद कर दो.

(माया लाइट बंद करने के बाद अपने बिस्तर पर जाकर सो गई. बहुत दिनों बाद आज सोते ही उसे नींद आ गई.)

चतुर्थ - दृष्य

(दो तीन दिन बाद शा.उ.मा.शा. चम्पक नगर में साइबर क्राइम से जुड़े अधिकारी शिविर में भाग लेने आए हुए थे. संस्था के प्राचार्य श्री दिवाकर महेश्वरी, समस्त शिक्षकगण, अभिभावक, सरपंच व सभी बच्चे उपस्थित थे. साईबर क्राईम से आए अधिकारी श्री विनोद तिवारी ने कहना आरंभ किया.)श्री तिवारी जी-आज के इस तकनीकी युग में किसी भी बच्चे को पूर्ण रूप से इंटरनेट से दूर कर दें, यह तो बहुत बड़ा अन्याय होगा. लेकिन यहाँ हम केवल यह बतलाने आए है कि इंटरनेट का उपयोग हम ज्ञान अर्जन और आवश्यक सूचनाओं के लिए करें.

आकाश - सर! कोई बच्चा इंटरनेट का गलत उपयोग कैसे करना सीखता है?

श्री तिवारी जी-बच्चों ग्यारह से लेकर अठारह साल का उम्र बच्चों के जीवन में परिवर्तन का समय होता है. इस समय बच्चों में बहुत सारे शारीरिक और मानसिक बदलाव आता है, जो उनके विचारों को बदलता है. जिज्ञासा से भरपुर बच्चों का मन वह सब कुछ जानने का प्रयास करने लगता है और वह इंटरनेट का गलत उपयोग करना सींखने लगता है.

रंजना - सर! ऐसे में बच्चों को कहाँ-कहाँ पर नेट का उपयोग नहीं करना चाहिए?

श्री तिवारी जी- देखो बेटी! कहाँ उपयोग करें कहाँ नही करें. यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है. आप लोगों में से बहुत से बच्चे फेस बुक और व्हाट्सएप चलाते होंगे. यहाँ पर हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम उसी व्यक्ति को अपना दोस्त बनाए या बने, जिन्हें हम भलि-भाँति जानते हैं और केवल उन्हीं सूचनाओं या संदेश को आगे भेजे जो

सही हो. इसके अतिरिक्त कभी किसी को तंग न करें और अपना मोबाईल व सिम अपनी अनुपस्थिति में किसी और को उपयोग न करने दें.

सरपंच महोदय- अच्छा सर! अभी कुछ समय पहले ब्लू व्हेल गेम का प्रकरण बहुत चला था? बच्चे इसके चक्कर में कैसे फँसते गए?

श्री तिवारी जी- सरपंच महोदय! जैसा मैंने शुरू में ही बतलाया कि बच्चे अपने जिज्ञासा शाँत करने के लिए ऐसे खेलों या अन्य चीजों में फँसते चले जाते हैं और फँसाने वाला व्यक्ति इसका फायदा उठाता है. जैसे इस गेम के कारण बहुत से बच्चों को आत्म हत्या करनी पड़ी.

अशोक - सर! गलत इरादे से अगर कोई लड़का या लड़की किसी को तंग करता है, तब क्या करना चाहिए?

श्री तिवारी जी- हमारे साईबर ब्रांच में इसकी तुरन्त शिकायत करना चाहिए. फिर हम ऐसे लोगों को पकड़कर कानूनी कार्यवाही करते हैं. आप लोगों को जानकर खुशी होगी की इसके लिए सख्त कानून है.

विनय - सर. इंटरनेट के गलत उपयोग से लड़के ज्यादा प्रभावित है या लड़कियाँ.

श्री तिवारी जी- देखो बेटे! इंटरनेट लड़का या लड़की में भेद नहीं करता. पर हमारे समाज में अभी भी केवल डर के कारण लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा मोबाईल का उपयोग कम करने दिया जाता है.

प्राचार्य - (बीच में) - सर! हमारे बच्चे इंटरनेट के खतरों से बचे रहे, इसके लिए आगे हम क्या कर सकते है?

श्री तिवारी जी- प्राचार्य महोदय, इसके लिए अब तक हमने जितने भी शालाओं में यह शिविर आयोजित किया है, वहाँ-वहाँ बच्चों का समूह बनाए हैं, और यहां भी ‘‘निक्की की टोली’’ बनाएँगे. यह टोली अन्य बच्चों को क्या बुरा है, क्या अच्छा है, इसके बारे में बतलाकर जागरूक करने का कार्य करेंगे.

प्राचार्य - बहुत अच्छा तिवारी जी. आपने बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से बच्चों को समझाया है.

तिवारी जी - धन्यवाद प्राचार्य महोदय.

(प्राचार्य महोदय व्दारा आज के कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को धन्यवाद दिया जाता है और सभी अपने नियत स्थान की ओर जाने लगते है.)

पंचम - दृष्य

(शा.उ.मा.शा. चम्पक नगर में ''निक्की की टोली'' बन चुकी है. इसमें आकाश, विनय, रंजना, सुमन, कुसुम, अशोक और कुछ अन्य विद्यार्थी शामिल होकर अपना काम करते हुए छात्रों के साथ-साथ गाँव के अन्य लोगों को भी जागरूक करने का काम कर रहे है. ''निक्की की टोली'' गाँव में निकली हुई है. आकाश विनय से कहता है.)

आकाश -यार विनय! काश! यह टोली पहले बन गई होती तो महेश्वर को जेल जाना नहीं पड़ता.

विनय -हाँ आकाश! तुम ठीक कह रहे हो! पर यह भी सोचो न कि हम केवल उन बच्चों या लोगों को जागरूक कर सकते हैं, जो गलती से इसका दुर्पयोग करते है. अगर हमारे प्रयासों के बाद भी कोई गलती करना न छोड़े तब हम अब भी कुछ नहीं कर सकते.

आकाश -हाँ यार! पर महेश्वर गलत लड़का नहीं है. वह सुधर सकता था.

अशोक -(बीच में) - अरे भाई! जब वह जेल से आएगा, तब उसे समझा देंगे. तुम इतना चिंता क्यों कर रहे हो? अपनी देख! छत पर जाना बंद किया की नहीं.

आकाश -(मुस्कुराते हुए) - भविष्यवक्ता महाराज. वो तो मैंने उसी दिन से छोड़ दिया था, जब से महेश को पुलिस पकड़कर ले गई थी.

अशोक -(मजाक करते हुए) - चलो! निक्की की टोली की शुरूआत तो अच्छी हुई जो तू समझ गया.

(सभी हँसते हुए अपने-अपने घरों की ओर चले जाते हैं. घर पहुँचकर रंजना और आकाश अपनी माँ से कहते हैं.)

रंजना और आकाश -माँ! माँ. बड़ी जोर की भूख लगी है. जल्दी से कुछ नाश्ता हो तो दे दो.

माँ -क्यों? पहले तो मेरे बार-बार बुलाने पर भी अभी आ रहे हैं, अभी आ रहे हैं, बोल के घंटो लगा देते थे और अब घर में घुसे नहीं की नाश्ता. जाओ अपने-अपने डिब्बे से जुड़ जाओ.

रंजना -क्या माँ. आप तो ऐसे बोल रही हैं, जैसे हम पहले गलती करते थे. हाँ गलती करते थे, पर वैसा नहीं जिसे अपराध माना जाता है.

आकाश - और हाँ मां. अब हम पहले की तरह असिमिति इंटरनेट का उपयोग नहीं करेंगे. जहाँ जरूरत होगी वहाँ अवष्य करेंगे.

माँ - अरे बेटे! वो तो मैं मजाक कर रही थी. मैं अपने बच्चों को नहीं पहचानुगी. फिर तुम लोग ''निक्की की टोली'' के बच्चे हो.

रंजना और आकाश - माँ! अब तो नाश्ता दे दो. (माँ बच्चों को नाश्ता देती है. सभी बातें करते हुए नाश्ता करने लगते है.

19

मन की बात

प्रथम - दृष्य

(शाँति इस वर्ष कक्षा 12 वीं में पढ़ रही है. उसके घर वाले गर्मी में उसकी शादी करने की तैयारी कर रहे हैं. वह अभी शादी करना नहीं चाहती. पर अपने माँ- बाप दोनों से कहने की हिम्मत नहीं कर रही है. वह उदास रहने लगी. उसकी सहेली संध्या उदास देखकर पुछती है.)

संध्या - शाँति. मैं बहुत दिनों से देख रही हूं कि तुम खोई-खोई रहती हों. आखिर बात क्या है?

शाँति - कुछ नहीं संध्या. ऐसे ही? कभी-कभी भविष्य की बातों को लेकर सोंचने लगती हूँ.

संध्या - भविष्य की बातों को लेकर. अच्छा? कौन से काँलेज में पढ़ना है, कहाँ पढ़ना है, इस बात को लेकर अभी से चिंता कर रही हो.

शाँति - नहीं संध्या. काँलेज पढ़ने वाली बात नहीं है.

संध्या - अरे भाई. ऐ बात नहीं है ओ बात नहीं है. तो फिर बात क्या है? कि बात-बात में कोई राज है और अगर राज है भी तो तुम मुझसे नहीं कहोगी तो किससे कहोगी. मैं तुम्हारी अच्छी सहेली जो हूँ.

शाँति - हाँ संध्या. दरअसल बात यह है कि बारहवीं परीक्षा के बाद घर वाले मेरी शादी करने की तैयारी कर रहे है?

संध्या - और तुम भी चाहती है कि तेरी शादी हो जाए. तो फिर उदास क्यों हो? प्रसन्न रहो.

शाँति - यहीं तो बात है. मैं नहीं चाहती की मेरी शादी हो. मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं, कुछ करना चाहती हूँ.

संध्या - तो इसमें उदास होने की क्या बात है. सीधा-सीधा बोल दे की मुझे अभी शादी नहीं करना है?

शाँति - यहीं तो मुश्किल है संध्या! किससे कहुँ?

संध्या - अरे भाई? अपने माँ-बाप से और किससे से.

शाँति - अरे बाप रे. मम्मी, पापा से. मर जाऊँगी पर नही बोल सकती. आज तक हमारे घर में कोई भी अपने माता-पिता के फैसले पर बातचीत करना तो दूर उनके सामने खड़े होने या बैठने की भी हिम्मत नहीं किए है. न मेरे पापा, चाचा या बुआ अपने पापा से और न मैं और सुजीत मम्मी, पापा से.

संध्या - बड़ा अजीब घर है शाँति तुम्हारा. ऐसे घर में तो मैं पल भर नहीं रह पाती. जानती हो हमारे घर में सब कोई अपने मन की बात एक-दूसरे से कह लेते है. न कोई डर न कोई शक.

शाँति - हमारे यहाँ ऐसा बिल्कुल नहीं है संध्या.

संध्या - तब तो सचमुच तुम्हारी समस्या बड़ी है. मैं देखती हूँ कि कुछ कर सकूँ.

(संध्या, शाँति के घर से कल स्कूल जाने के समय मिलने की बात कहकर अपने घर चली जाती है. शाँति वैसे ही उदास मन से घर के कामों में जूट जाती है.)

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(कुछ दिनों बाद शाँति अपने गाँव के ही दूसरे मोहल्ले में रहने वाली सहेली नंदनी के यहाँ बैठने जाती है. वहाँ वह देखती है कि नंदनी अपने दादा, दादा, मम्मी, पापा और भाई के साथ बैठकर टी.वी. देख रही है. हिचकते हुए शाँति, नंदनी को आवाज देती है.)

शाँति - नंदनी. ओ नंदनी.

नंदनी - अरे शाँति. आओ! आओ! अंदर आ जाओ.

शाँति - नहीं. यही ठीक है. तुम बाहर आओ न.

नंदनी - (बाहर आती हुई) - अरे! अंदर आओ न. टी.वी. में बहुत अच्छी फिल्म आ रही है. देखो हम सब फिल्म ही देख रहे हैं. तुम भी बैठो और फिल्म देखो.

शाँति - नहीं नंदनी. चलो दूसरे कमरे में बैठते हैं.

नंदनी - (शाँति को दूसरे कमरे में ले जाती है) - ठीक है बाबा. तुम जैसा कह रही हो, वही सही. अब बैठो यहाँ. बहुत दिन बाद आई हो और सुनाओं क्या हाल चाल है?

शाँति - सब ठीक ही है नंदनी.

नंदनी - और बतलाओ. इस साल बारहवीं पास होने के बाद क्या करने का विचार है? कहाँ पढ़ोगी, क्या पढ़ोगी?

शाँति - अगले साल शायद ही पढ़ पाऊँगी नंदनी.

नंदनी - क्यों?

शाँति - इस कारण की अगले साल मेरी शादी करने की तैयारी चल रही है.

नंदनी - शादी की तैयारी. और तेरी भी इच्छा है.

शाँति - नहीं नंदनी. मैं तो चाहती हूँ कि आगे पढ़ूँ, कुछ करूँ पर घर वालों ने शादी तय कर दी है.

नंदनी - तुमसे बिना पूछे?

शाँति - हाँ बहन. हमारे घर में बच्चों से नहीं पूछते.

नंदनी - अरे क्यों नहीं पूछते. आखिर शादी तुम्हें करनी है. पूरा जीवन काटना है. चलो वे लोग नहीं पूछे तो तुमको तो बात करनी चाहिए न.

शाँति - मैं भी बात नहीं कर सकती.

नंदनी - क्यों?

शाँति - आज तक बात करना तो दूर हम लोग कभी एक जगह एक साथ बैठे तक नहीं है.

नंदनी - अजीब परिवार है तुम लोगों का शाँति. मैं तो ऐसी जगह पर पल भर नहीं रह पाती.

शाँति -हाँ नंदनी. अभी मैं तुम्हारे घर की स्थिति देखी. कितना अच्छा लग रहा है. तुम बहुत भाग्यवान हो जो तुमको ऐसा परिवार मिला.

नंदनी -शाँति. तुम हिम्मत करोगी तो तुम्हारा परिवार भी अच्छा बन सकता है?

शाँति -ओ कैसे?

नंदनी - इसके लिए मैं कुछ सोंचती हूँ.

शांति -हाँ ठीक है.

(कुछ देर बैठने व बात करने के बाद शाँति अपने घर चली आती है और नंदनी अपने परिवार के साथ फिल्म देखने लगती है.

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(रविवार का दिन है. दोपहर का समय है. शाँति घर का काम निपटाकर पढ़ने बैठने की तैयारी कर रही है, उसी समय नंदनी अपने घर के पास रहने वाली प्रीति के साथ आती है और शाँति को अपने घर चलने के लिए कहती है. शाँति अपने माँ से पुछकर जाने लगती है)

शाँति - (रास्ते में) - अरे नंदनी. हमारे यहाँ ही क्यों नहीं बैठी? कुछ विशेश है क्या?

नंदनी - शाँति! तुम्हारे यहाँ फिर कभी बैठ जाएँगे. जानती हो आज मैं तुम्हें कुछ विशेश चीज दिखाने प्रीति के यहाँ ले जा रही हूँ.

शाँति - प्रीति के यहाँ. क्या दिखाओगी?

नंदनी - फिल्म.

शाँति - फिल्म! कैसी फिल्म! न बाबा न! मैं तुम्हारे सब घर वालों के साथ बैठकर फिल्म नहीं देख पाऊँगी.

नंदनी - अरे नहीं शाँति. फिल्म हम घर वालों के साथ बैठकर नहीं देखेंगे. ओ तो हम तीनों और प्रीति की ममेंरी बहन अनुसुईया मिलकर देखेंगे.

शाँति - अरे बतलाओगी भी आखिर कौन सी फिल्म है?

नंदनी - प्रीति की ममेंरी बहन अनुसुईया अपने स्कूल में बनी फिल्म लेकर आई है, उसी फिल्म को देखेंगे.

शाँति - स्कूल में भी कही कोई फिल्म बनता है.

प्रीति - अरे शाँति तुम भी न. अब सब कुछ यहीं जान लोगी कि कुछ फिल्म देखने के समय के लिए भी बचाकर रखोगी.

(बात करते-करते तीनों प्रीति के घर पहुँच गए. वहाँ अनुसुईया फिल्म देखने की सभी व्यवस्था करके रखी थी. तीनों को बैठाने के बाद अनुसुईया बोली.)

अनुसुईया -तो यह है तुम्हारी सहेली शाँति.

नंदनी - हाँ. और शाँति यह प्रीति की बहन ममेंरी बहन अनुसुईया है.

शाँति - हाय. अनुसुईया.

अनुसुईया -हाय. शाँति. तो अब फिल्म देखने के लिए तैयार हो न?

शाँति, नंदनी, प्रीति (एक साथ) - हाँ.

शाँति - पर अनुसुईया. पहले फिल्म का नाम तो बतला दो?

अनुसुईया -शाँति! इस फिल्म का नाम है ''निक्की की टोली'' और यह हमारे स्कूल शा.उ.मा.शा. परासपुर में बनाई गई है. इसमें मैने भी अभिनय की है.

शाँति - वाह! अनुसुईया? यह तो बहुत अच्छी बात है.

(अनुसुईया फिल्म शुरू करती है. चारो लड़कियाँ गम्भीर होकर फिल्म देखती है. फिल्म देखने के बाद शाँति कहती है.)

शाँति - नंदनी! सचमुच तुम लोगों ने बहुत अच्छी फिल्म दिखाई है. फिल्म देखकर मुझे लग रही थी कि इसमें पूरी की पूरी कहानी मेरे घर पर बनाई हो? मेरे जैसे ही दादा, दादी, मम्मी, पापा, भाई और लड़की भी बिल्कुल मेरी तरह. और वह निक्की की टोली में शामिल बच्चे, जिन्होने घर के सभी लोगों के विचारों में परिवर्तन लाया, सच में प्रशंसनीय कार्य किए. काश! ऐसा हमारे स्कूल में भी होता तो हम गाँव की लड़कियों का जीवन भी सुन्दर बन जाता.

अनुसुईया -क्यों नही शाँति. इस फिल्म को मैं तुम लोगों को दिखाने ही इसी लिए लाई थी कि सब मिलकर अपने प्राचार्य से कहना कि वे भी तुम्हारे स्कूल में ''निक्की की टोली'' बनाए.

शाँति - हाँ अनुसुईया! तुम ठीक कह रही हो. मैं तो बोल नहीं पाऊँगी, क्योंकि बोलने की आदत ही नही बना पाई. पर ''निक्की की टोली'' में जरूर रहूँगी.

प्रीति - तू चिन्ता मत कर शाँति! हम कल ही प्राचार्य से बात करेंगे.

(शाँति अपने सहेलियों से विदा लेकर अपने घर की ओर आती है. रास्ते में सोच भी रही है और मुस्कुरा भी रही है.)

<u>चतुर्थ - दृष्य</u>

(कुछ दिन बाद बच्चों के पहल पर शा.उ.मा.शा. विराटपुर के प्राचार्य व्दारा ''निक्की की टोली'' बना दी गई. इस टोली में शाँति के साथ-साथ उसकी सभी सहेली सम्मिलित हुई. टोली में रहकर अब शाँति में इतनी हिम्मत आ गई थी कि घर के बड़ों से बात कर सकें. एक दिन वह शाम के समय अपने दादाजी के कमरे में गई और बोली.)

शाँति - दादाजी. आप अकेले यहाँ क्या कर रहे हैं. दादीजी को बोल दूँ, आपके पास बैठने के लिए?

दादाजी -अरे! नहीं शाँति. तुम जाओ अपना काम करो.

शाँति - नहीं दादाजी. आज तो मैं नहीं जाऊँगी. पहले यह बतलाओं कि आप और दादीजी और पापा, मम्मी को कभी एक साथ बैठकर बातें करते आज तक मैं क्यूँ नहीं देखी.

दादाजी - (शाँति की बात सुनकर चैकते हुए) - यह क्या बात कर रही हो बेटी. सब अपने-अपने काम धंधे में लगे रहते हैं. इसमें क्या अजीब बात है.

शाँति - अजीब बात है दादाजी. अब आपकी उम्र को ही ले लीजिए. इस उम्र में आपको ज्यादा देखभाल और अपनापन चाहिए, वहीं आप दिन-रात अकेले एक कमरे में घूसे रहते हैं?

दादाजी -तो यह अभी की बात थोड़ी है बेटी. ऐसी परम्परा तो हमारे घर में बहुत दिनों से चली आ रही है. जैसा मेरे पिताजी ने अपने पिताजी से सीखा, वहीं मैंने अपने पिताजी से और वहीं मैंने अपने बच्चों को सीखाया.

शाँति - तो क्या दादाजी! यह सब आपको अच्छा लगता है? आपको कभी यह नहीं लगता कि मेरे बेटे- बहु, नाती, पोते, पत्नी सभी समीप आकर बैठे और खूब सारी बातें करे.

दादाजी (दुःख भरे स्वर में) - लगता है बेटी! पर अब क्या हो सकता है? पूरा समय तो कट गया. बचा हुआ भी कट जाएगा.

शाँति - नहीं दादाजी! ऐसा कभी नहीं सोंचना चाहिए. जब जगो, तभी सबेरा है. अगर आप साथ देंगे तब मैं कुछ पहल कर सकती हूँ.

दादाजी - सचमुच बेटी! तुम कर सकती हो. पर कैसे?

(शाँति दादाजी को वह सब कुछ विस्तार से बतलाती है जो उसने ''निक्की की टोली'' फिल्म में देखी थी और टोली में कार्य की थी.)

शाँति - दादाजी! अब तो आपको मुझ पर भरोसा है न?

दादाजी -हाँ बेटी! तुमने आज मेरी आँखे खोल दी.

<u>पंचम - दृष्य</u>

(इस घटना के बाद से शाँति के दादाजी, प्रतिदिन भले ही कुछ समय के लिए ही सहीं अपनी पत्नी, बेटी, बहु और नाती-पोतों को अपने साथ बैठने के लिए जरूर बुलाते या फिर खुद चले जाते. धीरे-धीरे सभी सदस्य एक-दूसरे से खुल गए. उचित अवसर पाकर एक दिन शाँति सभी लोगों के सामने अपने पापा से कहती है.)

शाँति - पापा. हमारे शर्मा सर कह रहे थे कि शाँति इस साल बारहवीं पास करने के बाद कृशि विज्ञान की पढ़ाई करने शहर चली जाना.

मोंटू - (शाँति का भाई) - और दीदी. ससुराल कौन जाएगी, तुम्हारी सहेली?

पापा - (शाँति के पापा) - हाँ बेटी. मोंटू ठीक तो कह रहा है. अगले साल तो हम शादी करने को सोंच रहे हैं.

दादाजी -(हँसते हुए) - तो कमल बेटा. अभी सोंच ही तो रहे हो न. अपने सोंच को छोड़ दो.

कमल - पिताजी! आप ऐसा कह रहे हैं. मैं कई लोगों से चर्चा भी कर चुका हूँ.

दादाजी -हाँ बेटा! मैं ऐसा कह रहा हूँ. और अब मैं यह नहीं चाहता कि जो गलती मेरे पिताजी ने मेरे साथ या मैंने तुम्हारे साथ किया, वहीं तुम भी अपने बच्चों के साथ करो.

कमल - कैसा गलती पिताजी.

दादाजी -यहीं बेटा. घर या बाहर के किसी भी मामले में न तो मेरे पिताजी मुझसे पुछते थे, न मैं तुमसे. क्योंकि माहौल ही ऐसा बना के रखे कि कोई अपने से बड़ों से बात करने की हिम्मत नहीं करता. पर अब ऐसा नहीं होगा.

कमल - सचमुच पिताजी! तो अब शाँति बेटी को आगे पढ़ने दें.

दादाजी -हाँ बेटा! हम सबकी यह इच्छा है.

कमल - तो अब ससुराल मोन्टू जाएगा. क्यों मोंटू.

(सभी सदस्य खिल-खिलाकर हँसने लगते है. शाँति अपनी दादी और माँ के पास बैठी धीरे-धीरे अपने सुनहरे भविष्य की सपना गढ़ रही है.)

20

नहीं मतलब नहीं

प्रथम - दृष्य

(आँचल और रमेंश आठवीं तक साथ-साथ पढ़ते थे. पढ़ते तक दोनों में बहुत बातचीत होती थी. समय के साथ रमेश गलत संगति में पड़कर पढ़ना- लिखना बंद कर, दिन भर आवारागर्दी करता था. ईधर आँचल अब बारहवीं पढ़ रही है. स्कूल जाते समय आँचल अपनी सहेली प्रिया से कहती है.)

आँचल - प्रिया! तुम रमेश को जानती हो न.

प्रिया - हाँ. तो इसमें क्या विशेश बात है.

आँचल - हाँ! ओ तो ठीक है. पर प्रिया पर अब रमेश का मुझसे बातचीत करना अच्छा नहीं लगता.

प्रिया - क्यों अच्छा नहीं लगता?

आँचल - अब वो पहले की तरह सामान्य बात नहीं करता बल्कि उसके बोलने का अंदाज बदल गया है.

प्रिया - तुम्हारा मतलब है कि वह गलत उद्देश्य से बात करता है. यहीं न.

आँचल - हाँ प्रिया. और अभी कुछ दिनों से तो उसकी हरकत और बढ़ती जा रही है.

प्रिया - कैसी हरकत?

आँचल- अब कल के ही बात ले लो. मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो रही थी. मम्मी घर का काम कर रही थी. वह उसी समय आया और मैं जहाँ तैयार हो रही थी, वहीं बैठकर बातें करते-करते मुझे एकटक देखने लगा.

प्रिया - अरे! तो उससे बोली क्यों नहीं? कि तुम्हारा इस तरह मुझसे बात करना और देखना अच्छा नहीं लगता.

आँचल - कितनों बार बोल चुकी हूँ बहन. पर ओ मान ही नहीं रहा है. जब भी पापा और भईया घर में नहीं रहते वह आ जाता है और फिर ईधर उधर की बातें करते रहता है.

प्रिया - अपने मम्मी को इस बारे में बतलाई हो.

आँचल - हाँ! पर ओ मम्मी को डरता ही नहीं. उपर से बोल देता है कि बस चाची ऐसी बातचीत कर रहा हूँ.

प्रिया - अरे तो अपने पापा और भईया से बोलो न. वे उसके घर में शिकायत करेंगे. तब होश ठिकाने में आएगा.

आँचल - तुम ठीक कह रही हो प्रिया. आज ही मम्मी के साथ पापा और भईया से बात करूँगी.

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(रात को खाना खाते समय आँचल अपने मम्मी अन्नूपर्णा के साथ मिलकर रमेश की सारी हरकतों के बारे में बतलाती है. सभी बातें सुनकर आँचल का भाई राजेन्द्र आग बबुला हो जाता है और उसी समय रमेश के यहाँ जाने को तैयार हो जाता है. उसके पापा दीन बंधु उससे बोलता है कि सबेरे रमेश के घर चलेंगे. सबेरे दोनों रमेश के घर जाते है.)

दीनबंधु - मुरली. ओ मुरली. घर में हो कि नहीं.

मुरली - (रमेश के पिता) - अरे आओ आओ दीनबंधु बैठो.

राजेन्द्र -हम यहाँ बैठने नहीं आए हैं. आपका लड़का रमेश कहाँ है, बुलाओ उसे.

मुरली - अरे भाई. बात क्या हो गया? बहुत गुस्से में लग रहे हो. रमेश तो अभी घर में नही है.

दीन बंधु - ऐसा है मुरली भाई. आपका बेटा रमेश आए दिन मेरी बेटी आँचल को परेशान करते रहता है. कभी गलत-गलत बात करता है, तो कभी ईशारे करता है और अब तो वह घर पर आकर भी बदमाशी करना शुरू कर दिया हैं

राजेन्द्र (बीच में) - आप रमेश को समझा देना कि आज से अगर वह आँचल को कुछ बोलना तो दूर आस-पास भी नजर आएगा तो ठीक नहीं होगा.

दीन बंधु - राजेन्द्र को चुप कराकर) - ऐसा है मुरली भाई. हम पड़ोसी हैं और इस कारण मैं नहीं चाहता कि इतने दिनों का संबंध खराब हो जाए. इसलिए समझाने में समझ जाता है, तब ठीक है, नहीं तो मैं अगली बार आपके पास न आकर सीधा पुलिस के पास जाऊँगा.

मुरली - क्या बतलाऊँ दीन बंधुजी. ऐसा नहीं है कि मैं अपने लड़के की हरकतों के बारे में नहीं जानता. घर में सब कोई समझाकर थक गए हैं, यहाँ तक की कई बार पिटाई भी किए हैं. पर वह लड़का ऐसी बुरी संगत में फँसा हुआ है कि किसी की बात का, समझाने का कोई असर ही नहीं हो रहा है. भगवान ऐसी औलाद से, औलाद न ही दें, वहीं अच्छा. आने दो खबर लेता हूँ.

(दीन बंधु और राजेन्द्र, रमेश के पिता से बात करके अपने घर वापस आ जाते हैं.)

तृतीय - दृष्य

(शासन के निर्देशानुसार सभी शालाओं में ''निक्की की टोली'' बनाया जाना है. इसी संदर्भ में शा.उ.मा.शा. भोलापुर के प्राचार्य श्री शैलेश उद्देश्य छात्र-छात्राओं से चर्चा कर रहे हैं.)

प्राचार्य - बच्चों. आज हम अपने विद्यालय में ''निक्की की टोली'' बनाएँगे.

बसन्ती - (बीच में) - सर! मैं ''निक्की की टोली'' के बारे में पेपर में पढ़ी हूँ.

प्राचार्य - क्या पढ़ी हो?

बसन्ती - सर यहीं कि ''निक्की की टोली'' शाला में पढ़ने वाले बच्चों का समूह है जो बच्चों की विभिन्न समस्याओं को दूर करने का कार्य करते है और समाज को जागरूक भी करते है.

नलिनी - सर. बच्चों की किन-किन समस्याओं का हल ''निक्की की टोली'' व्दारा किया जाता है?

प्राचार्य - बेटी. हम जानते है कि 11 वर्ष से 18 वर्ष के उम्र का बहुत महत्व होता है, क्योंकि यहीं वह समय होता है, जिनमें बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है और इन दोनों का स्वस्थ विकास बहुत कुछ इस अवधि के समस्या औरउसके समाधान पर निर्भर करता है.

प्रिया - सर. क्या ''निक्की की टोली'' लड़कियों को लड़कों व्दारा जबरन परेशान किए जाने जैसी समस्या का भी समाधान कर सकता है.

प्राचार्य - क्यों नहीं प्रिया. जरूर कर सकता है.

प्रिया - पर कैसे सर?

प्राचार्य - देखो बेटी. एक तो हमारे समाज में या आस-पास ऐसे लड़कों की संख्या बहुत कम है, जो लड़कियों को जबरदस्ती परेशान करें. ऐसे लड़कों की पहचान कर ''निक्की की टोली'' पहले तो अकेले में उस लड़के को समझाएँगे. फिर भी अगर हरकत करता रहा, तो उसके घर वाले को बतलाएँगे और न माने तो अंत में पुलिस तो है ही हम सबकी रक्षक.

अरविन्द - सर! और इसमें उस लड़की की क्या भूमिका होगी, जिसके साथ जबरदस्ती किया जा रहा है?

प्राचार्य - देखो अरविन्द. उस लड़की से बेहतर इस बात को कोई नहीं जान सकता कि कोई लड़का कब क्यों और कहाँ पर उसे जबरदस्ती तंग करता है. पहले तो वह बिना डरे उसे यह बतलाए कि उसकी यह हरकत उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता. समझाने पर भी अर्थात् मना करने पर भी न माने तो ''निक्की की टोली'' और अन्य कई रास्ते तो हैं ही.

(प्राचार्य की बातों को सुनकर सभी बच्चों के मन में ईच्छा हुई कि वे ''निक्की की टोली'' में शामिल हो. आँचल, प्रिया, नलिनी, अरविन्द, विपिन और अन्य बच्चे टोली में शामिल होकर अगले दिन से अपने काम में लग गए.)

चतुर्थ - दृष्य

(ईधर रमेश को घर में बहुत मार पड़ा था. यहाँ तक कि उसे घर से निकालने की तैयारी भी चल रही थी. ''निक्की की टोली'' में सम्मिलित बच्चे भी उससे मिलकर बात करके समझाने का प्रयास किए थे. इन सब बातों से रमेश अपने को अपमानित समझ रहा था और बदला लेने को सोच रहा था.एक दिन आँचल अकेले ही स्कूल जा रही थी और रास्ते में खंडहर के पास रमेश घात लगाए बैठा था. जैसे ही आँचल वहाँ से गुजरती है, रमेश हाथ पकड़कर खींचते हुए उसे खंडहर के अंदर लाता है और कहता है.)

रमेश - मेरी बहुत शिकायत करती है. आज तुझे मजा चखाता हूँ.

आँचल - देखो रमेश. तुम यह जो कर रहे हो ठीक नहीं है. तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ है, उसके लिए तुम खुद जिम्मेदार हो. अगर अब भी नहीं सुधरे तो इस बार सीधा जेल जाओगे.

रमेश - मुझे अब भी धमकी दे रही हो. तुम्हारी इतनी हिम्मत. तुम्हारा ओ हश्र करूँगा कि किसी को मुँह दिखाने लायक न रहोगी. अब बुलाओ अपने पापा और भईया को, या फिर अपने उस ''निक्की की टोली'' को.

आँचल - (अपना हाथ ताकत से छुड़ाते हुए) - देखो रमेश. तुमने मेरे साथ अभी जो जबरदस्ती करने का प्रयास किया है उसके लिए उम्र भर पछताओगे.

(आँचल बाहर की ओर दौड़ते हुए बचाओ-बचाओ कहकर चिल्लाने लगी. उसकी आवाज सुनकर आस-पास के लोग और कुछ स्कूल के बच्चे जिनमें निक्की की टोली के बच्चे भी थे, वहाँ आ गए और रमेश को पकड़ लिए)

प्रिया - आँचल! तू ठीक तो है न.

आँचल - हाँ प्रिया. मैं ठीक हूँ पर इस कमीने को अब बिल्कुल नहीं छोड़ना है. इसको इसकी किए की सजा दिलाकर रहना है.

प्रिया - हाँ आँचल! तू बिल्कुल भी चिन्ता न कर. हम सब तुम्हारे साथ है और रमेश तू भी सुन ले कि अब वह जमाना गया जब लड़कियाँ या औरतें अपनी बदनामीं के डर से तुम्हारे जैसे छिछोरे और बदमाशों की जुल्म को सह लेते थे.

(इसी बीच सरपंच महोदय व्दारा पुलिस को सूचना दिए जाने पर दरोगा साहब वहाँ आता है और रमेश को गिरफ्तार कर लेता है. रमेश की तलाशी लेने पर उसके जेब से तेजाब भी मिलता है, जिसके बारे में रमेश बतलाता है कि पहले काम में असफल रहने की स्थिति में उसका ईरादा आँचल के चेहरे पर तेजाब डालने का था.)

दरोगा - आप सभी गाँव वालों का शुक्रिया! आप लोगों की सावधानी से एक बहुत बड़ी घटना होते-होते रह गई.

सरपंच - इसमें हमारी शुक्रिया की कोई जरूरत नहीं है दरोगा साहब! यह सब तो ''निक्की की टोली'' के प्रयासों से ही हो पाया.

निक्की की टोली - हाँ दरोगा और सरपंच अंकल! इसमें भी आँचल ने बहुत बहादूरी दिखाई. वह रमेश से बिना डरे आँखों में आँखे डालकर बातें करती रही और इससे रमेश की हिम्मत ही नहीं हुई कि जो आँचल पर तेजाब फेंक सके और फिर हम सब आ गए.

(दरोगा साहब, सरपंच और सभी गाँव वाले आँचल और ''निक्की की टोली'' के बच्चों की खूब प्रशंसा किए. दरोगा साहब रमेश को गाड़ी में बैठाकर थाने की ओर रवाना हुए.)

<u>पंचम - दृष्य</u>

(इस घटना के अगले दिन प्राचार्य स्कूल के सभी बच्चों को एक स्थान पर बैठने के लिए कहते हैं. बच्चे एक जगह एकत्रित होकर बैठे प्राचार्य और शिक्षकगण के आने का इंतजार कर रहे हैं. प्राचार्य महोदय अपने स्टाॅफ के साथ आता है और बच्चों को सम्बोधित करना आरंभ करता है.)

प्राचार्य -बच्चों आपने देखा कि कल हमारे स्कूल के एक छात्रा के साथ दुःखद घटना होते-होते बची.

सभी बच्चे-हाँ सर. और इसमें हमारे स्कूल के ''निक्की की टोली'' ने प्रशंसनीय कार्य किए.

प्राचार्य -हाँ. पर इस स्थिति से हमें बचना चाहिए. मेरा कहने का आशय है कि कोशिश करें कि ऐसी स्थिति उत्पन्न ही न हो.

रामकुमार -(एक छात्र) - पर ओ कैसे सर?

प्राचार्य - यहीं बतलाने के लिए आज मैं तुम सभी को यहाँ एक साथ बैठाया हूँ देखो बच्चों जब हम एक साथ उठते-बैठते, पढ़ते-लिखते या मिलते-जुलते है, तब यह स्वाभाविक है कि लड़का-लड़की से और लड़की-लड़कों से बात करते हैं. यह बातचीत धीरे-धीरे दोस्ती में बदलती है पर लड़कियों का किसी लड़के से हँसकर बात करना या अन्य कारणों से मिलने जुलने का केवल एक ही मतलब नहीं होता जैसा कि रमेश ने आँचल के मामले में समझ लिया था. एक लड़का और लड़की केवल दोस्त भी हो सकते हैं जैसे कोई लड़का, लड़के का या लड़की, लड़की की.

श्याम कुमार(एक अन्य छात्र) - सर! पर ऐसी स्थिति में ज्यादातर लड़के, लड़कियों का अपनी ओर झुकाव मान लेते है.

प्राचार्य -हाँ श्याम! ऐसा होता है. पर जब लड़की एक बार 'ना' कर दे, तब लड़कों को उसे 'ना' ही मानना चाहिए. अगर ऐसा नहीं करते, तब इसका परिणाम रमेश की तरह जुनूनी हरकत में बदल जाता है और ऐसा करने के बाद क्या होता है, यह रमेश का उदाहरण तुम सब लोगों के सामने है.

लता -(एक छात्रा) - सर! मैं तो सोच-सोच के अब भी काँप जाती हूँ कि अगर आँचल के साथ कुछ गलत हो जाता, तब क्या होता?

प्राचार्य -हाँ बेटी! तुम सही कह रही हो. हमारे सरकार ने ऐसे दरिन्दों के लिए जो किसी लड़की के साथ जबरदस्ती करें उनके लिए सख्त कानून बनाया है और तेजाब हमलों में तो ईलाज का पूरा खर्च ही उठाता है. तो बच्चों तुम लोगों ने क्या सीखा या ऐसी परिस्थिति बने ही न इसके लिए क्या कर सकते हो?

सभी लड़की - सर! हम लोग परिस्थिति को जानकर आरंभ में ही लड़कों को स्पष्ट रूप से नही बोलेंगे जो नहीं ही होगा.

सभी लड़के - और सर हम लोग लड़कियों के नहीं का सम्मान करेंगे. इसे जुनून कभी नहीं बनने देंगे.

प्राचार्य - बहुत अच्छा बच्चो. मुझे यही उम्मीद है.

(कार्यक्रम खत्म होने पर सभी बच्चे अपने-अपने कक्षा में जाकर बैठते है.)

21

दोस्ती

प्रथम दृष्य

(शा.उ.मा. जगतपुर के छात्र पिकनिक जाने की तैयारी कर रहे है. पर भोला और घनश्याम दोनों उदास बस के पास खड़े है. उसी समय श्री राधेश्याम यादव सर बच्चों को अपने लिए निर्धारित बसों पर बैठने के लिए कहते है. भोला और घनश्याम अब भी वहीं खड़े हुए है. यादव सर उनके नजदीक आकर पुछता है.)

यादव सर - अरे! तुम लोग अभी तक यहीं खड़े हुए हो. बस छूटने वाली है जल्दी जाकर अपने सीट पर बैठो.

(भोला और घनश्याम यादव सर के कहने पर बस में जाकर बैठते है. यादव सर बस के उपर जैसे ही आता है त्रिलोकी बोलता है)

त्रिलोकी - सर! हम इस बस पर नहीं जाएंगे. दूसरे बस से जाएंगे.

यादव सर - क्यों? इस बस में क्या बुराई है?

त्रिलोकी - बस ऐसे ही सर. हम इसमें बैठकर नहीं जाएगे.

यादव - देखो! कौन लड़का या लड़की किस बस से जाएंगे. यह पहले से तय है और अब इसमें मै कोई बदलाव नहीं करूंगा.

त्रिलोकी - सर! तो मैं यही उतर जाता हुं.

(त्रिलोकी का साथ देते हुए राजेश, श्याम, नारायण, व्यास और अनिल भी उतर जाते हैं.)

यादव - बड़े अजीब लड़के हैं इस बस में नहीं जाउंगा, उस बस में जाउंगा. जाओ उस बस में खड़े-खड़े जाओगे, तब पता चलेगा.

(त्रिलोकी अपने दोस्तों के साथ अन्य बस पर सवार होते है. बस पिकनिक वाले स्थान की ओर रवाना होती है.)

द्वितीय दृष्य

(ऊँचे-ऊँचे पहाड़ियों से घिरे स्थान पर सभी बस आकर रूकती है. बच्चे अपने-अपने समूहों में दरी और चटाई बिछाकर बैठते जाते हैं. शाला के सभी शिक्षक, भृत्य, रसोईये और अन्य काम करने वाले लोग अपने-अपने कामों में

लग जाते है. प्राचार्य श्री दिनाकरण चैधरी अवलोकन करते हुए उस स्थान की ओर जाता है जहां भोला और घनश्याम एक पेड़ के पास बैठे है.)

प्राचार्य - अरे! भोला और घनश्याम तुम दोनों यहां क्या कर रहे हो. जाओ दूसरे बच्चों के साथ बैठो और खेलो.

(भोला और घनश्याम दोनों खड़े होते हुए कहते है)

भोला - सर! मेरी तबियत ठीक नहीं है.

घनश्याम - और मेरा भी सर!

प्राचार्य - तबियत ठीक नहीं है तो फिर आए क्यों? देखकर तो नहीं लगता है कि तुम दोनों की तबियत खराब है.

(प्राचार्य दोनों बच्चों के हाथ और मस्तिष्क को छूकर देखते हुए कहता है.) चलो चलो बहाना मत करो. मेरे पीछे आओ. प्राचार्य सभी बच्चों के समूह की ओर जाने लगता है. भोला और घनश्याम प्राचार्य के पीछे चलते हुए कहते है.)

भोला - बस सर! हम लोग इस समूह के साथ जाकर बैठ जाते हैं.

प्राचार्य (चलते-चलते) हां ठीक है.

(भोला और घनश्याम जिस भी समूह के पास जाते, वहां से बच्चे उठकर दूसरे जगह की ओर चले जाते थे. पिकनिक के समय खतम होते तक भोला और घनश्याम किसी दूसरे बच्चों के साथ नहीं मिले. पिकनिक से वापस बस उसी तरह रवाना हुई जैसे गई थी.)

<u>तृतीय दृष्य</u>

(उ.मा.शा. जगतपुर के प्राचार्य श्री दिनाकरण चैधरी अपने कार से स्कूल जा रहे है. अभी कुछ ही दूरी पर पहुंचे थे की सामने से एक नीली कार आई और थोड़ी दूर पर जाकर रूक गई. चैधरी जी को लगा कि कोई जान पहचान का होगा उसने भी गाड़ी रोक दी. वह कार से उतर ही रहा था कि दूसरी ओर से पाण्डेय जी ने आवाज लगाई.)

पाण्डेय जी - चैधरी जी! ओ चैधरी जी!

चैधरी जी - पाण्डेय जी आप! बड़े दिनों बाद मिलना हुआ. यार बतलाओ आज कल कहाॅ हो?

पाण्डेय जी - हां यार! अभी मुश्किल से माह भर हुआ है. आपके बगल में ओ रजतपुर है न वही पोस्टिंग हुई है.

चैधरी जी - हां यार! सूना तो था! पर सब लोग पुरा कहाॅ बतलातते थे. बस यही कहते थे कि कोई पाण्डेय जी प्राचार्य बनकर आए हैं.

पाण्डेय जी - हां चौधरी जी! चलो अच्छा हुआ आपके पड़ोस में ही आ गया हूं. मिलना होता रहेगा. ओ क्या है जब आपकी गाड़ी सामने से गुजरी न तब मै एक ही नजर में पहचान गया कि जरूर दिनाकरण जी है. तभी तो गाड़ी रोक दिया.

चैधरी जी - अच्छा किया यार! मेरी नजर तो सामने रोड से हटती नहीं है. अच्छा यह बतलाओ सकूल जा रहे है या कहीं और?

पाण्डेय जी - पहले तो थोड़ी देर बाद स्कूल जाउंगा, फिर वहां से निक्की की टोली के बच्चों को लेकर जिला शिक्षा अधिकारी के पास जाउंगा.

चैधरी जी - निक्की की टोली को जिला शिक्षा अधिकारी महोदय ने क्यों बुलवाया है?

पाण्डेय जी - यार आप नहीं सूने हो. भाई मेरे संस्था के ''निक्की की टोली'' के बच्चों ने पांच लड़कियों की समय पूर्व विवाह को न केवल रूकवाया बल्कि इससे सभी जन मानस में यह प्रभाव भी पड़ा कि वे भविष्य में न तो बाल-विवाह करेंगे और न करने देंगे. बस इसी बात पर प्रसन्न होकर जिला शिक्षा अधिकारी महोदय न बच्चों को पुरस्कार देने का मन बनाया है और बतला आपके यहां के निक्की की टोली कैसे काम कर रही है?

चैधरी जी - ''निक्की की टोली'' तो मेरे स्कूल में भी बना है पाण्डेय जी. पर आपके स्कूल के टोली जैसा सक्रिय नहीं है. कई मामलो मे तो मुझे अभी कुछ दिनांे से महसूस हो रहा है कि स्थिति पहले से बद्तर हुई है.

पाण्डेय जी - भाई फिर ''टोली'' को सक्रिय करने के लिए कुछ करते क्यों नहीं? और किस मामले में स्थिति बदत्तर हुई है?

चैधरी जी - यार कुछ दिनों से मै अनुभव कर रहा हूॅ. कि मेरे स्कूल के कुछ बच्चे अन्य बच्चों से भेदभाव पूर्ण व्यवहार कर रहे है.

पाण्डेय जी - तो यार मेरे स्कूल की निक्की की टोली को अपने स्कूल में बुलवा लें. टोली के बच्चें आपके स्कूल के बच्चों को सही व्यवहार करना सीखा देगें.

चैधरी जी - तो ठीक है समय देखकर मैं आपको बतलाता हूं.

(दोनों अपने-अपने गंतव्य स्थान की ओर चले जाते है.)

चौथा दृष्य

चैधरी जी - बच्चों अत्यंत हर्ष की बात है कि आज हमारे बीच निकट के उ.मा.शा. रजतपुर के ''निक्की की टोली'' में सम्मिलित बच्चे आए हुए है और आपको यह जानकर और खुशी होगी की इस टोली के बच्चों ने अपने अच्छे कार्यो के लिए जिला स्तरीय पुरस्कार भी पाया है. और अब मै टोली के छात्र सुनील को आमंत्रित करता हुं कि वे आप लोगों को ''निक्की की टोली'' के कार्यो के संबंध में बतलाए.

सुनील (अभिवादन करने के बाद) - आप सभी मेरे सहपाठी है. इसलिए मै चाहता हंु कि आप सब मुझसे खुलकर बात करें. क्या आप ऐसा करेंगे?

सभी बच्चे (एक साथ) - हां सुनील! हम जरूर खुलकर चर्चा करेंगे.

सुनील - तो अच्छा यह बतलाओ कि इस स्कूल में पढ़ने वाले सभी बच्चे चाहे वे लड़का हो या लड़की हो, आप सबके दोस्त है.

घृतांक (एक छात्र) - क्या ऐसा कभी हो सकता है कि एक जगह पर पढ़ने वाले सभी बच्चे आपस में दोस्त ही हो? भाई दोस्त तो वही होता है न जिससे हमारा मन मिले.

सुनील - बहुत अच्छा जवाब है? अब अच्छा यह बतलाओ कि क्या एक जगह पर पढ़ने वाले सभी बच्चे दुश्मन होते है?

राजकिशोर (एक छात्र) - भाई सुनील आपका यह कैसा प्रश्न है? जिस तरह एक जगह पढ़ने वाले सभी दोस्त नहीं होते उसी तरह एक जगह पढ़ने वाले सभी दुश्मन भी नहीं हो सकते.

सुनील - बहुत अच्छा! अब यह बतलाओ कि जो भी आपके दोस्त हो या दुश्मन हो, उसके साथ क्या एक ही प्रकार का व्यवहार करते है?

मनीश (एक छात्र) - बिल्कुल नहीं! जो दोस्त होता है उसके साथ उठते-बैठते-हॅसते-बोलते और खेलते कूदते है और जो दुश्मन होता है उसके साथ कुछ भी नहीं करते.

सुनील - ठीक है. अब ऐसे बच्चे जो न आपका दोस्त हो और न दुश्मन उनके साथ कैसा व्यवहार करते है?

व्यास - हम ऐसे बच्चे की तरफ देखते भी नहीं.

श्याम - हम ऐसे बच्चों के न तो नजदीक जाते है और न आने देते है.

त्रिलोकी - मुझे तो काले रंग के बच्चों से बहुत चिढ़ लगती है. ऐसे बच्चों को तो मेरी आंख पल भर बर्दास्त नहीं कर सकता और न ऐसे बच्चे को मै दोस्त बनाता हुं और न ही दुश्मन.

नारायण - मुझे तो पढ़ने-लिखने में कमजोर बच्चों से एलर्जी है.

सुनील - अब मै जो बोल रहा हुं उसे कृप्या ध्यान से सुनेंगे. मै आप लोगों के इस बात से पूर्णतः सहमत हूं कि सभी बच्चें न तो हमरा दोस्त होता है ओर न दुश्मन! महत्वपूर्ण इन दोनो के बीच के बच्चे होते है. जब हम अपना दोस्त या दुश्मन इस आधार पर बनाएं कि वह अमुक जाति, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय, रंग, भाशा या फिर पढ़ने-लिखने में अच्छा है या खराब, तब स्थिति भयावह हो जाती है. और क्या आप जानते है कि ऐसे आधार पर अलग-अलग किए गए बच्चों के मस्तिष्क पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

त्रिलोकी - ऐसे बच्चे कक्षा में सबसे किनारे बैठे रहते है और किसी से बात करने की हिम्मत नहीं करते.

सुनील - नहीं! ऐसे बच्चों के जीवन पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे अपने जीवन में बड़ा होने पर ज्यादा हिंसक और आक्रामक होता है. क्या आप चाहते है कि हमारा समाज हिंसामय हो जाए!

सभी (कुछ पल चूप रहने के बाद) - बिल्कुल नहीं!

सुनील - हां! हमें सदैव यह याद रखना होगा कि जो दोस्त नहीं होता वह दुश्मन भी नहीं होता. तो ऐसी परिस्थिति में कम से कम हमें किसी का किसी भी आधार पर अपमान नहीं करना चाहिए.

(सुनील के सम्बोधन के साथ कार्यक्रम समाप्त होता है. पाण्डेय जी बच्चों को लेकर अपने स्कूल की ओर चला जाता है. चैधरी जी बच्चों को कक्षा में बैठने के लिए कहते हैं.)

पंचम दृष्य

(सुनील की बातों को सुनकर ऐसे सभी बच्चे जो अपनी कक्षा या स्कूल के बच्चों के साथ किसी भी आधार पर अपमानजनकव्यवहार करते थे उन्हें अपने किए पर पछताना हो रहा था और अब वे अपनी इस गलती को सुधारना चाहते थे. त्रिलोकी, व्यास, श्याम, नारायण, मनीश, संगीता, सुजाता ''निक्की की टोली'' को सक्रिय करना चाह रहे थें. वे सभी प्राचार्य चैधरी जी के पास जाते है ओर त्रिलोकी कहता है.)

त्रिलोकी - सर! हमें पिकनिक से आए एक हप्ता हो गया है, तभी से भोला और घनश्याम स्कूल नहीं आ रहे हैं.

प्राचार्य - हां त्रिलोकी! मुझे शुरू दिन से ही पता है. तुम लोग क्या चाहते हो?

व्यास - सर हम चाहते है कि ''निक्की की टोली'' में सभी बच्चे भोला और घनश्याम के घर जाए और उन्हें विश्वास दिलाए कि वे किसी भी बच्चे के दुश्मन नहीं है.

प्राचार्य - किसी भी बच्चे के दुश्मन नहीं है यह कहना ठीक है?

नारायण - नहीं सर! हम उन दोनों से यह बोलेंगे कि यहां के सभी बच्चों के तुम दोस्त हो या हम सभी तुम्हारे दोस्त है.

प्राचार्य - बहुत अच्छा नारायण - मैं भी चाहता हुं कि हमारे संस्था की टोली अच्छा काम करके अपना नाम कमाए.

त्रिलोकी - जरूर सर! अगले साल जिला स्तर का पुरस्कार हमारे स्कूल को मिलेगा.

(प्राचार्य चैधरी जी सभी बच्चों के साथ भोला और घनश्याम के घर जाते है. प्राचार्य और सभी बच्चों से अपनापन पाकर भोला और घनश्याम दोनों को विश्वास हो जाता है कि अब सब कुछ बदल गया है दोस्त भी और दोस्ती की परिभाषा भी.)

22

बेटा-बेटी एक समान

प्रथम-दृष्य

(जब प्रभा बी.एस.सी. प्रथम वर्ष में थी, तभी न चाहते हुए भी उसे शादी करनी पड़ी. ससुराल की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण वह अपने ससुराल के ही पूर्व मा.शाला में रसाईये का काम करती है. इसी बीच गर्भवती हुई और एक लड़की को जन्म दीं लड़की के जन्म होने के बाद उसके ससुराल वाले उसे मायके छोड़के चले गए. प्रभा की छोटी बहन रूपा अभी 7वीं पढ़ रही है. वह अपने दीदी के साथ-साथ उसकी बच्ची को भी बहुत प्यार करती है. एक दिन स्कूल से आने के बाद वह अपनी दीदी से कहती है)

रूपा - दीदी! तुम्हें यहां आए हुए लगभग तीन महिने हो गए और जीजा जी एक बार भी यहाॅ नहीं आया है. ऐसा क्यों दीदी?

प्रभा - काम से छुट्टी नहीं मिलता होगा रूपा. नही ंतो कब का आ गया होता.

रूपा - क्या दीदी! तुम भी ऐसे बोल रही हो जैसे जीजाजी कोई बहुत बड़ा सरकारी अफसर हो!

प्रभा - हां रे रूपा! सरकारी अफसर होता न तो छुट्टी मिल भी जाता. बेचारा प्रायवेट काम करता है. सच में छुट्टी नहीं मिलती.

रूपा - दीदी! चलो मै मान गई कि सही में छुट्टी नहीं मिलती. पर क्या फोन में बात करने के लिए भी छुट्टी लेना पड़ता है?

(रूपा के इस प्रश्न का उत्तर प्रभा के पास नहीं होता. वह बस अपनी छोटी सी बेटी रिंकी को गोद में उठाए आसमान की ओर देखते हुए कहती है.)

प्रभा - बहुत जल्दी सयानी बन गई रूपा.

रूपा (बीच में) - वह तुम्हें कैसे पता चला दीदी.

प्रभा - तुम्हारी बातों से. कहां से सीखी यह सब!

रूपा - अपने स्कूल से!

प्रभा - स्कूल से! कैसे? क्या अब स्कूल में गणित, अंग्रेजी, भूगोल पढ़ाना छोड़ के यह पढ़ाते है कि कोई आता है तो क्यों आता है और नहीं आता है तो क्यों नहीं आता.

रूपा - हां दीदी! हमें स्कूल में यह सब कुछ बतलाया जाता है.

प्रभा - चल झूठी! मुझे बना रही है. तुमसे ज्यादा पढ़ी हुं, बनुंगी नहीं.

रूपा - दीदी! मै बना कहां रही हूं. हमें सचमुच बतलाया जाता है.

प्रभा - कौन से विषय में रूपा.

रूपा - विषय में नहीं दीदी. ''निक्की की टोली'' में.

प्रभा - यह निक्की की टोली क्या है?

रूपा - दीदी! निक्की की टोली हम बच्चों का समूह है, जिसमें लड़का और लड़की दोनों होते है.

प्रभा - और करते क्या हो?

रूपा - हम ''निक्की की टोली'' में लड़के और लड़कियों के जीवन से संबंधित ऐसे समस्याओं का कारण और समाधान खोजते है, जो उनके भविष्य के जीवन को बहुत प्रभावित करता है.

प्रभा - तभी तो सोचूं कि मेरी बहन इतनी समझदार कैसे हो गई है.

रूपा - (टिंकी को रोते देखकर) - ठीक है दीदी! तुम टिंकी को दूध पिलाओ हम रात में फिर बात करंेगे.

(रूपा के चले जाने के बाद प्रभा टिंकी को दूध पिलाते-पिलाते उस समय के बारे में सोंचने लगी जब शादी के बाद उसने पहला कदम अपने ससूराल में रखी.)

<u>व्दितीय दृष्य</u>

(प्रभा के ससुराल में मेहमानों का जमावड़ा है. प्रभा का आज पहला दिन है. प्रभा की सास मालती कुछ मेहमानों के साथ उसके कमरे में आती है और कहती है)

मालती -देखो बहु! मै आज पहले दिन ही तुमसे कहे देती हूं कि मुझे अगले साल तक एक पोता चाहिए.

त्रिवेणी (मेहमान) - और क्या? बेटी लेके जो थोड़ा बहुत बच गया है उसे भी बिकवाना कौन चाहेगा?

मालती - तू ठीक कह रही है बूआ! जानती तो हो मेरी पाॅच-पाॅच बेटी थी.सब के घर बसाने में सब कुछ बिक गया. बेचारा रोहित आखिरी में पैदा हुआ तो उसके लिए कुछ बचा ही नहीं. प्रायवेट नौकरी करना पड़ रहा है.

यशोदा (मेहमान) - और जानती हैं ओ जामगढ़ वाला रामभरोस था ना, जिसकी बेटी-बेटी ही थी उसे ठीक से अंतिम संस्कार भी नहीं मिला. बेचारा भूत बनकर आज तक भटक रहा है. बेटा होता तो कब का मोक्ष मिल गया होता.

मालती -सहीं बात है चाची! घर में अगर बेटा हो तो किसी बात की चिंता नहीं रहती. अब ओ अपने राजाराम को ही ले लो न! उसके दो बेटियां थी. दोनों अपने ससुराल चली गई और राजाराम के मरने के बाद आज उसके डीह पर दिया जलाने वाला भी कोई नहीं बचा है. मेरा तो सोच-सोंच के जी-भर आता है.

प्रभा (सबकी बात सुनने के बाद) - मां जी! इसमें मै क्या कर सकती हुॅ. यह सब तो प्रकृति के उपर निभर है. लड़का हो या लड़की आखिर दोनो ही तो बच्चे है.

मालती - यह सब कहने में अच्छा लगता है बहु! जिस दिन तुम्हारी केवल लड़की ही लड़की होगी न उस दिन पता चलेगा कि लड़के के लिए मन कितना तड़फता है या फिर उन लोगों से पुछना जिनकी केवल बेटी ही बेटी हैं. मैं कुछ नहीं जानती मुझे तो तुम्हारे कोख से पहला बच्चा केवल लड़का ही चाहिए.

(प्रभा अपनी सास और अन्य औरतों की बातों को सुनकर सन्न रह जाती है और मन में सोंचती रहती है कि पता नहीं अगर लड़की हो जाए तो क्या होगा! मालती सभी औरतों को लेकर कमरे से बाहर निकल जाती है.)

<u>तृतीय-दृष्य</u>

(प्रभा के दर्द शुरू होने पर उसके पति रोहित, ससुर, ईतवारी, राम और ननद विमला शहर के अस्पताल लेकर आए. उसकी सास मंदिर में पूजा करने चली गई. अस्पताल में प्रभा ने एक लड़की को जन्म दी. नर्स आकर प्रभा से कहती है.)

नर्स - बधाई हो प्रभा. फुल सी बच्ची पैदा हुई है.

प्रभा (प्रसन्न होकर) - नर्स बहन! क्या मै अपनी बेटी को देख सकती हुॅ.

नर्स - हां प्रभा! क्यों नहीं. पर थोड़ी देर बाद अभी बच्चे को साफ कर रहे है, उसके बाद मै लाती हुं.

(नर्स कमरे से बाहर निकलकर हाल के तरफ आती है. ईतवारी की नजर जैसे ही नर्स पर पड़ता है, तुरन्त पुछता है.)

ईतवारी - ओ नर्स बेटी! मेरा पोता कैसा है? बिल्कुल मेरे रोहित जैसा है ना.

नर्स - नहीं! ओ आपके इस बेटी जैसी है. बधाई हो आपको आप पोती के दादा बने है.

ईतवारी - धत्त तेरी की! भाग्य ही फूटा है तो किसी को क्या दोष!

(ईतवारी रोहित से कहता है कि वह प्रभा के घर वालों को तुरन्त सूचना देदे और विमला से कहता है कि बेटी तू मेरे साथ घर चल. दोनों रोहित को छोड़कर अपने घर आ जाते है. उसी समय नर्स आती है और कहती है)

नर्स - आप प्रभा के पति है न!

रोहित - हां मैडम! क्यों क्या बात है?

नर्स - ये बच्चे के लिए कुछ कपड़े और दवाई की सूची है. इसे जल्दी से बाजार से ले आओ.

(रोहित समान की सूची लेकर बजार की तरफ चला जाता है और बहुत देर तक नहीं आता. इस बीच प्रभा के पिताजी बंशीलाल और माॅ गोदावरी अस्पताल में प्रभा के पास बैठे बातें कर रहे है. उसी समय नर्स आती है और पूछती है.)

नर्स - अरे प्रभा! आपके पति सामान लेकर आ गया क्या? काफी देर हो गया. बच्ची को दवाई देना है और कपड़े भी पहनाना है.

प्रभा - हीं! नर्स बहन ओ तो नहीं आया है और न ही कुछ बतलाया है.

बंशीलाल - नर्स मैडम! मुझे लिखकर दे दीजिए. मै लेकर आ जाता हॅ. लगता है दामाद बाबू किसी काम में फंस गए है.

(नर्स बंशीलाल जी को समान की सूची देती है. बंशी लाल बाहर निकलता है और हाॅल में रोहित से भेंट होने पर कहता है)

बंशीलाल - अरे रोहित बेटा! कहां रह गया था? सामान लाया क्या?

रोहित (बिना प्रणाम किए) - नहीं! मुझे कोई भी सामान नहीं मिला. अच्छा हुआ जो आप आ गए है. यह सामान बाजार से खोजकर ले आईए. मै चलता हुं, ड्यूटी जाना है.

(रोहित समान की सूची बंशीलाल के हाथ में पकड़ाता है ओर जल्दी से वहां से निकल जाता हैं बंशीलाल भी सामान लेने जल्दी-जल्दी बाजार की ओर जाने लगता है)

चतुर्थ दृष्य

(प्रभा तीन दिन तक अस्पताल में रही. इस बीच उसके ससुराल से कोई भी नहीं आया. बंशीलाल प्रभा की छुट्टी कराकर अपने साथ गाॅव ले आया और अब इस बात को हुए तीन महिने बीत गए है पर किसी ने भी कोई हाल चाल नहीं लिया. तभी उसे गांव के स्कूल में पढ़ाने वाली अनीता मैडम घर के अंदर आते दिखी और मैडम के आवाज से प्रभा ने सोंचना बंद किया.)

अनीता - अरे! प्रभा तुम कब से आई हो?

प्रभा - (प्रणाम करते हुए) जी मैडम! लगभग तीन माह हो गया.

अनीता - वाह प्रभा! तुम्हारी बेटी तो बहुत सुन्दर है. बधाई हो तुम्हें.

(मैडम बच्ची को गोद में लेकर खेलाने लगती है.) रूपा ने नहीं बतलाया कि तुम आई हो.

प्रभा - बच्ची है मैडम! भूल गई होगी!

अनीता - नहीं प्रभा! उम्र में भले ही बच्ची है, पर समझदारी में बड़े-बड़ों की बोलती बंद कर देेती है. तभी तो हम उसे अपने स्कूल के ''निक्की की टोली'' का मुखिया बनाए हैं.

प्रभा - हां मैडम ओ तो है. मैने भी महसूस की है और आजकल लड़कियों को ऐसा होना भी चाहिए.

अनीता - हां प्रभा! तभी तो हम लोग अपने इस गांव की लड़कियों के साथ-साथ औरतों को भी जागरूक करने का प्रयास कर रहे है और इस काम में हमें सफलता भी मिल रही है.

प्रभा - कैसे जागरूक और सफलता मैडम?

अनीता - अनीता! तुम तो जानती हो न हमारा समाज आज भी पुरूश प्रधान बना हुआ है. जहाॅ केवल लड़कों का महत्व है और लड़कियों को तो ऐसा समझा जाता है जैसे वे इन्सान ही न हो. बस हम इसी दकियानूसी सोंच को बदलने का प्रयास कर रहे है.

प्रभा - तो इसके लिए आप लोग क्या करते है?

अनीता - इसके लिए हम लोग निक्की की टोली के माध्यम से पुरूषों और महिलाओं को बतलाते है कि छेड़खानी के क्या कारण हो सकते है, घर में लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव क्यों नहीं होना चाहिए बाल विवाह और बेटों को प्राथमिकता देने का हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है इत्यादि. (उसी समय रूपा बाहर आती है और मैडम को प्रणाम करके कहती है)

रूपा - तो मैडम जी! चलें.

प्रभा - अरे! रूपा तू कहां जाने की बात कर रही है?

अनीता - इसी गांव के दूसरे मोहल्ले में गणेश यादव की बहू प्रमिला की लड़की हुई है. बस हम सभी निक्की की टोली के साथ गाजे-बाजे लेकर बधाई देने जाएंगे.

प्रभा - मैडम! क्या यहां ऐसा भी होता है.

अनीता - हां प्रभा! और सबसे पहले तुम्हे बधाई इतनी सुन्दर सी बेटी को जन्म देने के लिए.

रूपा - और दीदी! मेरी ओर से भी.

(प्रभा यह सब देख सूनकर प्रभा की आंख आंसू से भर जाता है. मैडम रूपा को लेकर चली जाती है.)

पंचम दृष्य

(रात के समय सभी सोने की तैयारी कर रहे हैं. प्रभा अपनी बेटी को सुला रही है. उसी समय रूपा कमरे के अंदर आती है और अपने बिस्तर पर सोते हुए प्रभा से कहती है.)

रूपा - दीदी! काश! यह निक्की की टोली तुम्हारे पढ़ने के समय स्कूलों में बन गई होती.

प्रभा (बीच में) - तो क्या होता?

रूपा - तुम्हे जीजा जी के बिना यहां इतने दिनों तक नहीं रहना पड़ता. जानती हो दीदी हमारे गांव के स्कूलों में जब से निक्की की टोली ने काम करना शुरू किया है तब से हमारे गाॅव के लोग बहुत आधुनिक विचारों के हो गए है और जो न भी हुए है वे भी अब धीरे धीरे रूढ़िवादी विचारों से दूर हो रहे है और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे ससुराल के लोग भी अपने पुराने विचारों से बाहर निकलेंगे.

प्रभा - कैसे रूढ़िवादी विचारों से बाहर निकल रहे है रूपा?

रूपा - यही दीदी! अब हमारे गांव के लोग लड़का और लड़की में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते. जितना स्वतंत्रता लड़कों को देते है उतनी ही ल ड़कियों को भी चाहे वह घूमने फिरने, खाने पीने पढ़ने लिखने, मोबाईल चलाने में हो या कपड़े पहनने में हो. यहां तक की दीदी जितना उत्सव बेटे के जन्म लेने पर मानते है, उतना ही बेटी की भी.

प्रभा - पर इन सबसे मेरा क्या सम्बंध है रूपा?

रूपा - वा दीदी! कैसे संबंध नहीं है. तुम सोंचती हो कि मुझे कुछ पता नहीं है. पापा-मम्मी जब तुमको अस्पताल से लेकर यहां आए थे तभी से मै सब कुछ जानती हुं.

प्रभा - ठीक है रूपा! रात ज्यादा हो रही है अब सो जाओ. सुबह बात करते है.

रूपा - ठीक है दीदी!

(रूपा और प्रभा सोने लगते है. रूपा की नींद तो पड़ जाती है किन्तु प्रभा के कानों में रूपा के कहे वाक्य अब भी गंुज रहे है कि दीदी! देखना आमनगर के लोग भी पुराने विचारों को धीरे-धीरे छोड़ेंगे. प्रभा मन ही मन कहने लगती है भगवान यह कब होगा?)

<u>षष्ठम दृष्य</u>

(प्रभा को अपने मायके में रहते लगभग छः माह हो गया है. रविवार का दिन है. प्रभा के घर में सभी लोग दोपहर में आराम करने की तैयारी कर रहे है. उसी समय घर के बाहर आटो आकर रूकती है और उसमें से प्रभा के ससुराल के सभी लोग उतर कर घर के अंदर प्रवेश करते है.)

रामशरण -(प्रभा के पापा सबको बैठाकर) - मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है कि आप सभी लोग यहां आए हैं.

ईतवारी राम - माफ करना समधी जी! ऐसा बोलके हमें शर्मिन्दा न कीजिए.

मालती - हां समधी भाई साहब! हमने जो कुछ अपने बहु प्रभा और उसकी फुल सी बेटी के साथ किया है उसके लिए तो हमें भगवान भी शायद माफ करें.

रोहित - पापा! प्रभा और मेरी बेटी टिंकी कहां है?

रूपा - अंदर में है जीजा जी! चलो मै ले चलती हुॅ.

(रूपा, रोहित को अंदर ले जाती है.)

प्रभा - (टिंकी की तरफ देखते हुए) - टिंकी बेटी! देखो तो कौन आया है? पा..पा!

रोहित - (टिंकी को लेते हुए) - अरे! कितनी बड़ी हो गई है मेरी रानी बेटी.

रूपा - (चुटकी लेते हुए) - जीजा जी! छः माह में पहली बार देखोगे तो बड़ी लगेगी ही.

रोहित - (झेंपते हुए) - तुम भी न रूपा!

प्रभा - (बीच में) - अरे रूपा! यूं बात ही करती रहोगी या कुछ चाय पानी भी मेहमानों को दोगे.

रूपा - हां दीदी! बिल्कुल देंगे. टिंकी को जीजा जी के पास रहने दो और बाहर जाकर अपने सास ससूर से मिललो. तब तक मै चाय पानी लाती हुॅ.

प्रभा - (आंगन में निकलकर प्रणाम करने के बाद) - आप लोग सब ठीक है न!

मालती - हां बहु! पर अब तुम्हारे और टिंकी के साथ और अच्छे से रहेंगे.

इतवारी - बेटी! हम सबको माफ कर देना! रूढ़िवादी विचारों ने हम सबकी बुध्दि फेर रखी थी और हम गलती पर गलती किए जा रहे थे. धन्य हो हमारे गांव के स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की जिन्होने निक्की की टोली बनाकर हम जैसे लकीर के फकीर लोगों के मन को साफ कर दिया.

मालती - और बहू! अब जरा भी देर मत करो. आज ही अपने घर जाने की तैयारी करो.

रामशरण - पर समधी साहब! इतने दिनों बाद आए है. एक दो दिन तो रूक जाते.

ईतवारी - नहीं समधी जी! जितना जल्दी हो सके हमें जाने दीजिए. प्रायश्चित जो करना है.

रामशरण - ठीक है भाई साहब! जैसे आप लोगों की मर्जी.

(प्रभा झटपट तैयार होकर आटो में बैठ जाती है. आटो चल पड़ता है. रास्ते में टिंकी को कभी उसके दादाजी, कभी दादीजी तो कभी रोहित अपने गोद में लेते रहते है. प्रभा को बैठे-बैठे रूपा की बात याद आ रही है कि दीदी! देखना एक दिन आम नगर के लोगों के पुराने विचार भी बदलेंगे. प्रभा आसमान की ओर देखकर भगवान को धन्यवाद देते हुए मन नही मन कहती है हे प्रभु! ऐसा बदलाव सभी जगह शीघ्र आए.)

23

अधिकार और कर्तव्य

प्रथम - दृष्य

(पूर्व माध्य. शाला बजरंग नगर के शिक्षक श्री रमाकांत शर्मा कक्षा छठवी व सातवी के बच्चों को नागरिक शास्त्र में बच्चों के अधिकार पाठ पढ़ा रहे है. पाठ पूरा करने के बाद श्री शर्माजी ने बच्चों से पूछा.)

शर्मा सर -बच्चों! तो अभी आप लोगों को मैने जो-जो अधिकार बतलाया क्या वे सभी अधिकार आप लोगों को मिल रहे हैं?

वर्षा - जी सर! मुझे तो मिलता है.

जिया - सर! मुझे भी मिलता है.

(सभी बच्चों ने क्रम से कहा कि उन्हें बतलाए गए सभी अधिकार मिल रहे है.)

शर्मा सर - अच्छा चलो अब यह बतलाओ कि इनमें से कौन से अधिकार को तुम्हें और ज्यादा पाने की ईच्छा होती है?

वर्षा - जी सर! मुझे खेलने का अधिकार और जयादा चाहिए. मेरी मम्मी मुझे ज्यादा खेलने नहीं देती.

जिया - सर मुझे काम करना अच्छा नहीं लगता. मै चाहती हुं कि कुछ काम न करना पड़े.

संजना - सर! मुझे अच्छा-अच्छा खाने का मन चलता हैं मम्मी पापा कहते है कि जरूरत से ज्यादा खाओगी तो मोटी हो जाओगी.

शर्मा सर - देखो बच्चों! आप सबकी बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि हम अपने लिए चाहते तो बहुत कुछ हैं, पर दूसरों को देना नहीं चाहते.

संजय - सर! आप क्या देना-लेना बतला रहे है मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है.

विजय - मैं भी नहीं समझा सर!

शर्मा सर - देखो बच्चों! अगर हम ज्यादा खेलना चाहते है तो हमें ज्यादा पढ़ना भी पड़ेगा. उसी प्रकार अगर हम घर की थोड़ी बहुत छोटी-मोटी काम भी न करे तो वह भी गलत है.

वर्षा - सर क्या आप यह कहना चाह रहे है कि हर बच्चों को वह सब

कुछ देता है जो उनके लिए जरूरी है, तो बच्चों को भी कुछ करना चाहिए. शर्मा सर - हाॅ वर्षा! और यह सब स्व-स्फूर्त होना चाहिए. किसी दबाव या डर में नहीं और यदि ऐसा स्व-स्फुर्त होता है तभी वह बच्चा भविष्य में जिम्मेदार नागरिक बनेगा.

संजय - सर! अब ये जिम्मेदार नागरिक कौन है?

शर्मा सर - जिम्मेदार नागरिक वे है जो अपने लिए जैसा और जितना चाहे, वैसा और उतना ही दूसरों के लिए भी सोचें.

विजय - सर! कृपया इसे थोड़ा और सरल करके समझाईये न!

शर्मा सर - देखो विजय! जो हम अपने लिए चाहते है, उसे अधिकार कहते है और दूसरों के लिए जो करते है, वह कर्तव्य कहलाता है.

जिया - हां सर! अब मै समझ गई.

शर्मा सर - क्या समझ गई जिया?

जिया - यही सर की हमारे अधिकार के साथ कर्तव्य भी जुड़ा हुआ है.

शर्मा सर - बिल्कुल सही जिया. और एक जिम्मेदार नागरिक वही बनता है जो दूसरों को उनके अधिकार दिलाने में मदद करता है और कर्तव्य पालन की प्रेरणा देता है.

अंशुल - सर! पर हम तो ऐसा कुछ भी नहीं करते.

शर्मा सर - वही तो करना है अंशुल.

अंशुल - पर कैसे सर?

शर्मा सर - बतलाता हूं.

(शर्मा सर सभी बच्चों को अपनी योजना बतलाता है. बच्चे बड़े ध्यान से सुनते है और आखिर में कहते है कि सर हम यह काम कल से ही शुरू करते है.)

<u>द्वितीय दृष्य</u>

(सभी बच्चे गांव में समुह बनाकर घूम रहे है. इस दौरान उन्हें कुछ ऐसे बच्चे दिखाई देते है जो अपने घरों के आस-पास खेल रहे है तो कुछ ऐसे बच्चे भी दिखाई दिए जो बड़ों के जैसे काम कर रहे है. वहीं कुछ बच्चे ऐसे भी मिले जो बिमार अकेले घर में पड़े है. समूह इन बच्चों की सूची बनाकर स्कूल वावस आने पर शर्मा सर को देते है.)

शर्मा सर - बच्चों तो आप लोगों को कुल 7 बच्चे ऐसे मिले जिनको उनका अधिकार नहीं मिल रहा है.

बसन्त - हां सर! ऐसे बच्चों को देखकर मन दुःख से भर गया.

सप्रिया - सर! हम इन बच्चों को पहले भी देखते थे. पर जानते-समझते नहीं थे. इस कारण मन पर कुछ असर भी नहीं होता था.

शर्मा सर - और अब सुप्रिया!

सुप्रिया - सर! अब सचमुच दुःख हो रहा है.

शर्मा सर - अच्छा बच्चों! क्या आप लोगों में से कोई यह बतला सकता है कि इन सात बच्चों को कौन-कौन से अधिकार नहीं मिल रहा है?

वर्षा - सर! पहले तो बच्चे जो खेल रहे थे उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं मिल रहा है.

दीदार - और सर! चार बच्चे हमने ऐसे देखे जो बड़ों के जैसे मेहनत का काम कर रहे थे. उनका शोषण किया जा रहा था और इस प्रकार इन बच्चों को ''शोषण से मुक्ति का अधिकार नहीं मिला था.

जिया - और एक बच्चे को ''स्वास्थ्य का अधिकार'' नहीं मिला. बेचारी को जिस समय देखभाल और ईलाज की जरूरत थे उस समय उसके माता-पिता अकेले छोड़कर चले गए थे.

शर्मा सर - बहुत अच्छा! बच्चों आप सभी ने बहुत सुन्दर काम किया है. पर क्या इतना ही पर्याप्त है?

बसन्त - नहीं सर!

शर्मा सर -तो हमें क्या करना होगा?

विजय - जिम्मेदार नागरिक बनना होगा सर!

(सभी बच्चे हॅसते हुए एक साथ कहते है हा सर हम सबको जिम्मेदार नागरिक बनना होगा.)

शर्मा सर - बहुत अच्छा बच्चों! तो हम कल से अपना काम आरंभ करते है.

(सभी बच्चे एक साथ बोलते हैं - हा सर जरूर!)

तृतीय - दृष्य

(शर्मा बच्चों के इन समूहों को कक्षावार टोली का रूप देकर ''निक्की की टोली'' बनाता है. सभी बच्चे ''निक्की की टोली'' का सदस्य बनकर उत्साहित हैं और अब निक्की की टोली शर्मा सर के मार्ग दर्षन मे गाॅव में बैठक का आयोजन कर रहे है, जिसमें उन बच्चों के पालक आए हुआ है.)

निक्की की टोली (अभिवादन करने के बाद) - हमें इस मोहल्ले में बच्चे गजेन्द्र रागिनी, प्रियंका, विपाशा और दुर्गेश को हम लोगों ने बड़ों के जैसे कठिन मेहनत का काम करते देखा है और बेचारी माधुरी तो बिना ईलाज के घर में अकेली तड़फ रही थी. क्या आप लोगों को बच्चों के साथ ऐसा करना चाहिए?

हरिराम - (अभिभावक) - बच्चों! यह सब काम हम अपने मन से थोड़ी करते हैं. परिस्थिति हमसे कराती है.

निक्की की टोली - कैसी परिस्थिति बाबा?

हरिराम - गरीबी! और कैसी परिस्थिति! गरीबी के कारण हम बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते! साहूकार से कर्ज के ब्याज के रूप में अपने बच्चों को घरों में काम करने के लिए भेजना पड़ता है और जब पास में फुटी कौड़ी न हो तो अस्पताल ले जाकर ईलाज कौन करा सकता है.

शर्मा सर - तो क्या आप लोगों को आज तक किसी ने आकर नहीं बतलाया है कि ऐसे गरीब और लाचार परिवार के लिए हमारी सरकार ने बहुत से उपाय किए है?

बद्री प्रसाद -(अभिभावक) - यहा कोई नहीं आता मास्टर साहब! तो हम कैसे जानेंगे?

निक्की की टोली - देखो बाबा! हमारे सरकार ने सभी 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था बनाई है अर्थात् सभी बच्चे कक्षा आठवी तक बिना कुछ खर्च किए पढ़ सकते हैं. उन्हें मुफ्त में पुस्तकें, गणवेश व मध्यान्ह भोजन देने की व्यवस्था है.

शर्मा सर - और इसके अतिरिक्त आप जैसे भोले-भाले लोगों को साहूकारों के चंगुल से बचाने के लिए सरकार ने सभी बैंकों से कमब्याज पर उधार देने की व्यवस्था बनाई है, ताकि किसी भी बच्चे को दबाव और मजबूरी में कठिन शारीरिक श्रम न करना पड़े.

निक्की की टोली - और बाबा! गरीब लोगों को अपना और अपने बच्चों के ईलाज कराने के लिए सरकार ने सभी गरीब परिवारों को पचास हजार रूप्ए तक की ईलाज करवाने के लिए स्मार्ट-कार्ड उपलब्ध करवाया है.

टीकाराम- (अभिभावक) - मास्टर साहब और बच्चों! हमको आज तक ये सारी बातें मालूम नहीं थी. जानते होते तो कौन ऐसा माॅ-बाप होगा जो अपने बच्चों को दुःख और कष्ट में देखकर सुख अनुभव करता होगा.

हरिराम - मास्टर साहब! हम भी चाहते है कि हमारा बच्चा भी सुख से रहे, आनंद से रहे! कठिन काम करते और बिमारी से तड़फते देख मन रो उठता है, पर करते क्या!

बद्री प्रसाद - पर आप लोगों ने यहां आकर जो जानकारी हमें दी है, उससे उम्मीद की किरण जगी है. और इन सबकी ओर से मै आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम सभी अपने बच्चों को उनके जो अधिकार है, वह अवश्य देंगे.

निक्की की टोली - और बाबा! हम पूरी निक्की की टोली आपको यह विश्वास दिलाते है कि जब भी आप लोगों को किसी प्रकार की सहायता या सरकारी योजनाओं की जानकारी की जरूरत पड़ेगी तब हम सदैव आप लोगों के साथ खड़े होंगे.

(सभी अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजने व उनके अधिकारों की रक्षा की वचन देते है. शर्मा सर निक्की की टोली के साथ स्कूल वापस आता है. आज सभी बच्चों की चेहरे पर कर्तव्यपालन की खुशी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है.)

<u>पंचम-दृष्य</u>

(लगभग सात माह बाद आज बजरंग नगर में खुशी और उल्लास का माहौल है. सभी लोग एक ही चर्चा कर रहे हैं कि कैसे शर्मा सर के मार्ग-दर्षन में ''निक्की की टोली'' ने काम करके इस गाॅव के अधिकारों से वंचित लोगों को उनके अधिकार दिलाने में मदद की है. आज जिला कलेक्टर श्री विक्रमधर चैहान जी ''निक्की की टोली'' को पुरस्कार देने आए हुए है.)

शर्मा सर (सभी उपस्थित लोगों के अभिवादन पश्चात्) - समस्त ग्रामवासियों जैसा कि आप जानते है आज हमारे बीच जिला कलेक्टर महोदय ''निक्की की टोली'' को पुरस्कृत करने आए हुए है. अब मै उन्हें सादर आमंत्रित करते हुए आग्रह करता हुं कि इस अवसर पर दो शब्द कहते हुए हमारा मार्गदर्शन करें.

कलेक्टर महोदय, - (धन्यवाद देने के बाद) - समस्त ग्रामवासी एवं प्यारे बच्चों! यह सचमुच गर्व का पल है! आज तक हमने देखा है कि हम केवल अपने अधिकारों की बात करते है, उसके लिए संघर्ष भी करते हैं, पर जहां दूसरों के अधिकारों की बात आती है, वहां सब मौन हो जाते हैं. यही स्थिति कर्तव्यपालन में भी होता है. हम यह तो चाहते हैं कि दुसरा अपने कर्तव्यों का पालन करें और हम न करें. ग्रामवासियों बड़ी बात यह होती है जब हम अपने अधिकारों के साथ-साथ वंचित लोगों को उनका अधिकार पाने के लिए जागरूक करें, संघर्ष करें. बड़ी बात यह होती है, जब हम अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए दुसरों को भी कर्तव्यपालन के लिए प्रेरित करें और यही सब कुछ आपके गाॅव के ''निक्की की टोली'' के बच्चों ने किया है. मैं उन्हें शुभकामना देता हुं कि वे ऐसे ही समाज में जागरूकता की रोशनी बिखेरते रहे. धन्यवाद.

(उपस्थित जन समुदाय व्दारा ताली बजाकर कलेक्टर महोदय का सम्मान किया जाता है. कलेक्टर महोदय ''निक्की की टोली'' को पुरस्कृत कर वापस अपने मुख्यालय की ओर चला जाता है)

निक्की की टोली - सर! कलेक्टर महोदय ने कितनी सुन्दर बातें कही न!

शर्मा सर - हां बच्चों! और उनके बातों में एक स्पष्ट संदेश भी था.

निक्की की टोली - स्पष्ट संदेश! क्या सर?

शर्मा सर - यहीं की केवल नागरिक नहीं, जिम्मेदार नागरिक बनें.

(निक्की की टोली में सम्मिलित सभी बच्चे मुस्कुराते हुए अपने अपने घरों की ओर चले जाते है.)

24

फैसला

प्रथम - दृष्य

(महाशिवरात्री का दिन है. सभी अपने-अपने घरों में मेला जाने की तैयारी कर रहे है. गुंजन भी नई कपड़े पहनकर मेला जाने के लिए तैयार बैठी है. उसी समय पड़ोस में रहने वाली उसकी सहेली राधा बुलाने आती है. रास्ते में गुंजन, राधा से कहती है.)

गुंजन - वाह! राधा तुम्हारी ड्रेस कितनी सुन्दर है. कौन लेकर आया?

राधा - कोई नहीं गुंजन. मैं खुद पापा के साथ शहर गई थी कपड़ा खरीदने के लिए.

गुंजन - तुम खुद गई थी और खुद पसंद भी की?

राधा - हाँ! हाँ. तो क्या मैं शहर धूल धक्कड़ खाने जाती. क्यों तुम भी तो नई कपड़ा पहनी हो, उसे तुमने खुद नहीं खरींदा है?

गुंजन - नहीं राधा. पहली तो मुझे खरीदारी करने शहर ले जाते नहीं और अगर पापा से जिद्द करने पर ले भी जाए तो वहाँ मुझसे पूछते नहीं. अपने मन का ले लेते हैं.

राधा - और तू उपयोग भी कर लेती है?

गुंजन - तो क्या करूँगी बहन. अब देखो न यह आज जो मैं नई कपड़ा पहनी हूँ, वह भी मेरी पसन्द का नहीं है.

राधा - सच कहुँ गुंजन मैं तुम्हारे स्थान पर होती तो बिल्कुल नहीं पहनती. आखिर तुम बोलती क्यों नहीं?

गुंजन - बोलती हूँ बहन. पर सुने तब तो न. बोल देते हैं कि अभी तुम बच्ची हो? क्या करना है, क्या लेना है, इसके बारे में ज्यादा समझदारी नहीं है.

राधा - वाह! हम दोनों अब दसवीं कक्षा में पढ़ रहे हैं और अब भी बच्चे हैं? जानती हो गुंजन मैं जब से छठवीं पढ़ना शुरू की हूँ, तब से अपने मन के अनुसार ही करती हूँ. मुझे कैसे कपड़े पहनने हैं, कैसी खाना, खाना है, किससे बात करना है, कब क्या पढ़ना है, यह सब मेरे अनुसार होता है.

गुंजन - हमारे यहाँ तो केवल भईया की बातों को ही सुनते हैं.कभी-कभी तो सोच कर दुःख भी होता है कि इसका अंत कब होगा?

राधा - (मजाक करते हुए) - गुंजन! यहाँ मेले में तो अपने पसन्द के अनुसार कर सकती हो न कि मम्मी-पापा सामान और खाने-पीने के सूची बनाकर हाथ में रख दिए है?

गुंजन - तू भी न राधा.

(दोनों हँसते हुए मेला देखते हैं, घूमते-फिरते खाते-पीते है और समय होने पर वापस घर की ओर कदम बढ़ाते हैं.)

<u>व्दितीय - दृष्य</u>

(दसवीं का रिजल्ट निकल चुका था. गुंजन और राधा दोनों प्रथम श्रेणी में पास हुए थे. अगले कक्षा में भर्ती की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी. राधा कक्षा ग्यारहवीं में वाणिज्य विषय में प्रवेश ली थी. गुंजन अभी कहीं भी प्रवेश नहीं ली थी. देर होते देखकर राधा, गुंजन के यहाँ आती है और पूछती है.)

राधा - क्यों गुंजन. हमारे साथ पढ़ने वाले सभी बच्चे, चाहे जो भी विषय लेकर पढ़े, ग्यारहवीं में भर्ती ले लिए हैं. एक तुम ही हो, जो पता नहीं क्यों अभी तक भर्ती नहीं हुए हो. पोथी-पतरा दिखाकर प्रवेश लेगी क्या?

गुंजन - (गंभीर स्वर में) -नहीं राधा. मेरा चलता तो मैं तो कब का प्रवेश ले लेती. पर क्या करूँ? तुमको तो बतलाई थी न.

राधा - हाँ बतलाई तो थी. पर गुंजन जरा सोंचो. ये कोई कपड़ा खरीदना या पहनना नहीं है. पढ़ना-लिखना अपने रूचि और क्षमता के अनुसार ही ठीक है, दूसरों के अनुसार नहीं.

गुंजन - मैं आखिर क्या करूँ बहन. पापा जिद्द में अड़े है कि गणित लेकर ही पढ़ना है और मैं कहती हूँ कि मुझे विज्ञान लेकर पढ़ना है.

राधा - गुंजन! तू सच में अपने पापा से बोली है?

गुंजन - सीधा-सीधा तो नहीं बोली हूँ. पर हाँ इतना जरूर बोली हूँ कि पापा मुझे गणित कठिन लगता है.

राधा - तू सीधा-सीधा बोलना कब सीखेगी गुंजन. अभी भी समय है. मैं यह नहीं कहती की तुम अपने मम्मी-पापा के बातों का विरोध करे. पर यह जरूर कहूँगी की जिससे तुम्हारी खुद की जीवन गहराई से जुड़ा हो, कम से कम वहाँ तो अपने अनुसार किया कर.

गुंजन - तू ठीक कह रही है राधा. मैं कब से सोच रही हूं कि पापा से खुलकर बात करूँगी और आज कोशिश भी करूँगी.

राधा - यह हुई न बात. और गुंजन कहीं आज तुम चुकी न तो सोच लेना आगे बहुत पछताना पड़ सकता है.

गुंजन - पछताना पड़ सकता है ओ कैसे?

राधा - (हँसते हुए) - ओ ऐसे मेरी प्यारी सहेली कि एक दिन चाचाजी तुम्हारी शादी भी तुमसे पूछे बिना, अपनी पसंद के लड़के से कर देगा और तुम देखती रह जाओगी.

गुंजन - (शर्माते हुए) - धत. राधा तू भी न.

(राधा मुस्कुराते हुए अपने घर जाने के लिए निकल जाती है. गुंजन घर के काम करने लगती है, पर उसके मन में राधा की कही बात कि एक दिन चाचाजी अपनी पसन्द के लड़के से उसकी शादी का देगा, गुंजते रहता है.

<u>तृतीय - दृष्य</u>

(गुंजन अपने पापा से हिम्मत करके बात करती है और अंत में उसके पापा गुंजन के फैसले पर न हाँ कहता है, और न नहीं! गुंजन विज्ञान संकाय में प्रवेश ले लेती है. त्रैमासिक परीक्षा में गुंजन और राधा अपने-अपने संकाय में सबसे ज्यादा अंक पाए वहीं ऐसे बच्चे जो दसवीं बोर्ड में प्रथम श्रेणी पास हुए थे, वे भी अनुत्तीर्ण हो गए. इस बात से चिंतित प्राचार्य श्री रामकृष्ण सोनकर अपने स्टाफ से चर्चा कर रहे हैं.)

प्राचार्य - त्रिपाठी जी! आप बतलाईये ग्यारहवीं गणित का रिजल्ट इतना कमजोर कैसे रहा?

त्रिपाठी सर -सर! आजकल के बच्चे दसवीं तक तो ठीक से पढ़ते हैं, उसके बाद बस मोबाईल के चक्कर में फँस जाते हैं.

प्राचार्य - त्रिपाठी जी आपका कहना सभी बच्चों के साथ यही हो यह मैं मान नहीं सकता क्योंकि कई ऐसे बच्चे भी अनुतीर्ण हो गए हैं जिनके हाथों में कभी मोबाईल नहीं रहा है. और सीता मैडम आपके विज्ञान संकाय में भी ऐसा ही है?

सीता - हाँ सर. ओ तो बच्चे जो स्कूल में पढ़ लिए सो पढ़ लिए. घर में तो पुस्तक उठाकर नहीं देखते. आप तो जानते हैं सर की मैं अपने तरफ से पढ़ाने में कोई कमीं नहीं करती.

प्राचार्य - और गढ़ेवाल जी! आपके वाणिज्य संकाय का रिजल्ट भी कोई अच्छा नहीं है.

गढ़ेवाल -हाँ सर! मुझे तो लगता है कि वाणिज्य अभी नया-नया हमारे संस्था में खुला है, इस कारण विद्यार्थी ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं.

प्राचार्य - गढ़ेवाल जी. विषय नया है. तो सबको प्रभावित होना था. अब उस लड़की राधा को ही ले लो कितना अच्छा अंक पाई है और इसी प्रकार विज्ञान संकाय में गुंजन को ही ले लो अभूत पूर्व प्रदर्षन की है. इसी प्रकार और कई बच्चे हैं, जिन्होंने अच्छा किया है.

(प्राचार्य महोदय भृत्य दुलारी से कहता है कि वह राधा, गुंजन, अमर, सुमित और प्राँजल को बुलाकर लाए. चपरासी जाता है और बच्चों को बुलाकर लाता है.)

प्राचार्य - तुम सबको बधाई हो.

सभी - जी सर! सब आपका आशीर्वाद है.

प्राचार्य - नहीं बच्चो. यह सब तुम लोगों की मेहनत और लगन का फल है. अच्छा बच्चों यह बतलाओ की यह जो इतना अच्छा अंक तुम लोग लाए हो, उसका क्या कारण हो सकता है?

गुंजन - जी सर विषय में हमारी रूचि.

राधा - हाँ सर विषय में रूचि होने से पढ़ने का मन चलता है.

प्रांजल - और रूचि से ही हम विषय को जल्दी समझ सकते है.

सुमित - सर! जिस विषय में रूचि हो, वह हमें आनंद देता है.

अमर - और सर, जिसे हम आनंद के साथ पढ़े उसे लम्बे समय तक याद भी रखते हैं.

प्राचार्य - तो बच्चो. तुम सबके अनुसार विषय में रूचि होने के कारण अच्छे नम्बर आए.

सभी - हाँ सर! हमारे अनुसार यहीं सबसे बड़ा कारण है.

प्राचार्य - ठीक हैं बच्चों जाकर अपनी कक्षा में बैठो.

(सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में चले जाते हैं. शिक्षकगण, प्राचार्य के साथ वहीं रूके रहते है. प्राचार्य भृत्य को भेजकर अब उन बच्चों को बुलवाता है जो अप्रत्याशित रूप से कम नम्बर पाए थे. चर्चा के बाद उन्हें कक्षा में बैठने को कहकर प्राचार्य महोदय कुछ सोचने लगता है.)

<u>चतुर्थ - दृष्य</u>

(प्राचार्य सोनकर जी को यह महसूस होता है कि बच्चों के प्रदर्शन में रूचि का सर्वप्रमुख योगदान होता है. सोनकर जी सीता मैडम और राधा, गुंजन तथा अन्य बच्चों को पुनः बुलवाता है और उनसे कहता है.)

प्राचार्य - आप सभी से चर्चा के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हमें बच्चों के कक्षा में प्रदर्शन में सुधार हेतु बच्चों का एक समूह बनाना चाहिए और इस समूह का नाम ''निक्की की टोली'' होगा.

सीता मैडम - पर सर! कक्षा में बच्चों के प्रदर्शन में सुधार, बच्चों के समूह से कैसे होगा?

प्राचार्य - होगा सीता. ऐसे बच्चे जिनका प्रदर्शन ठीक नहीं रहा है, उसका मुख्य कारण जबरदस्ती विषय में प्रवेश दिलाना है.

सीता मैडम- सर! जबरदस्ती प्रवेश. मैं समझी नहीं.

प्राचार्य - बाहरी रूप में तो यह जबरदस्ती प्रवेश लगता है सीता. पर वास्तविक रूप में यह बच्चों के फैसले लेने की क्षमता से जुड़ा हुआ है.

सीता - फैसले लेने की क्षमता से. ओ कैसे सर.

प्राचार्य - जब आप ''निक्की की टोली'' के साथ काम करना शुरू करोगी न मैडम तब आपको भी यह अनुभव होगा कि ऐसे बच्चे जिनका प्रदर्शन ठीक नहीं रहा है, वे अपने से संबंधित छोटे-छोटे काम भी घर वालों की मर्जी से करते हैं जैसे कब कहाँ जाना है, किसके साथ उठना- बैठना है, कब क्या और कितना पढ़ना है, यहाँ तक की किस रंग के कपड़े पहनना है. अब आप ही सोचो कि जो बच्चा छोटे-छोटे फैसले नहीं ले सकते, वे बड़े फैसले लेना कब और कैसे सीखेंगे.

सीता - हाँ सर! आपकी बातें मुझे भी अब जँच रही है. हम लोग घरों में इन्हें छोटी-छऩेटी बात समझकर ध्यान नही देते, जबकि इन्हीं छोटी-छोटी बातों से बड़ी बातें बनती है.

गुंजन - हाँ मैडम. सरजी सही कह रहे हैं. मेरे घर वाले भी ऐसा ही करते थे. और जब कभी मैं स्वयं कुछ सोचकर करना चाहती थी तो एक प्रकार का डर रहता था. ओ तो भला हो राधा का जिसने मुझे हिम्मत दी कि अपने जीवन से जुड़ी बातों का फैसला हम खुद करें और मैंने फैसला किया और परिणाम आप सबके सामने है.

प्राचार्य - बहुत अच्छा गुंजन. और मैं चाहता हूं कि तुम हमारे स्कूल की ''निक्की की टोली'' का नेतृत्व करो और सभी बच्चों को प्रेरित करते हुए सीखाओं की हमे अपने जिन्दगी की अहम बातों पर निर्णय खुद लेना चाहिए.

गुंजन -जी सर! मैं अभी से अपना काम शुरू करती हूँ.

(गुंजन की बात को सुनकर सभी मुस्कुराते है. सीता मैडम बच्चों को लेकर कक्षा की ओर चली जाती है.)

पंचम - दृष्य

(निक्की की टोली के सतत् प्रयासों से शा.उ.मा.शा. सामपुर के बच्चे फैसले लेना सीख रहे है. इसका परिणाम कक्षा ग्यारहवीं में विषय परिवर्तन में दिखाई देता है. अब बच्चे अपने रूचि केअनुसार विषय परिवर्तित कर लिए है. अर्द्धवार्षिक परीक्षा का परिणम त्रैमासिक परीक्षा के विपरीत रहा. 80 प्रतिशत विद्यार्थी अपने अपने संकायों में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए. प्राचार्य गदगद होकर बच्चों से कहता है.)

प्राचार्य - बच्चों! इस बार का परिणाम कैसा रहा?

प्रांजल - बहुत ही अच्छा सर!

प्राचार्य - और बच्चों! जानते हो ऐसा सम्भव कैसे हुआ?

मिताली -हाँ सर. हम सभी अपनी रूचियों के विषय को पढ़े.

प्राचार्य - और इससे आप लोगों ने क्या सीखा?

रणवीर - यहीं सर की हमें फैसले लेना सींखना चाहिए और सीखने के लिए हमें फैसले लेना होगा. हाँ जहाँ कहीं हमें बड़ों के सलाह की जरूरत महसूस हो, वहाँ सलाह व मार्गदशन भी अवष्य लें.

प्राचार्य - ठीक है बच्चों! मुझे खुशी है कि जो सन्देश मैं आप सभी तक पहुँचाना चाहता था, उसमें सफल रहा और इस सफलता का श्रेय आप सभी की टोली ''निक्की की टोली'' को है.

सभी बच्चे -जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट से ''निक्की की टोली'' का स्वागत करते हैं.

(प्राचार्य अपने कक्ष की ओर चला जाता है. बच्चे अपने-अपने कक्षाओं में जाकर बैठते हैं. पिरिएड की घंटी बजतें ही कक्षाओं में पढ़ाई आरंभ होती है.)

षष्ठम् - दृष्य

(आज छुट्टी का दिन है. राधा, गुंजन के यहाँ बैठने आती है, तब देखती है कि गुंजन कहीं जाने की तैयारी कर रही है. राधा, गुंजन से पूछती है.)

राधा - गुंजन! तू कहाँ जा रही है?

गुंजन - राधा! मैं पापा के साथ शहर जा रही हूं.

राधा - क्यो? गुंजन -अपने लिए सायकल खरीदने.

राधा - ओ गुंजन. अपने पापा को सायकल लाने दो न. आज छुट्टी है, घर में मजे करते हैं फालतू क्यों धूल-धक्कड़ खाने जा रही हो.

गुंजन के पापा-(दोनों की बात सुनकर) - नहीं राधा बेटी! गुंजन को जाने दो. नहीं तो तुम बच्चों की टोली. अरे ओ क्या नाम रखे हो उसका...

राधा - जी चचा! ''निक्की की टोली''

गुंजन के पापा-हाँ, हाँ! वहीं ''निक्की की टोली'' कहेंगे की देखो गुंजन अपनी छोटे-छोटे काम भी मम्मी-पापा से पूछकर करती है.

राधा - (हँसते हुए) - हाँ चाचाजी. ओ तो मैं जान-बुझकर गुंजन से कह रही थी.

(राधा, गुंजन से अगले दिन स्कूल में मिलने की बात कहकर घर चली जाती है. कुछ देर बाद ही गुंजन भी अपने पापा के साथ मोटर सायकल में शहर की ओर निकल जाते है.)

25

<u>नया - सबेरा</u>

<u>प्रथम - दृष्य</u>

(ठाकुर विक्रम सिंह की पोती निशा शहर से पढ़कर अपने गाँव आई है. निशा से उसके घर के सभी लोग नाराज हैं क्योंकि वह शादी के बाद अपने ससुराल में न रहकर सीधा पढ़ने शहर चली गई थी. इस बात को हुए पाँच वर्ष हो गया था, पर किसी भी सदस्य की नाराजगीं दूर नहीं हुई थी. निशा का क्या करें इसी बात को सोंचते हुए ठाकुर विक्रम सिंह बैठा है, उसी समय निशा के पिताजी उमेन्द्र सिंह आकर कहता है.)

उमेन्द्र सिंह - पिताजी! अब तो निशा शहर से पढ़कर वापस आ गई है. समधी साहब को सूचना दे देते हैं कि आकर ले जाएँ.

विक्रम सिंह - बेटा! तुम्हें क्या लगता है कि समधी जी निशा को ले जाएँगे. वे लोग कितना मना किए थे कि हमारे घर की औरतें शादी-विवाह के बाद घर से बाहर नहीं निकलती. पर निशा है कि अपने जिइद पर ही रही और बिना किसी के परवाह किए शहर चली गई. बेटा! अब किस मुंह से कहेंगे कि अपनी बहु को ले जाओ.

उमेन्द्र सिंह - मानता हूँ पिताजी उस समय निशा ने गलती की थी. पर इन पाँच वर्षो में समाज बहुत तेजी से बदला है और बदल भी रहा है. मेरे आँखों के सामने ही ऐसे कई उदाहरण है. जिन घरों की लड़कियाँ पहले दसवीं, बारहवीं से आगे पढ़ने के लिए सोंच भी नहीं सकती थी, उन्हीं घरों की लड़कियाँ आज शहरों में अकेले रहकर न केवल पढ़ रही है, बल्कि नौकरियाँ भी कर रही है. कितनों की तो उमर तीस के पार हो चुका है और शादी नहीं किए हैं.

विक्रम सिंह - बेटा! तो इन सब बातों से समधी जी गजेन्द्र सिंह को क्या मतलब है. तुम तो जानते हो की जब निशा ने पढ़ने की जिहद की थी तो समधी जी ने स्पष्ट बोल दिया था कि बहु फिर तुमसे हमारा कोई संबंध नहीं रहेगा.

उमेन्द्र सिंह - हाँ पिताजी. ओ सब बात ठीक है. उस समय का परिवेश ही वैसा था. समधी जी समय के अनुसार अपना विचार रख दिए थे. पर जैसा मैंने अभी कहा न कि समाज बदल रहा है, तो निश्चित ही समधी जी के विचारों में भी परिवर्तन आया होगा.

विक्रम सिंह - अच्छा बेटा! तुम यह बतलाओ की पहले तो तुम भी निशा के शहर जाने का विरोधी था. पर अब क्या हुआ जो पक्ष लेने लगा?

उमेन्द्र सिंह - पिताजी. मैं उस समय भी गलत नहीं था और आज भी गलत नहीं हूँ. मैं तो केवल समय की धारा को पहचान कर उसके अनुसार चलने का प्रयास कर रहा हूँ.

विक्रम सिंह - ठीक है बेठा! एक के बदलने से दुनिया नहीं बदल जाती. फिर भी मैं समधी जी से बात करके देखता हूँ.

उमेन्द्र सिंह - ठीक है पिताजी.

ठाकुर विक्रम सिंह फोन पर बात करने लगता है और उमेन्द्र सिंह घर के अंदर जाकर काम में जुट जाता है.)

<u>द्वितीय - दृष्य</u>

(निशा की सहेली आकांक्षा भी गाँव आई हुई है. निशा और आकांक्षा दोनों की ही शादी बारहवीं पास होते ही कर दी गई थी, लेकिन दोनों ने शादी के बाद बहुत विरोध के बावजूद आगे पढ़ने का संकल्प छोड़ा नहीं और शहर चले गए. इस बीच आकांक्षा पी.एस.सी. के व्दारा मुख्य कार्यपालन अधिकारी के पद पर चयनित होकर जनपद पंचायत जामवन्त नगर में पदस्थ है और छुट्टी में अपने गाँव आई है. वह निशा के यहाँ बैठने आती है.)

आकांक्षा - (प्रणाम कर के) - दादाजी. निशा है?

(विक्रम सिंह बिना कुछ बोले अंदर की ओर इशारा करता है. आकांक्षा निशा के पिताजी, मम्मीजी को प्रणाम करके सीधा निशा के कमरे में जाती है.)

निशा - (आकांक्षा को देखकर) - अरे आकांक्षा तुम! तुम्हें अब याद आई.

आकांक्षा - हाँ रे! क्या करूँ. तुम जब से फोन में बतलाई थी कि पढ़ाई पूरी करके गाँव आ गई हूँ, तब से साथ-साथ बैठकर ढ़ेर सारी बातें करने की इच्छा थी.

निशा - वैसे ही न जैसे हाईस्कूल के जमाने में घंटो बैठकर बातें करते थे.

आकांक्षा - और निशा! तुम्हें याद है तुम्हारे दादाजी मुझे कितनों बार भगा देता था और बोलता था कि ये लड़की एक बार आ जाती है तो जाने का नाम ही नहीं लेती.

निशा - और आकांक्षा! तुम्हें बुरा लगता रहा होगा न.

आकांक्षा - नहीं यार! पर मैं यह भी नहीं भूली की दादाजी जितना तुमसे प्रेम करता था, उतना ही मुझसे भी.

निशा - अभी आई तो दादाजी से मिले?

आकांक्षा - हाँ! प्रणाम की. कुछ बोला नहीं, ईशारा करके बतला दिया कि तुम अंदर हो. लगता है अभी तक नाराज है?

निशा - हाँ आकांक्षा. सिवाय पापा के सब कोई! पापा ही धीरे-धीरे शाँत हो रहा है.

आकांक्षा - तुम चिन्ता मत करो निशा. कहीं से तो शाँत होने की प्रक्रिया शुरू हुई है. मेरे ही घर वाले और ससुराल वाले को ले लो. कितना विरोध किए थे, लेकिन अब तुम्हारे जीजाजी भी बोलते है कि जिहद करके ठीक किए.

निशा - और कितने दिन रहेगी यहाँ?

आकांक्षा - बस! कल और. उसके बाद जाना है?

निशा - क्यो? इतनी जल्दी.

आकांक्षा - हाँ निशा. ओ पूरे जनपद में ''बेटी-बचाओ-बेटी-पढ़ाओ'' अभियान चल रहा है न इसलिए. और निशा जानती हो तुम्हारा ससुराल भी जामवन्त नगर में सम्मिलित किया गया है.

निशा - तो ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं'' अभियान में मुख्य लक्ष्य क्या है?

आकांक्षा - निशा! मैं तो अपने जनपद के सभी पूर्व माध्य. से लेकर हायर सेकेण्डरी तक के स्कूलों को अपने लक्ष्य के केन्द्र बिन्दु में रखी हूँ. मैं सभी स्कूलों में जाकर बच्चों की समूह बनाकर ''निक्की की टोली'' नाम देती हूँ.

निशा - स्कूल को केन्द्र बिन्दु बनाने का कारण?

आकांक्षा - निशा तुम तो जानती हो के ये बच्चे ही आगे चलकर अभिभावक बनेंगे और मैं सोंची की अगर समाज में व्यापक परिवर्तन लाना हो तो शुरूआत बच्चों से होनी चाहिए.

निशा - ये तुमने बहुत ही अच्छा किया निशा. तुम्हारी ''निक्की की टोली'' को मेरी ओर से असीम शुभकामना कि वे सामाजिक परिवर्तन के शक्तिशाली वाहक बने.

आकांक्षा - ठीक है निशा! अब चलती हूँ. अगले बार फिर मिलने आऊँगी.

(आकांक्षा अपने घर चली आती है और निशा पलंग पर बैठे-बैठे अपने भविष्य की योजना बनाने लगती है.)

तृतीय - दृष्य

(जब से ठाकुर विक्रम सिंह ने निशा के ससुर वीर बहादुर सिंह को फोन कर के बोला था, तभी से वह असमंजस की स्थिति में था कि बहु को लाया जाये या न लाया जाये. उसने अपने बेटे समर बहादुर सिंह से एक बार पुछने का विचार किया, जो इस समय छुट्टी में शहर से गाँव आया हुआ था.)

वीर बहादुर सिंह - तो बेटा! तुम्हारा क्या कहना है?

समर - जी पिताजी. ये तो आपको ही निर्णय लेना है. मैं कल भी आपके फैसले के साथ था और आज भी हूँ.

वीर बहादुर सिंह - बेटा! पहले की बात याद आती है, तब तो मन करता है कि पढ़ी ले जितना पढ़ने का मन है. फिर अपनी बेटी शकुन्तला को देखता हूँ तो लगता है कि निशा ने ही कौन सी गलती कर दी है.

समर - हाँ पिताजी! हमारी बहन शकुन्तला भी तो पढ़ने की जिद्द में अपने ससुराल नही जा रही है.वीर
बहादुर सिंह - और बेटा! इन दिनों तो मैं एक नई ही बात देख और सुन रहा हूँ.

समर - नई बात. वह क्या पिताजी?

वीर बहादुर सिंह - बेटा. जानते हो ये वहीं गाँव वाले हैं जो निशा के शहर में पढ़ाई करने जाने के बात को लेकर हम पर ताने कसते थे कि ओ देखो गाँव का बड़ा आदमी बना फिरता है और अपनी बहु को जगह-जगह नौकरी कराएँगे और अब वहीं लोग ताने मारते हैं कि देखो ये अपने आपको बड़ा आदमी कहता फिरता है और मन को कितना छोटा रखा है. बेचारी अपनी बहू को सीता के जैसे त्याग दिए हैं.

समर - पिताजी! पर इस गाँव में यह चमत्कार हुआ कैसे? कई बार तो हम लोगों को इन गाँव वालों के कारण अपने आधुनिक विचार को छोड़कर रूढ़िवादी विचारों पर चलना पड़ा है.

वीर बहादुर सिंह- हाँ बेटा! यह चमत्कार और कोई नहीं, बल्कि ''निक्की की टोली'' के बच्चे ला रहे हैं.

समर सिंह - ''निक्की की टोली'' यह क्या है पिताजी?

वीर बहादुर - ''निक्की की टोली'' कक्षा 6 से लेकर बारहवीं तक पढ़ने वाले बच्चों का समूह है बेटा. इसमें लड़कियाँ ज्यादा होती है और इसका कारण यह है कि माना जाता है कि हमारे समाज की बहुत सी बातें, परम्पराएँ उनके प्रगति के विरोध में है. और जानते हो बेटा इन सबके लिए प्रेरणा स्त्रोत कौन है?

समर सिंह - कौन है पिताजी?

वीर बहादुर सिंह - अरे वहीं तुम्हारे ससुराल की लड़की आकांक्षा पाण्डेय.

समर सिंह - पिताजी! कहीं आप उस आकांक्षा पाण्डेय की बात तो नहीं कर रहे हैं जो अपने जनपद पंचायत जामवन्त नगर की मुख्य कार्यपालन अधिकारी है और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं अभियान चला रही है.

वीर बहादुर सिंह - हाँ बेटा वहीं है. और मैंने तो यहाँ तक सुना है कि वह हमारी बहु निशा की अच्छी सहेली भी है. दोनों साथ-साथ पले, बढ़े और पढ़े हैं.

समर सिंह - (बात बदलते हुए) - तो आखिरी में आपने निशा के दादाजी को क्या जवाब दिया पिताजी?वीर बहादुर सिंह - उस समय तो कुछ नहीं बेटा! पर अब समय आ गया है कुछ जवाब देने का.

समर सिंह - मैं यही तो जानना चाह रहा हूँ पिताजी कि आपका जवाब क्या होगा?

वीर बहादुर सिंह - अरे बेटा. उतावला क्यों हो रहा है? अभी तो थोड़ी देर पहले कह रहा था कि पिताजी मैं कल भी आपके फैसले के साथ था और आज थी.

समर सिंह - (शर्माते हुए) - जी पिताजी! बात वैसी नहीं है, जैसा आप सोंच रहे हैं. मैं तो बस यहीं कहना चाह रहा हूं कि जब छोटे-छोटे लोग बदल रहे हैं, तो हमें भी उनके साथ चलना चाहिए.

वीर बहादुर सिंह - (मुस्कुराते हुए) - तुम क्या सोंच रहे हो इसको छोड़ो बेटा. बाप हँू तुम्हारा.

(अपने पिता की बात को सुनकर समर वहाँ से गाँव के अंदर रहने वाले अपने मित्र के घर की ओर मुस्कुराते हुए चला जाता है. वीर बहादुर सिंह वहीं बैठा अखबार पढ़ने लगता हैं.)

<u>चतुर्थ - दृष्य</u>

(दूसरे दिन ठाकुर वीर बहादुर सिंह अपने बेटे के साथ निशा को लेने गाँव आता है. आनंद मय वातावरण में निशा की बिदाई होती है और अब वह अपने ससुराल में सुख से रह रही है. एक दिन खाने पर जब सब लोग बैठे रहते हैं तब निशा अपने ससुर से कहती है.)

निशा - पिताजी! मैं आपसे कुछ कहना चाह रही हूँ.

वीर बहादुर - हाँ, हाँ बेटी कहो क्या कहना चाह रही है?

निशा - पिताजी! आप कहीं पहले की तरह नाराज तो नहीं होगे?

वीर बहादुर - अरे बेटी. पहले की तरह होता तो क्या तुम इस समय हम सबको खाना खिला रही होती?

निशा - (मुस्कुराते हुए) - जी पिताजी! मैं चाह रही हूँ कि आगे राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में बैठूँ.

वीर बहादुर - यह तो बड़ी खुशी की बात है बेटी. और इस कार्य के लिए तुम्हें जिस तरह की भी सहायता हम लोगों से चाहिए उसे निःसंकोच कहना बेटी. हाँ एक बात और ...

निशा - (डरते हुए बीच में) - ओ क्या पिताजी?

वीर बहादुर - यहीं बेटी की अब अपने जीवन से संबंधित बातों के फैसले तुम खुद ही लिया करो, हमसे पूछने की आवश्यकता नहीं है. और हाँ वहीं पूछना भी है तो अपने पति से पूछना!

निशा - जी पिता जी.

वीर बहादुर - देखो बेटी. हमको जितना जीना है जी लिए. आगे का समय तुम लोगों का है, तुम्हारे बच्चों का है. इन पांच-छः सालों में मैंने यही सीखा कि धारा के विपरीत चलना कितना कठिन होता है और धारा के साथ चलना कितना सरल. अच्छे चिजों को करने में हमें किसी का बाट नहीं जोहना चाहिए.

समर सिंह (हँसते हुए) - पिताजी. ये कहिए न कि ''जहाँ जगे, वहीं सवेरा''.

वीर बहादुर - (हँसते हुए) - हाँ बेटा! ''जहाँ जगो वहीं सवेरा'' और एक नया सवेरा.

(सभी खाना खाकर अपने कमरे में सोने चले जाते हैं. निशा प्रसन्न चिन्त मन से घर का काम करने लगती है.)

<u>पंचम - दृष्य</u>

(निशा दिन-रात परिश्रम करके राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में बैठती है और अंत में उसे उप जिलाधीश का पद मिलता है. कार्य भार ग्रहण करने के बाद वह जब अपने ससुराल के घर पहुंचती है तो वहाँ सभी गाँव वालों के साथ-साथ निशा के दादा, दादी, मम्मी, पापा, अन्य रिश्तेदार व आकांक्षा के अतिरिक्त ''निक्की की टोली'' के बच्चे स्वागत करने के लिए खड़े हैं.)

निक्की की टोली (निशा को माला पहनाते हुए) - निशा दीदी. आप हम सभी बच्चों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है.

निशा - और बच्चों! जानती हो मेरा प्रेरणा स्त्रोत कौन है?

निक्की की टोली - कौन है दीदी?

निशा - हमारे सभी स्कूलों में कार्य करने वाली ''निक्की की टोली''

निक्की की टोली - सच में दीदी. पर हमें प्रेरणा तो आकांक्षा दीदी ने दी है.

निशा - बच्चों तो मैं आकांक्षा को ''निक्की की टोली'' से अलग मानती ही नहीं. सभी निक्की की टोली तुम्हारी आकांक्षा दीदी की परिश्रम का फल है और मेरा यह रूप भी.

आकांक्षा - ऐ निशा! चल अब तू ज्यादा बोल रही है और निक्की की टोली के बच्चों ने जो कविता तुम्हारे स्वागत में बनाई है उसे सुन.

निक्की टोली -

कटी मुश्किलों की रातें,

नया भोर हुआ है अभी.

न छोड़ो इस पल को,

स्वागत करो मिलकर सभी..

धारा जैसी रूकती नही,

वैसी है परिवर्तन की बयार.

त्याग कुंठा और रूढ़िवादिता,

आत्मसात् कर नए विचार..

बदल अपने आप को,

बदल जाएगा पूरा देश.

निक्की के साथ-साथ,

नए सवेरे का है यह संदेश..

निशा - (कविता के अंत में) - इस अवसर पर आप सभी ने मेरे लिए जो स्नेह और अपनापन दिखाया है, उसके लिए मैं जीवन भर ऋणी रहूँगी और इस ऋण को चुकाने सदैव आपकी सेवा व उत्थान में अपने को समर्पित रखूँगी..

(सभी लोग अपने-अपने घरों की ओर चले जाते हैं. निशा अपने घर के सभी सदस्यों और आकांक्षा के साथ बैठे-बैठे कुछ पुरानी और नई बातों को याद कर रही है.)